website : - www.loktantramirror.live

लोकतंत्र मिरर

पृष्ठ : 8 | RNI Reg. No. MAHHIN/2017/74134 | वर्ष : 10 | अंक : 57 | अक्टूबर 2026 | मूल्य : रु. 10

रिजीम चेंज पर मोहन भागवत बोले

'पहले भी नहीं हुआ, आज भी नहीं होगा'



नागपुर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर नागपुर में आयोजित विजयादशमी उत्सव और शस्त्र पूजन कार्यक्रम में संघ प्रमुख मोहन भागवत ने सामाजिक, सांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी बात रखी. उन्होंने नशे की बढ़ती समस्या, नई पीढ़ी को संस्कार देने और सही-गलत के बीच अंतर समझने की जरूरत पर जोर दिया. अपने संबोधन में उन्होंने फ्रांस, अल्बानिया, नेपाल और बांग्लादेश में हुए घटनाक्रमों का भी उल्लेख किया.

भागवत ने कहा कि पश्चिम से ऐसी विचारधारा का प्रभाव बढ़ रहा है, जो सामाजिक व्यवस्था, शिष्टाचार और सांस्कृतिक मूल्यों को चुनौती देती है. फ्रांस, अल्बानिया, नेपाल और बांग्लादेश का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि केवल सत्ता परिवर्तन से किसी देश की परिस्थितियां नहीं बदलतीं. उन्होंने आंदोलनों के उद्देश्य पर सवाल उठाते हुए कहा कि उनका लक्ष्य समस्याओं का समाधान होना चाहिए, न कि समाज में वैमनस्य और विभाजन पैदा करना. भागवत ने कहा, "वे कहते हैं कि रिजीम चेंज करने से परिस्थिति बदलेगी. लेकिन ऐसा कभी हुआ नहीं है. पहले नहीं हुआ, आज भी नहीं होगा."

कार्यक्रम में संघ प्रमुख ने बंगाल के राजनारायण बसु का जिक्र किया. उनके जन्म को २०० साल पूरे हो रहे हैं. उन्होंने कहा, समाज में स्वदेशी मेलों के जरिए लोगों को अपनी संस्कृति और पहचान के प्रति जागरूक करने के लिए राज नायारण बसु ने हिंदू मेले की शुरुआत की थी. इस दौरान भागवत ने संत रविदास के योगदान को भी याद किया.

उन्होंने कहा, 'जब देश विदेशी आक्रमणकारियों के हमलों का सामना कर रहा था और लोगों पर अत्याचार हो रहे थे तब चारों ओर डर का माहौल था. ऐसे समय में संत रविदास ने स्वधर्म के प्रति निष्ठा, सामाजिक समरसता और भक्ति का संदेश दिया.' भागवत ने कार्यक्रम में कहा कि संघ पिछले १०० वर्षों से भारत को उसकी अपनी पहचान, संस्कृति और परंपराओं के आधार पर संगठित और मजबूत बनाने का काम कर रहा है. भागवत ने स्वदेशी अपनाने का भी जिक्र किया.

संघ प्रमुख ने भारत की विविधता का भी जिक्र किया. उन्होंने कहा कि भारत माता का सर्वोच्च स्थान है. देश में अलग-अलग पंथ, प्रांत, जातियां, भाषाएं, खानपान और रीति-रिवाज हैं. लेकिन भारत को एकजुट होकर आगे बढ़ना है. भागवत ने कहा कि देश पहले भी एक होकर आगे बढ़ा है और भविष्य में भी इसी एकता के साथ आगे बढ़ता रहेगा.

मोहन भागवत ने युवाओं में बढ़ती नशे की लत पर चिंता जताते हुए इसे गंभीर समस्या बताया. उन्होंने अभिभावकों से नई पीढ़ी को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करने की अपील की. गौरतलब है कि साल १९२५ में दशहरे के ही दिन नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना हुई थी. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने संघ की स्थापना की थी. दशहरे के मौके पर RSS देशभर में पथ संचलन के कार्यक्रम भी आयोजित करता है.

भागवत ने फ्रांस, बांग्लादेश और नेपाल में हुई अशांति का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा है कि पश्चिम से एक ऐसी आंधी उठी है जो हर तरफ खुशहाली को नष्ट करना चाहतीं है। उन्होंने इन्हें असुरी ताकत बताया।

रिजिम चेंज से नहीं बदलती परिस्थितियां- भागवत

मोहन भागवत ने इस दौरान कहा कि, रिजिम चेंज से परिस्थितियां ना कभी बदली हैं और ना होंगीं। भागवत बोले, "वो कहते हैं रिजिम चेंज से परिस्थितियां बदलेंगी। लेकिन ऐसा नहीं होगा। ना पहले ऐसा हुआ है न अब होगा। अपने स्वार्थ का पोषण करने वाले अपने पिठ्ठू सब जगह प्रभावी रहे हैं। इसके लिए ये कार्यवाहियां सारी दुनिया में चलती है और भारत का बड़ा होना इसमें खलल डालेगा। इसीलिए भारत उसका परम लक्ष्य है और भारत में भी ऐसे प्रयास चल रहे हैं।"

देशभर में हुआ रावण का दहन

नई दिल्ली : देशभर में दशहरे के अवसर पर रावण के पुतलों का दहन किया गया तो आसमान आतिशबाजी से जगमगा उठा और मैदानों में उमड़ी भीड़ उत्सव की साक्षी बनी. कहीं विशाल पुतलों ने लोगों का ध्यान खींचा, तो कहीं रामलीला, धार्मिक शोभायात्राओं और सामूहिक आयोजनों ने पर्व को खास बनाया. बदलते वक्त के साथ दशहरे के आयोजन भी नए रूप ले रहे हैं, लेकिन रावण दहन से जुड़ा प्रतीकात्मक अर्थ आज भी लोगों को आत्ममंथन का अवसर देता है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के इंद्रप्रस्थ रामलीला मैदान में विजयादशमी समारोह में भाग लिया। उन्होंने रावण दहन की परंपरा निभाई और देशवासियों को विजयादशमी की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने पर्व को सभी के संकल्प को नई शक्ति देने वाला बताया।

लाल किले के पास आयोजित लव कुश रामलीला समारोह में उपराष्ट्रपति सी. पी. राधाकृष्णन, दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिह संधू और चांदनी चौक के सांसद प्रवीण खंडेलवाल शामिल हुए। यहां ११० फुट ऊंचे रावण के पुतले का दहन किया गया।

पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में महा नवमी के अवसर पर श्रद्धालु बड़ी संख्या में पूजा पंडालों और मंदिरों में पहुंचे। बेलूर मठ से लेकर उत्तर और दक्षिण कोलकाता के प्रमुख पंडालों तक उत्सव का माहौल रहा।



शारदीय नवरात्रि और दुर्गा उत्सव का समापन २० अक्टूबर को विजयादशमी (दशहरा) के साथ हो चुका है। इस वर्ष शारदीय नवरात्रि ११ अक्टूबर से शुरू हुई थी, और दुर्गा पूजा का उत्सव १६ अक्टूबर से २० अक्टूबर २०२६ तक मनाया गया। अंतिम दिन मंदिरों और पंडालों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी।

बच्चों की दुनिया पर डिजिटल ताला नहीं

इंटरनेट का इस्तेमाल बच्चों का भी मौलिक अधिकार : सुप्रीम कोर्ट



नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की है कि इंटरनेट का इस्तेमाल करना मौलिक अधिकारों का हिस्सा है, जिसमें बच्चों के अधिकार भी शामिल हैं. कोर्ट ने उम्र के आधार पर इंटरनेट इस्तेमाल पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है. अदालत ने इस बात को पुरजोर तरीके से रेखांकित किया है कि बच्चों को इंटरनेट तक पहुंच का मौलिक अधिकार है. उनकी सुरक्षा और स्वतंत्रता एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं. हालांकि कोर्ट ने सख्त पैरेंटल कंट्रोल, यौन शोषण से जुड़े कंटेंट की रिपोर्टिंग और उसे हटाने, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ऑनलाइन एक्सेस, कॉन्टैक्ट के लिए 'चाइल्ड मोड' कंट्रोल की बात कही.

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद २१ और अनुच्छेद १९(१)(a) के तहत इंटरनेट का इस्तेमाल करने का अधिकार हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है. हमारे बच्चों को भी, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, यही अधिकार मिलते हैं. कोर्ट ने तर्क दिया कि बच्चों को इंटरनेट से पूरी तरह रोकना उतना ही बेतुका है, जितना यह कहना कि एक तय उम्र से छोटे बच्चों में रक्षा करने योग्य विवेक या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं होती. हमारे बच्चों की सुरक्षा और उनकी आजादी एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं. हमारे बच्चे दोनों के हकदार हैं. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कानून बनाकर रोक लगाने से बच्चे इंटरनेट का इस्तेमाल बंद नहीं करते, बल्कि वे माता-पिता और अथॉरिटीज की जानकारी के बिना भी इस्तेमाल जारी रखते हैं. वह ऐसे अनरेगुलेटेड और असुरक्षित प्लेटफॉर्म्स पर चले जाते हैं, जहां खतरा और ज्यादा होता है.

कोर्ट ने जताई चिंता

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इस तरह के प्रतिबंध बच्चों को, जो इंटरनेट पर बहकावे या धमकियों का शिकार हो रहे हैं, माता-पिता, अभिभावकों और भरोसेमंद वयस्कों को इसकी सूचना देने से भी हिचकने पर मजबूर करते हैं. हालांकि कोर्ट ने साफ गाइडलाइंस के बावजूद ऑनलाइन बाल शोषण कंटेंट के बार-बार फैलने पर चिंता जताई.

अदालत ने नियामक संस्थाओं और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि पीड़ित बच्चों की सुरक्षा के लिए गंभीरता से कदम नहीं उठाए जा रहे हैं. अदालत के सामने ऐसी रिपोर्ट भी रखी गई थीं, जिनमें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर रिडायरेक्ट लिक और वेबसाइटों के जरिये बाल यौन शोषण से जुड़े कंटेंट के प्रचार का उल्लेख था.

कोर्ट ने कहा कि ऐसे कंटेंट की पहचान करने और उसे हटाने की मौजूदा व्यवस्था मुख्य रूप से व्यक्तिगत शिकायतों पर निर्भर है. अगर कोई एक प्लेटफॉर्म कंटेंट की पहचान कर उसे हटा भी देता है, तो वही कंटेंट दूसरे प्लेटफॉर्म पर अपने आप नहीं आ जाता है. इससे उसे हटाने में देरी हो सकती है और वह इंटरनेट पर वायरल होती रह सकती है.

टाइगर श्रॉफ फायरिंग केस में तीन आरोपी गिरफ्तार



मुंबई : अभिनेता टाइगर श्रॉफ पर रविवार को हुए हमले के मामले में तीनों आरोपियों को राजस्थान के कोटा से गिरफ्तार किया गया है. मुंबई क्राइम ब्रांच ने सोमवार को प्रेस ब्रीफिंग में यह जानकारी दी. डीसीपी राज तिलक ने स्पष्ट किया कि तीनों में से कोई भी नाबालिग नहीं है. पहले आरोपियों को रात में मुंबई लाने की तैयारी थी, लेकिन सुरक्षा कारणों और एहतियात को ध्यान में रखते हुए पुलिस ने रात के समय आरोपियों को लेकर आने का फैसला फिलहाल टाल दिया है. कुछ दूर जाने के बाद पुलिसकर्मी आरोपियों को लेकर वापस थाने लौट आए.

फिलहाल तीनों आरोपियों को कोटा के रेलवे कॉलोनी थाने में ही कड़ी सुरक्षा के बीच रखा गया है. सुरक्षा व्यवस्था इतनी चाक-चौबंद है कि थाने के बाहर भारी पुलिस बल और कमांडो तैनात किए गए हैं, जिससे पूरे इलाके को छावनी में तब्दील कर दिया गया है. बता दें कि टाइगर श्रॉफ पर फायरिंग के बाद पुलिस ने २० टीमें बनाकर जांच शुरू की थी. पुलिस हत्या के प्रयास और आर्म्स एक्ट के तहत मामले की जांच कर रही है.

इधर, डीसीपी राज तिलक ने बताया कि टाइगर श्रॉफ की कार पर पांच राउंड फायरिंग के बाद आरोपियों ने अपनी बाइक अंधेरी वेस्ट स्टेशन के पास छोड़ दी थी. इसके बाद वे अंधेरी की बीट चौकी से होते हुए लोकल ट्रेन से बोरीवली पहुंचे. वे बोरीवली से कैब के जरिए सूरत गए और फिर जयपुर एक्सप्रेस से सूरत से कोटा पहुंचे. पकड़े गए आरोपियों की पहचान बिहार के बेगूसराय निवासी रितिक कुमार उर्फ रोशन और हरियाणा के सोनीपत निवासी रेहान के रूप में हुई है. तीसरा आरोपी भी सोनीपत का ही रहने वाला है.

कब और कैसे हुआ टाइगर श्रॉफ पर हमला?

मुंबई के जुहू इलाके में रविवार को अभिनेता टाइगर श्रॉफ की BMW कार पर तीन बाइक सवार हमलावरों ने पांच राउंड फायरिंग की. इस घटना में टाइगर को कोई चोट नहीं आई, जबकि उनके ड्राइवर और एक ऑटो रिक्शा चालक घायल हो गए. सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने हमले की जिम्मेदारी लेने का दावा किया.पोस्ट में सलमान खान के साथ काम करने वालों को भी निशाना बनाने की धमकी दी गई. घटना के बाद बॉलीवुड में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है.

दशहरा रैली में उद्धव-शिंदे के बीच जुबानी जंग

मुंबई : महाराष्ट्र में दशहरा रैली के मंच से उबाठा प्रमुख उद्धव ठाकरे और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने एक-दूसरे पर निशाना साधा. उद्धव ठाकरे ने मुंबई के शिवाजी पार्क में, जबकि एकनाथ शिंदे ने गोरेगांव के नेस्को सेंटर में दशहरा रैली की. उद्धव ने किसानों की परेशानी, वोटर लिस्ट से नाम कटने और मराठी पहचान का मुद्दा उठाते हुए राज्य सरकार को घेरा. उन्होंने सवाल किया कि अगर गलत काम हो रहे हैं, तो रिजीम चेंज क्यों नहीं होना चाहिए? जवाब में शिंदे ने कहा कि सत्ता में किसे रहना है, यह जनता तय करती है. उन्होंने कांग्रेस, राहुल गांधी और विपक्षी गठबंधन इंडीया पर भी हमला बोला. दोनों नेताओं के भाषणों में किसानों की हालत से लेकर चुनाव प्रक्रिया तक कई मुद्दे उठे. उद्धव ने सरकार से सवाल किए, जबकि शिंदे ने अपनी सरकार के काम गिनाए. उद्धव ठाकरे ने शिवाजी पार्क में दशहरा रैली के दौरान कहा कि कोई उनका नाम और पहचान नहीं छीन सकता. उन्होंने बताया कि शिवाजी पार्क नाम के १०० साल पूरे हो रहे हैं. इसी साल बालासाहेब ठाकरे की १००वीं जयंती भी है. इस दौरान उन्होंने लोगों से बदलाव के लिए खड़े होने की अपील की.

बिहार : गंगा में नाव पलटी, १४ की मौत

नई दिल्ली : बिहार के वैशाली जिले के हाजीपुर में मंगलवार देर शाम गंगा नदी में नाव पलटने से बड़ा हादसा हो गया. हादसा राघोपुर थाना क्षेत्र के रामपुर श्यामचंद गांव के पास हुआ. वैशाली के जिलाधिकारी ने १४ लोगों की मौत की पुष्टि की है, जबकि ३ लोगों को सुरक्षित बचा लिया गया. हादसे के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई. सूचना मिलते ही पुलिस-प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची और राहत-बचाव अभियान चलाया गया.

जानकारी के मुताबिक, नाव पर २० से अधिक लोग सवार थे और सभी भोज खाने के लिए जा रहे थे. इसी दौरान गंगा नदी में नाव पलट गई और उस पर सवार लोग पानी में गिर गए. अचानक हुए हादसे के कारण नाव पर सवार लोगों को संभलने का मौका नहीं मिला. हालांकि, नाव पलटने की वजह अभी स्पष्ट नहीं हो सकी है.

हादसे के बाद स्थानीय लोगों और प्रशासन की मदद से बचाव अभियान चलाया गया. मृतकों की पहचान करने और उनके परिजनों को सूचना देने की प्रक्रिया जारी है.

बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने भी राघोपुर दियारा क्षेत्र के इस घटना पर दुख जताया. उन्होंने कहा, हादसे की दुर्भाग्यपूर्ण खबर मिली है और डूबने वालों में अधिकांश बच्चे हैं. उन्होंने सभी के सुरक्षित होने की कामना करते हुए बताया कि प्रशासन और अधिकारियों से बचाव एवं उपचार कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए हैं.

मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ विपक्ष का प्रदर्शन

गले की फांस



बचाव में उतरी सरकार, विपक्ष का रुख आर-पार

नई दिल्ली : एसआईआर और चुनाव आयोग के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे कांग्रेस सांसद राहुल गांधी को पुलिस ने मंगलवार को हिरासत में ले लिया. राहुल गांधी करीब ९ घंटे से धरने पर बैठे थे. इसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया. इस बीच प्रदर्शनस्थल पर भारी हंगामा देखने को मिला. पुलिस प्रदर्शनकारी नेताओं को हटा रही है. इसी कड़ी में राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, चरणजीत सिंह चन्नी, दीपेंद्र हुड्डा और पवन खेड़ा समेत कई नेताओं को डिटेन कर लिया गया. राहुल गांधी चुनाव आयुक्तों से मिलने की मांग कर रहे थे. हालांकि, चुनाव आयोग के सूत्रों के मुताबिक, आयोग को कांग्रेस पार्टी की ओर से किसी बैठक के लिए कोई अनुरोध नहीं मिला. इसके अलावा किसी अन्य विपक्षी दल की ओर से भी बैठक को लेकर कोई अनुरोध चुनाव आयोग को नहीं मिला. इससे पहले राहुल गांधी ने कहा कि सांसद चुनाव आयुक्त से मिलेंगे और उन्हें मिलना ही पड़ेगा.

ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग

अखिलेश यादव ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की है. उन्होंने चुनाव आयोग पर वोट चोरी का आरोप लगाया है. अखिलेश यादव ने कहा कि बंगाल में घपला करके बीजेपी की जीत हुई. विपक्ष के इस विरोध मार्च में कई पार्टियों के नेता और सांसद शामिल हुए हैं. सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि BJP घबराई हुई है. उन्होंने बीजेपी पर उपचुनाव में भी धांधली करने का आरोप लगाया.

BJP के लिए काम कर रही ECI: अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग पर पक्षपात का आरोप लगाया है. उन्होंने कहा कि बंगाल में फोर्स के माध्यम से बूथ लूटा गया. उत्तर प्रदेश में भी ऐसा हुआ. अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर भी सवाल उठाए हैं. उन्होंने कहा, 'चुनाव आयोग निष्पक्ष नहीं है और चुनाव आयोग संविधान के तहत काम नहीं कर रहा है. भाजपा जब से आई है तब से चुनाव आयोग ने भाजपा के लिए काम करना शुरू कर दिया.'

उन्होंने कहा कि देश की आवाज का अपमान किया गया है. राहुल गांधी ने कहा कि वे सिर्फ चुनाव आयोग से मिलकर यह कहना चाहते हैं कि "आपने वोट चोरी की है."

कैप्टन स्मित मच्छार ने पीएम मोदी से कहा-

मैं उन लोगों को मरने नहीं दे सकता था

कैप्टन स्मित ने सुनाई आपबीती



नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्लाईदुबई के पायलट कैप्टन स्मित मच्छार से फोन पर बात कर उनके साहस और सूझबूझ की सराहना की.

पीएम मोदी ने कहा कि देशभर में उनकी लंबी उम्र और जल्द स्वस्थ होने की प्रार्थना हो रही है. उन्होंने कहा कि कैप्टन स्मित ने गंभीर चोटों के बावजूद यात्रियों की जान बचाने के लिए जो फ़ैसला लिया, उस पर पूरे देश को गर्व है.

प्रधानमंत्री ने कहा, "पूरा देश आपके लिए प्रार्थना कर रहा है. महामृत्युंजय का जाप सब जगह चल रहा है. आपकी हिम्मत, धैर्य और सूझबूझ ने इतने लोगों की जान बचाई. आपने दिखाया कि भारतीय "जान लेने वाले नहीं, जान बचाने वाले लोग हैं.

पीएम मोदी ने कहा कि कैप्टन स्मित स्वयं गंभीर रूप से घायल थे और जीवन-मृत्यु की लड़ाई लड़ रहे थे, लेकिन उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी. उन्होंने कहा कि इस साहसिक क़दम से कैप्टन स्मित ने १४० करोड़ देशवासियों का मान बढ़ाया है.

कैप्टन स्मित ने प्रधानमंत्री को बताया कि घटना के दौरान वह गिर चुके थे और उन्हें कई चोटें लगी थीं. इसके बावजूद उन्हें महसूस हो रहा था कि विमान के भीतर स्थिति बिगड़ रही है.

स्मित ने कहा, मुझे लगा कि अगर मैं नहीं उठा और कोई क़दम नहीं उठाया, तो हालात और ख़राब हो जाएंगे. मैं १७ साल से जहाज़ उड़ा रहा हूँ और पिछले ११ साल से कैप्टन हूँ. मुझे आँख बंद करके भी पता चलता है कि जहाज़ में क्या हो रहा है. जब मैं नीचे गिरा हुआ था, तब मुझे एहसास हो रहा था कि स्थिति ख़राब हो रही है."

कैप्टन स्मित ने कहा कि उन्होंने अंतिम कोशिश करते हुए कॉकपिट का दरवाज़ा खोला, जिसके बाद अन्य लोग आ सके. उन्होंने कहा कि इस पूरी कोशिश में बाक़ी लोगों की भी अहम भूमिका थी.उन्होंने कहा, "मैं अपनी जान बचाने के हिसाब से कर रहा था, लेकिन उसी समय मुझे पता था कि मैं उन लोगों को मरने नहीं दे सकता."

हनुमान चालीसा से मिला हौसला

प्रधानमंत्री से बातचीत के दौरान कैप्टन स्मित भावुक हो गए. उन्होंने कहा कि वह दर्द के दौरान हनुमान चालीसा का पाठ करते रहे और उन्हें भरोसा है कि भगवान ने ही उनकी जान बचाई.उन्होंने कहा, "मैं बहुत पॉजिटिव हूँ. जब भी मुझे दर्द होता है, मुझे एक ही चीज़ आती है, मैं हनुमान चालीसा ही बोल रहा था. मुझे पता है कि भगवान ने ही मुझे बचाया है."

कैप्टन स्मित ने कहा कि वह अपनी चोट को केवल घाव के रूप में नहीं देख रहे हैं, बल्कि इसे एक ऐसी यात्रा मान रहे हैं जिसमें धीरे-धीरे रिकवरी होगी. उन्होंने कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि वह फिर से पूरी तरह स्वस्थ हो जाएंगे.

उन्होंने यह भी बताया कि रोज़ सुबह पूजा के समय उनका दो वर्षीय बेटा उनकी गोद में बैठता है और वह उसे हनुमान चालीसा सुनाते हैं. कैप्टन स्मित ने कहा कि विदेश में रहने के बावजूद अपनी संस्कृति से दूर नहीं होना चाहिए.

पीएम ने परिवार के धैर्य की सराहना की

प्रधानमंत्री ने कैप्टन स्मित के पिता भूपेंद्रभाई, माँ गीताबेन और पत्नी सोनलबेन से हुई अपनी बातचीत का उल्लेख किया. पीएम मोदी ने कहा कि गीताबेन ने स्मित को अच्छे संस्कार दिए हैं. उन्होंने सोनलबेन के साहस और संयम की भी प्रशंसा की.

प्रधानमंत्री ने कहा कि सावरकुंडला समेत देश के अलग-अलग हिस्सों में कैप्टन स्मित की लंबी उम्र और बेहतर स्वास्थ्य के लिए पूजा-अर्चना हो रही है. उन्होंने कहा कि पूरा भारत कैप्टन स्मित के स्वस्थ होकर लौटने का इंतज़ार कर रहा है.

पीएम मोदी ने सऊदी अरब और यूएई की सरकारों का भी कैप्टन स्मित की देखभाल और इलाज के लिए आभार जताया. उन्होंने कहा कि ज़रूरत पड़ने पर वह सिर्फ़ एक फोन कॉल की दूरी पर हैं.उन्होने आगे कहा, "आपने सचमुच भारत का नाम बचाया है. आप पूरी तरह स्वस्थ हो जाइए, पूरा देश आपके साथ है." बातचीत के अंत में प्रधानमंत्री ने कैप्टन स्मित से कहा कि वह जल्द स्वस्थ हों, फिर दोनों मिलकर बाकी बातें करेंगे.

एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित होंगे नए वायु सेना प्रमुख

नई दिल्ली : सरकार ने एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित को भारतीय वायु सेना का २९वां प्रमुख नियुक्त किया है. वे ३१ अक्टूबर २०२६ की दोपहर से एयर चीफ मार्शल के पद पर कार्यभार संभालेंगे. वर्तमान चीफ ऑफ एयर स्टाफ एयर चीफ मार्शल एपी सिंह उसी दिन सेवानिवृत्त हो रहे हैं. यह नियुक्ति वायु सेना के नेतृत्व में बदलाव का महत्वपूर्ण कदम है. एयर मार्शल आशुतोष दीक्षित फिलहाल वायस चीफ ऑफ एयर स्टाफ के पद पर हैं. वे ९ दिसंबर १९६६ को पैदा हुए. ६ दिसंबर १९८६ को लड़ाकू विमान धारा में कमीशन हुए. इससे पहले वे चीफ ऑफ इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ और सेंट्रल एयर कमांड के एयर ऑफिसर कमांडिग-इन-चीफ रह चुके हैं.

वे नेशनल डिफेंस अकादमी, बांग्लादेश के डिफेंस स्टाफ सर्विस कॉलेज और नेशनल डिफेंस कॉलेज के पूर्व छात्र हैं. उनके पास मिराज-२०००, मिग के विभिन्न प्रकार, किरण, जगुआर, आईएल-७८, हॉक और तेजस सहित कई विमानों पर ३५०० घंटे से ज्यादा उड़ान का अनुभव है. वे



एक्सपेरिमेंटल टेस्ट पायलट और क्वालिफाइड फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर भी हैं.

लगभग चार दशक के करियर में उन्होंने ऑपरेशन सेटेड सागर, ऑपरेशन रक्षाक और ऑपरेशन सिंदूर जैसे कई अभियानों और अभ्यासों में सक्रिय भूमिका निभाई. उन्होंने पश्चिमी क्षेत्र में एक फ्रंटलाइन फाइटर एयरबेस और दक्षिणी क्षेत्र में प्रमुख फाइटर ट्रेनिंग बेस की कमान संभाली.

विभिन्न पदों पर रहते हुए उन्होंने वायु सेना की परिचालन क्षमता बढ़ाने में योगदान दिया. उनके उत्कृष्ट सेवा के लिए २००६ में वायु सेना मेडल, २०११ में विशिष्ट सेवा मेडल, २०२३ में अति विशिष्ट सेवा मेडल और २०२६ में परम विशिष्ट सेवा मेडल दिए गए.

यह बदलाव वायु सेना के निरंतर विकास और अनुभवी नेतृत्व सुनिश्चित करने की दिशा में है. नए चीफ के पास व्यापक उड़ान अनुभव, कमांड जिम्मेदारियां और स्टाफ पदों का अनुभव है जो आधुनिक चुनौतियों से निपटने में मदद करेगा. स्वदेशी विमान जैसे तेजस पर उनका अनुभव मेक इन इंडिया को आगे बढ़ाने में उपयोगी साबित हो सकता है. वायु सेना सीमा सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. अनुभवी अधिकारी के हाथों में कमान जाने से बल की तैयारियां और मजबूत होंगी.

दिवाली तक टला UPI चार्ज

१५ अक्टूबर से लागू होना था नियम

नई दिल्ली : सरकार ने UPI ट्रांजैक्शन पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (MDR) लागू करने के फैसले को फिलहाल टाल दिया है. यह शुल्क १५ अक्टूबर २०२६ से कुछ चुनिंदा UPI लेनदेन पर लागू होना था, लेकिन अब इसे दिवाली के बाद तक के लिए आगे बढ़ा दिया गया है. हालांकि, नई व्यवस्था लागू करने की तारीख अभी घोषित नहीं की गई है.



त्योहारी सीजन में बाजारों में बढ़ने वाली खरीदारी और डिजिटल भुगतान को देखते हुए इस फैसले को टाला गया है. इससे कारोबारियों को फिलहाल राहत मिलेगी. वहीं, देश के कुछ हिस्सों में UPI लेनदेन पर शुल्क लगाने के प्रस्ताव का विरोध भी हो रहा था.

बस समय बढ़ा है...

मंगलवार को नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) और UPI एंड सर्विसेज स्टीयरिंग कमेटी ने त्योहारी सीजन को देखते हुए पर्सन-टू-मर्चेंट (P२M) UPI लेनदेन पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (MDR) शुल्क लागू करने की तारीख दिवाली के बाद तक बढ़ा दी है. यह शुल्क १५ अक्टूबर २०२६ से लागू होना था. हालांकि, नई तारीख अभी घोषित नहीं की गई है. ऐसे में इसे शुल्क वापस लेने के बजाय लागू करने के लिए अतिरिक्त समय देने के तौर पर देखा जा रहा है.

दिवाली के दौरान कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स, गहने और अन्य सामानों की खरीदारी बढ़ने के साथ डिजिटल भुगतान में भी तेजी आती है. कारोबारी संगठनों और पेमेंट कंपनियों को आशंका थी कि त्योहारों के बीच नया शुल्क लागू होने से भुगतान व्यवस्था प्रभावित हो सकती है. ऐसे में फैसले को आगे बढ़ाने से बैंकों, फिनटेक ऐप्स और पेमेंट एग्रीगेटर कंपनियों को अपने सिस्टम और सॉफ्टवेयर में जरूरी बदलाव करने के लिए अतिरिक्त समय मिलेगा. फिलहाल MDR शुल्क को रद्द किए जाने की घोषणा नहीं हुई है और दिवाली के बाद इस पर अमल की तारीख तय होने का इंतजार है.

प्रस्ताव की बड़ी बातें

१- अगर ग्राहक बड़े मर्चेंट को २,००० से ज्यादा का UPI पेमेंट करता है, तो मर्चेंट को कुल रकम पर ०.४% का MDR चार्ज देना होगा.

२- ग्राहक ७५,००० या उससे ज्यादा का बड़ा पेमेंट करता है, तो मर्चेंट पर प्रतिशत के बजाय अधिकतम ३०० का फ्लैट चार्ज लागू होगा.

३- अगर ग्राहक रेलवे, टेलीकॉम, इंश्योरेंस या फ्यूल पर २,००० से ज्यादा का पेमेंट करता है, तो प्रति ट्रांजैक्शन ५ का फ्लैट चार्ज लगेगा.

आम ग्राहकों के लिए मुफ्त रहेगा UPI पेमेंट

UPI के जरिए भुगतान करने वाले आम ग्राहकों को फिलहाल किसी तरह का शुल्क नहीं देना होगा. सरकार ने स्पष्ट किया है कि व्यक्तिगत यूजर्स के बीच होने वाले लेनदेन (P२P) पहले की तरह पूरी तरह मुफ्त रहेंगे. वहीं, मर्चेंट डिस्काउंट रेट (MDR) वह शुल्क है, जो डिजिटल भुगतान स्वीकार करने के बदले मर्चेंट को बैंक या पेमेंट सर्विस प्रोवाइडर को देना पड़ता है. प्रस्तावित व्यवस्था के तहत कुछ चुनिंदा मर्चेंट लेनदेन पर MDR शुल्क लागू करने की बात कही गई है. ऐसे में आम ग्राहकों और मर्चेंट के लिए लागू होने वाले नियम अलग-अलग होंगे.

महंगाई, भ्रष्टाचार और राजनीतिक असंतोष से तनाव

यूरोप में फैली फ्रांस की आग

नई दिल्ली : फ्रांस के बाद इटली समेत यूरोप के कई अन्य देशों में भी विरोध प्रदर्शनों ने सरकारों की चिंता बढ़ा दी है. हालांकि, अलग-अलग देशों में इन प्रदर्शनों की वजहें अलग हैं. इटली में हिंसक झड़पें, बेल्जियम में आर्थिक नीतियों और श्रमिकों से जुड़े मुद्दों पर असंतोष, पुर्तगाल और स्पेन में आवास संकट, अल्बानिया में भ्रष्टाचार और राजनीतिक जवाबदेही को लेकर गुस्सा प्रमुख मुद्दों के रूप में सामने आए हैं.

मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, जर्मनी, इटली, चेक गणराज्य, पोलैंड, नीदरलैंड, डेनमार्क, स्वीडन, फिनलैंड और नॉर्वे ने फ्रांस जाने वाले या वहां मौजूद अपने नागरिकों को प्रदर्शन स्थलों से दूर रहने और स्थानीय प्रशासन के निर्देशों का पालन करने की सलाह दी है. हालांकि, इन चेतावनियों का मतलब फ्रांस की यात्रा पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं है. ये मुख्य रूप से वहां की सुरक्षा स्थिति को लेकर जताई गई चिंताओं को दर्शाती हैं.

बजट और चुनाव की चुनौती

हिंसा के बीच फ्रांस सरकार पर बजट विधेयक पास कराने और बढ़ते कर्ज से निपटने का दबाव है. राष्ट्रपति चुनाव भी करीब छह महीने दूर हैं. महंगाई और सार्वजनिक सेवाओं को लेकर बढ़ते असंतोष के बीच फ्रांस की १० साल की सरकारी बॉन्ड यील्ड बढ़कर ४.८६% पहुंच गई, जो निवेशकों की आर्थिक और राजनीतिक अनिश्चितता को लेकर सतर्कता दर्शाती है.

इटली में मिलान से ट्यूरिन तक बवाल

फ्रांस में जारी हिंसा के बीच इटली में भी आर्थिक संकट और सामाजिक असंतोष को लेकर हो रहे प्रदर्शन उग्र हो गए. १७ अक्टूबर को मिलान के पियाजा डुओमो में प्रदर्शनकारियों के एक समूह ने पुलिस पर पत्थर और अन्य वस्तुएं फेंकीं. पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए आंसू गैस और पानी की बौछारों का इस्तेमाल किया. बोलोन्या और ट्यूरिन में भी प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं.

मेलोनी सरकार पर बढ़ा दबाव

इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने हिंसा की कड़ी निंदा करते हुए विपक्ष से भी इसकी स्पष्ट आलोचना करने की मांग की. उन्होंने कहा कि प्रदर्शन करना नागरिकों का अधिकार है, लेकिन शहरों को आग के हवाले करना स्वीकार्य नहीं है. सोमवार को उन्होंने सुरक्षा स्थिति की समीक्षा और आगे की कार्रवाई पर चर्चा के लिए सरकारी बैठक बुलाई.

वहीं, मिलान के मेयर ज्यूसेपे साला ने दुकानों में तोड़फोड़ और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने की घटनाओं की आलोचना की. हालांकि, इटली में असंतोष की वजह केवल हिंसक घटनाएं नहीं हैं. महंगाई, वेतन में ठहराव, महंगे आवास और सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता जैसे मुद्दे लंबे समय से राजनीतिक बहस का हिस्सा बने हुए हैं.

यहां सरकार के सामने चुनौती दोहरी है. उसे एक ओर हिंसा पर काबू पाकर कानून-व्यवस्था बनाए रखनी है, तो दूसरी ओर उन आर्थिक और सामाजिक समस्याओं का समाधान भी तलाशना है, जिनसे लोगों में नाराजगी बढ़ रही है.

फ्रांस में कितनी गंभीर है स्थिति?

फ्रांस में छात्रों के विरोध से शुरू हुआ आंदोलन धीरे-धीरे महंगाई, ईंधन की कीमतों, शिक्षा व्यवस्था और सार्वजनिक सेवाओं से जुड़े मुद्दों तक फैल गया है. शनिवार को देशभर में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए. फ्रांस के गृह मंत्रालय के अनुसार, इन प्रदर्शनों में ५.५ लाख से अधिक लोग शामिल हुए. इस दौरान कुछ स्थानों पर हिंसक घटनाएं हुईं. सोमवार तक गिरफ्तार किए गए लोगों की संख्या २,४०० से अधिक बताई गई, जबकि १,००० से ज्यादा पुलिसकर्मियों के घायल होने की खबरें सामने आईं.

फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबास्टियन लेकोर्नू ने हिंसा के लिए कट्टरपंथी वामपंथी समूहों और आपराधिक तत्वों को जिम्मेदार ठहराया है. हालात से निपटने के लिए लेकोर्नू ने प्रभावित शहरों में सीमित और स्थानीय स्तर पर कर्फ्यू लगाने की योजना का संकेत दिया है. इधर, न्याय मंत्री गेराल्ड डारमानिन ने भी माना कि सरकार ने अति-वामपंथी प्रदर्शनकारियों को कम आंका, जिससे हिंसा से निपटने की तैयारी प्रभावित हुई.

मैक्रों ने ठुकराया गृह मंत्री का इस्तीफा

सुरक्षा व्यवस्था में कथित चूक को लेकर उठ रहे सवालों के बीच गृह मंत्री लॉरेंट नुनेज ने इस्तीफे की पेशकश की, जिसे राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने ठुकरा दिया. मैक्रों ने उन्हें हिंसा और लूटपाट पर तत्काल रोक लगाने के निर्देश दिए. साथ ही, हिंसक घटनाओं का पूर्वानुमान लगाने और उन्हें रोकने में खुफिया तंत्र से कहां चूक हुई, इस पर स्पष्ट रिपोर्ट देने को कहा. गौरतलब है कि शनिवार को फ्रांस में करीब ६० हजार पुलिसकर्मियों और अन्य सुरक्षाकर्मियों को तैनात किया गया था. इसके बावजूद कुछ शहरों में हिंसक भीड़ को नियंत्रित करने में मुश्किलें आईं. इसके बाद सुरक्षा व्यवस्था की प्रभावशीलता और प्रशासन की तैयारियों पर सवाल उठने लगे.

अल्बानिया में सरकार के इस्तीफे की मांग

यूरोप के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित अल्बानिया में विरोध प्रदर्शनों ने गंभीर राजनीतिक रूप ले लिया है. राजधानी तिराना में प्रधानमंत्री एदी रामा के कार्यालय के पास प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच झड़पें हुईं. भ्रष्टाचार, रोजगार की कमी और शिक्षा व्यवस्था की स्थिति को लेकर शुरू हुआ असंतोष अब प्रधानमंत्री के इस्तीफे की मांग में बदल गया है.

प्रधानमंत्री रामा ने इस्तीफा देने से इनकार किया है. उन्होंने आरोप लगाया कि रूढ़िवादी राजनीतिक विरोधी हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं. ऐसे में अल्बानिया में जारी प्रदर्शन केवल आर्थिक और प्रशासनिक शिकायतों तक सीमित नहीं रह गए हैं, बल्कि राजनीतिक जवाबदेही और सरकार के भविष्य से भी जुड़ गए हैं.

यूरोप के लिए आगे की चुनौती

अल जजीरा ने यूरोपीय संघ के मामलों के विशेषज्ञ अल्बर्टो अलेमानो के हवाले से बताया कि अलग-अलग देशों के प्रदर्शन साझा आर्थिक और सामाजिक शिकायतों से जुड़े हैं, लेकिन वे एक ही समन्वित आंदोलन नहीं हैं. शिक्षा पर कम खर्च, महंगी जिंदगी और युवाओं के भविष्य को लेकर अनिश्चितता कई देशों में असंतोष के प्रमुख कारण हैं.

सरकारों को हिंसक घटनाओं पर नियंत्रण रखना है, जबकि नागरिकों की आर्थिक शिकायतों को नजरअंदाज करना भी मुश्किल है. फ्रांस के लिए जारी यात्रा चेतावनियां सुरक्षा संबंधी चिंता का संकेत हैं. आने वाले दिनों में सरकारों की सुरक्षा कार्रवाई, आर्थिक राहत और सार्वजनिक सेवाओं से जुड़े फैसले तय करेंगे कि यह तनाव कम होता है या विरोध प्रदर्शनों का दायरा और बढ़ता है.

महंगाई पर लगाम, जेब पर कैंची

४ साल में पहली बार RBI ने बढ़ाया रेपो रेट

नई दिल्ली : भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने कर्ज लेने वालों को बड़ा झटका देते हुए रेपो रेट में २५ बेसिस प्वाइंट की बढ़ोतरी कर दी है. बुधवार को तीन दिवसीय मौद्रिक नीति समिति (MPC) की बैठक के बाद RBI गवर्नर संजय मल्होत्रा ने रेपो रेट को ५.२५ फीसदी से बढ़ाकर ५.५० फीसदी करने का ऐलान किया.

रेपो रेट बढ़ने से बैंकों की कर्ज की लागत बढ़ सकती है, जिसका असर नए और फ्लोटिंग रेट वाले होम, कार समेत अन्य लोन की EMI पर पड़ सकता है. करीब चार साल तक स्थिर रहने के बाद रेपो रेट में यह बढ़ोतरी RBI की मौद्रिक नीति में अहम बदलाव मानी जा रही है. केंद्रीय बैंक का यह कदम महंगाई और अर्थव्यवस्था से जुड़े जोखिमों को देखते हुए उठाया गया.

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने वेस्ट एशिया संघर्ष और कच्चे तेल की कीमतों में तेज बढ़ोतरी का जिक्र करते हुए अपने संबोधन की शुरुआत की. इस बीच ग्लोबल महंगाई बढ़ने, एनर्जी प्राइस से खाने-पीने की चीजों तक के दाम बढ़ने पर चिंता जताई. इसके साथ ही उन्होंने रेपो रेट को लेकर एमपीसी बैठक में लिए गए फैसले का ऐलान करते हुए बताया कि तीन दिवसीय बैठक में चर्चा के बाद रेपो रेट को बढ़ाने का फैसला किया गया है. उन्होंने कहा कि वैश्विक महंगाई बढ़ने का खतरा और शेयर बाजार में अनिश्चितता का माहौल बरकरार है.



आरबीआई ने रेपो रेट में बढ़ोतरी का झटका (Repo Rate Hike) देते हुए बताया कि बैठक में रेपो रेट ५.५०% किए जाने के साथ SDF रेट में ०.२५ फीसदी की बढ़ोतरी के साथ इसे ५.२५ फीसदी किया गया है, तो वहीं MSF रेट भी इसी तरीके से बढ़कर अब ५.७५ फीसदी कर दिया गया है.

पहले से थी Repo Rate Hike की आशंका?

इस साल २०२६ में यह रिजर्व बैंक की चौथी एमपीसी बैठक थी, जबकि इससे पहले अप्रैल, जून और अगस्त में हुई बैठकों में रेपो रेट ५.२५% पर यथावत रखा गया था. एक्सपर्ट पहले से ही कच्चे तेल की कीमतों में उबाल और महंगाई का हवाला देते हुए रेपो रेट में २५ बीपीएस की बढ़ोतरी की आशंका जाहिर कर रहे थे. अब इसपर केंद्रीय बैंक ने भी मुहर लगा दी है. RBI ने रेपो रेट में २५ बीपीएस की बढ़ोतरी के साथ ही मॉनेटरी पॉलिसी के रुख में भी बदलाव किया है और इसे पहले के न्यूट्रल से बदलकर कैलिब्रेटेड टाइटनिंग में तब्दील कर दिया है. मतलब केंद्रीय बैंक का पूरा फोकस महंगाई को कंट्रोल करने का है. यानी रेपो रेट में शॉर्ट टर्म में कटौती की उम्मीद कम है.

महंगाई का अनुमान बढ़ाया

रिजर्व बैंक ने रेपो रेट में बढ़ोतरी करने के साथ ही FY२७ के लिए कोर महंगाई दर के अनुमान में भी बढ़ोतरी की है और इसे पहले के ४.३ फीसदी से बढ़ाकर ४.४ फीसदी कर दिया गया है. इसके साथ ही कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स आधारित महंगाई यानी CPI का अनुमान ५ फीसदी से बढ़ाकर ५.२ फीसदी कर दिया है. इसके पीछे आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने रबी सीजन पर कमजोर मानसून और अल नीनो के असर को जिम्मेदार ठहराया.

Repo Rate होता क्या है?

रेपो दर (Repo Rate) वह ब्याज दर है, जिस पर आरबीआई शॉर्ट टर्म के लिए बैंकों को कर्ज देता है. इसी दर के आधार पर बैंक अपने ग्राहकों को दिए जाने वाले लोन की ब्याज दरें तय करते हैं. RBI MPC की तीन दिवसीय बैठक हर दो महीने में की जाती है. रेपो रेट में घट-बढ़ का सीधा असर लोन लेने वालों पर पड़ता है. इसके पीछे की वजह ये है कि अगर रेपो रेट बढ़ता है, तो बैंकों के लिए आरबीआई से कर्ज लेना महंगा हो जाता है. ऐसे में बैंकों की ओर से इसका बोझ ग्राहकों पर डालने की उम्मीद बढ़ जाती है या लोन महंगा कर देते हैं. वहीं, रेपो रेट घटने पर लोन सस्ते होते हैं और EMI का बोझ कम हो जाता है.

SIR में नाम कटने पर बिना डरे भर सकेंगे फॉर्म-६

नई दिल्ली : दिल्ली हाईकोर्ट ने राजधानी में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन यानी SIR के दौरान मतदाता सूची से बाहर हुए मतदाताओं को राहत देते हुए फॉर्म-६ भरने की मंजूरी दी है. कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं की उस आशंका को गलतफहमी बताया, जिसमें उन्हें डर था कि फॉर्म-६ जमा करने पर 'गलत घोषणा' यानी False Declaration के आरोप में कानूनी कार्रवाई हो सकती है. जस्टिस दिनेश मेहता और जस्टिस अदिति चौधरी की पीठ ने यह फैसला सुनाया. पीठ ने स्पष्ट किया कि निर्वाचन पंजीकरण अधिकारी के निर्देश पर निर्वाचन आयोग के वकील ने ही फॉर्म-६ भरने का सुझाव दिया है. इसलिए कार्रवाई का डर पूरी तरह निराधार है. याचिकाकर्ताओं का नाम पुराने पते से शिफ्ट होने और SIR प्रक्रिया के दौरान गणना प्रपत्र पूरा नहीं हो पाने के कारण मतदाता सूची से हटा दिया गया था.

नियमों के मुताबिक, फॉर्म-६ का इस्तेमाल आमतौर पर नए मतदाताओं के पंजीकरण यानी Fresh Inclusion के लिए होता है. इसमें आवेदक को यह प्रमाणित करना होता है कि वह पहली बार नाम जुड़वा रहा है और उसका पहले कहीं भी मतदाता सूची में नाम नहीं आया है. साथ ही, उसने पहले कभी वोट नहीं दिया है, इसकी घोषणा यानी अंडरटेकिंग देनी पड़ती है. याचिकाकर्ताओं को डर था कि पहले से वोटर होने के बावजूद फॉर्म-६ भरने पर उन पर झूठी घोषणा का केस हो सकता है, क्योंकि SIR से पहले उनका नाम वोटर लिस्ट में था और उन्होंने वोट भी डाला है. दिल्ली हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि याचिकाकर्ता बिना किसी डर के निर्वाचन आयोग की आधिकारिक वेबसाइट पर फॉर्म-६ के जरिए दोबारा नाम जुड़वाने के लिए आवेदन कर सकते हैं.

सिर्फ तारीख बदली, फैसला नहीं

युपीआय ट्रांजैक्शन पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (MDR) शुल्क लागू करने का फैसला फिलहाल टल गया है, लेकिन इसे सरकार के कदम पीछे खींचने के तौर पर देखना जल्दबाजी होगी. हकीकत यह है कि सरकार ने शुल्क लगाने का फैसला वापस नहीं लिया है, बल्कि इसे लागू करने की तारीख आगे बढ़ाई है. दिवाली के बाद इस व्यवस्था पर अमल की बात कही जा रही है. ऐसे में फिलहाल मिली राहत को स्थायी राहत मानना मुश्किल है. आने वाले दिनों में यही मुद्दा एक बार फिर राजनीतिक बहस और कारोबारी विरोध का कारण बन सकता है.

नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) और UPI एंड सर्विसेज स्टीयरिंग कमेटी ने त्योहारी सीजन को देखते हुए पर्सन-टू-मर्चेंट (P२M) लेनदेन पर MDR लागू करने की तारीख आगे बढ़ा दी है. यह शुल्क १५ अक्टूबर २०२६ से लागू होना था. अब इसे दिवाली के बाद तक टाल दिया गया है, हालांकि नई तारीख घोषित नहीं हुई है. इस फैसले से बाजार को फिलहाल राहत जरूर मिली है, लेकिन शुल्क को पूरी तरह खत्म करने का कोई स्पष्ट संकेत नहीं दिया गया है.

दिवाली का समय देश के खुदरा कारोबार के लिए बेहद अहम होता है. कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स, गहने और घरेलू सामान की खरीदारी बढ़ने के साथ डिजिटल भुगतान का इस्तेमाल भी तेजी से बढ़ता है. ऐसे समय में UPI लेनदेन पर शुल्क लगाने से कारोबारियों की लागत बढ़ने और भुगतान व्यवस्था को लेकर भ्रम पैदा होने की आशंका थी. इसी वजह से फैसले को आगे बढ़ाना व्यावहारिक कदम हो सकता है. इससे बैंकों, फिनटेक कंपनियों और पेमेंट एग्रीगेटर्स को तकनीकी तैयारियों के लिए भी अतिरिक्त समय मिलेगा.

लेकिन सवाल यह है कि दिवाली के बाद क्या होगा? अगर सरकार प्रस्तावित शुल्क लागू करने की दिशा में आगे बढ़ती है, तो विरोध की आवाजें फिर तेज हो सकती हैं. खासकर छोटे कारोबारियों के लिए यह चिंता का विषय होगा कि डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देने वाली व्यवस्था में अब लेनदेन की लागत भी जुड़ सकती है. भले ही प्रस्तावित शुल्क सीधे ग्राहकों से लेने के बजाय मर्चेंट पर लगाने की बात हो, लेकिन कारोबारियों की लागत बढ़ने पर उसका असर कीमतों या भुगतान के तौर-तरीकों पर पड़ने की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता.

प्रस्ताव के तहत कुछ चुनिंदा बड़े मर्चेंट लेनदेन पर शुल्क लगाने की बात है. २,००० से अधिक के पात्र UPI भुगतान पर ०.४ प्रतिशत MDR और कुछ बड़ी रकम के भुगतान पर अधिकतम ३०० शुल्क का प्रावधान बताया गया है. रेलवे, टेलीकॉम, बीमा और ईंधन जैसे कुछ क्षेत्रों में २,००० से अधिक के भुगतान पर प्रति लेनदेन ५ शुल्क का प्रस्ताव भी शामिल है. हालांकि, इन प्रावधानों का वास्तविक दायरा और लागू होने की शर्तें अंतिम व्यवस्था से स्पष्ट होंगी. आम ग्राहकों के बीच होने वाले व्यक्तिगत UPI लेनदेन (P२P) को फिलहाल मुफ्त रखने की बात कही गई है.

इस मुद्दे का राजनीतिक पहलू भी कम अहम नहीं है. कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सरकार के रुख पर सवाल उठाते हुए कहा कि वित्त मंत्री ने अगस्त में संसद में UPI पर MDR लगाने की योजना से इनकार किया था, जबकि सितंबर में शुल्क लागू करने की घोषणा की गई. कांग्रेस ने इसे सरकार का यू-टर्न बताया है. अब फैसले को दिवाली तक टाले जाने के बाद विपक्ष को सरकार से जवाब मांगने का एक और मौका मिल सकता है.

दरअसल, किसी फैसले को टालना और उसे वापस लेना दो अलग-अलग बातें हैं. सरकार ने अभी तक MDR शुल्क समाप्त करने की घोषणा नहीं की है. ऐसे में दिवाली तक का समय विरोध को शांत करने और व्यवस्था की तैयारी करने का अवसर जरूर है, लेकिन विवाद का अंत नहीं. अगर दिवाली के बाद शुल्क लागू करने की तारीख घोषित होती है, तो कारोबारियों और विपक्ष की ओर से फिर सवाल उठेंगे. इसलिए फिलहाल इसे UPI चार्ज से राहत नहीं, बल्कि राहत की समय-सीमा बढ़ने के तौर पर देखना ज्यादा उचित होगा. फैसला अभी कायम है, सिर्फ उसकी घड़ी आगे खिसकी है.

अवमानना की नियति

मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ हालिया प्रोटेस्ट के दौरान सुप्रीम कोर्ट के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद सुरक्षा के नाम पर मेट्रो स्टेशनों की तालाबंदी और प्रदर्शनकारियों की बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां देखने को मिलीं. लॉ एंड ऑर्डर के नाम पर अदालती आदेशों को ठेंगा दिखाने का यह ट्रेंड नया नहीं है. सवाल उठता है कि क्या अवमानना का खौफ अब सिर्फ कागजी रिट्वाई तक सीमित रह गया है?

अदालती आदेश और जमीनी हकीकत का फासला



नई दिल्ली : मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर दिल्ली में जब कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) और विपक्ष के विरोध प्रदर्शन का ऐलान हुआ, तो राजधानी में सुरक्षा के नाम पर अभूतपूर्व पाबंदियां लगा दी गईं. मामला सर्वोच्च अदालत तक पहुंचा. सुप्रीम कोर्ट ने बहुत सख्त लहजे में कहा कि "मक्खी मारने के लिए हथौड़े का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता". अदालत ने साफ हिदायत दी कि लॉ एंड ऑर्डर की आड़ में मेट्रो स्टेशन पूरी तरह बंद न किए जाएं और न ही ट्रेनों की आवाजाही पर मुकम्मल रोक लगाई जाए. लेकिन अगले ही दिन जमीनी हकीकत कुछ और ही थी. करीब ५७ मेट्रो स्टेशन पूरी तरह सील कर दिए गए, दिल्ली आने वाली तमाम ट्रेनें रद्द रहीं और करीब ७,००० लोगों को शांति बहाली के नाम पर हिरासत में ले लिया गया.

यह पहला मौका नहीं है जब किसी बड़ी अदालत के आदेश और शासन तंत्र की जमीनी कार्रवाई में इतना बड़ा फासला देखा गया हो. जिसे सुप्रीम कोर्ट ने अदालत की अवमानना (कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट) कहकर गृह सचिव, दिल्ली पुलिस कमिश्नर और दिल्ली मेट्रो को नोटिस भेजा है. और अपना जवाब दाखिल करने को कहा है. अकसर देखा गया है कि जब भी कानून-व्यवस्था का सवाल उठता है, सुप्रीम कोर्ट के आदेश सरकारी कागजों की नत्थी में कहीं दबकर रह जाते हैं. ऐसे में यह सवाल मौजूं हो जाता है कि क्या सुप्रीम कोर्ट की अवमानना का खौफ अब अपना असर खोता जा रहा है?

अदालती आदेश और जमीनी हकीकत का फासला

कानून की किताबों में अदालत के आदेश का पालन न करना या उसकी अवहेलना करना अदालत की अवमानना माना जाता है. इसके लिए सजा और जुर्माने के कड़े प्रावधान हैं. लेकिन जब मामला पुलिस और प्रशासनिक तंत्र से जुड़ा होता है, तो कागजी आदेश और मौके पर की जाने वाली कार्रवाई के बीच एक बड़ी खाई दिखती है.

प्रशासन अदालत के सामने तो बेहद अदब से आदेश का पालन करने की हामी भर देता है, लेकिन मैदान में उतरते ही उसकी रणनीति पूरी तरह बदल जाती है. जब सुप्रीम कोर्ट ने मेट्रो और ट्रेनों को आंशिक रूप से चालू रखने और 'प्रिंसिपल ऑफ प्रोपोर्शनैलिटी' का पालन करने को कहा, तब सॉलिसिटर जनरल ने अदालत को भरोसा दिलाया था कि स्थिति को नियंत्रित करते हुए आवाजाही सुचारू रखी जाएगी. मगर हकीकत में प्रशासन ने सुरक्षा के नाम पर पूरी राजधानी की घेराबंदी कर दी.

सवाल यह उठता है कि क्या पुलिस-प्रशासन सुप्रीम कोर्ट के रुख को भांपकर यह मान चुका है कि अवमानना का नोटिस महज एक औपचारिकता है? केस होगा तो देखा जाएगा? क्या अदालती फैसलों का खौफ अब सिर्फ आम नागरिक के लिए बचा है, जबकि सत्ता के संरक्षण में काम करने वाला प्रशासनिक ढांचा इससे पूरी तरह बेखौफ हो चुका है?

इतिहास के झरोखे से: बाबरी मस्जिद से लेकर सिंगरौली तक

अदालती आदेशों के नजरअंदाज होने का यह सिलसिला नया नहीं है. देश के इतिहास में ऐसे कई मोड़ आए हैं जब सुप्रीम कोर्ट के सीधे और स्पष्ट आदेशों को ठेंगा दिखाया गया.

१९९२ में बाबरी ढांचा गिराए जाने से ठीक पहले उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने सुप्रीम कोर्ट में बाकायदा हलफनामा दाखिल करके आश्वस्त किया था कि विवादित ढांचे की हर हाल में सुरक्षा की जाएगी. लेकिन ६ दिसंबर १९९२ को जो हुआ, वह पूरे देश ने देखा. अदालत के आदेश और राज्य सरकार के हलफनामे को ताक पर रख दिया गया. बाद में सुप्रीम कोर्ट ने कल्याण सिंह को अवमानना का दोषी ठहराया और सांकेतिक रूप से एक दिन की सजा और जुर्माने की ताकीद की. लेकिन जो नुकसान होना था, वह हो चुका था.

इसी तरह मध्यप्रदेश में सिंगरौली खदानों की माइनिंग के खिलाफ प्रोटेस्ट पर पुलिस प्रशासन की मनमानी के खिलाफ भी सीजेआई जस्टिस सूर्यकांत की अदालत ने अवमानना का नोटिस दिया. जहां सुप्रीम कोर्ट के लगातार आदेशों के बावजूद प्रदर्शनकारियों और लोगों के मौलिक अधिकार को कानून-व्यवस्था बनाए रखने के नाम पर बार-बार कुचला गया. अदालत ने औद्योगिक गतिविधियों के कारण पर्यावरण को हो रहे नुकसान और स्थानीय निवासियों के अधिकारों की रक्षा के लिए गाइडलाइंस तय कीं. लेकिन जमीनी स्तर पर प्रशासनिक ढिलाई और कॉरपोरेट-प्रशासनिक गठजोड़ के कारण उन निर्देशों की धज्जियां उड़ती रहीं. हर बार यही दलील दी गई कि "जमीनी हालात ऐसे थे कि तुरंत कड़े कदम उठाना जरूरी था."

ये मामले साबित करते हैं कि जब-जब कार्यपालिका को लगा है कि उसके राजनीतिक या प्रशासनिक हित अदालत के फैसलों से टकरा रहे हैं, तब-तब उसने अवमानना के खतरे को दरकिनार करना ही बेहतर समझा है.

क्या सुप्रीम कोर्ट जमीनी चुनौतियों को समझने में चूक कर रहा है?

इस बहस का एक दूसरा पहलू भी है. पुलिस प्रशासन और सुरक्षा विशेषज्ञों का तर्क होता है कि एसी कमरों में बैठकर कानूनी दलीलें सुनना और मौके पर उग्र भीड़ को संभालना, दो पूरी तरह से अलग बातें हैं.

प्रशासन का कहना होता है कि जब हजारों की तादाद में प्रदर्शनकारी सड़कों पर उतरने की तैयारी में हों, तो कोई भी चूक बड़े दंगे या हिंसा का रूप ले सकती है. ऐसे में यदि भीड़ को रोकने के लिए मेट्रो या ट्रेन सेवाएं बंद नहीं की गईं, तो भीड़ को नियंत्रित करना असंभव हो जाएगा. उनका मानना है कि मौका-ए-वारदात पर बदलती परिस्थितियों के हिसाब से रणनीति बदलना पुलिस की मजबूरी बन जाता है.

लेकिन यहां सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या सुप्रीम कोर्ट को लॉ एंड ऑर्डर के रोजमर्रा के फैसलों में दखल देना ही नहीं चाहिए? क्या अदालत जमीनी चुनौतियों का सही आकलन नहीं कर पाती?

सच्चाई यह है कि सुप्रीम कोर्ट कभी भी कानून-व्यवस्था बनाए रखने के खिलाफ नहीं होता. अदालत का जोर हमेशा नागरिकों के मूलभूत अधिकारों और सरकारी कार्रवाई के बीच संतुलन पर होता है. जब पुलिस सुरक्षा के नाम पर पूरे शहर को पंगु बना देती है और निर्दोष नागरिकों की आवाजाही पर पूरी तरह पाबंदी लगा देती है, तो अदालत को हस्तक्षेप करना ही पड़ता है. अगर प्रशासन यह दलील देकर सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को दरकिनार करने लगे कि "मौके की नजाकत अलग थी", तो फिर देश में संविधान और कानून के शासन का कोई मतलब ही नहीं रह जाएगा.

क्या 'टूथलेस' हो रहा है सुप्रीम कोर्ट?

किसी भी लोकतंत्र में न्यायपालिका का आधार उसकी साख और उसके आदेशों का इकबाल होता है. अगर देश की सबसे बड़ी अदालत के आदेशों को शासन तंत्र एक आम 'सरकारी कागज' समझकर रद्दी की टोकरी में फेंकने लगे, तो यह पूरी संवैधानिक व्यवस्था के लिए खतरे की घंटी है.

पिछले कुछ सालों में चुनाव आयोग जैसी स्वायत्त संस्थाओं पर जिस तरह के सवाल उठे हैं और उन्हें 'बिना दांत का शेर' (टूथलेस) कहा जाने लगा है, क्या वही खतरा अब सुप्रीम कोर्ट के सिर पर भी मंडरा रहा है?

जब सरकारें यह समझ लेती हैं कि अदालत आदेश देती रहे, हमें तो वही करना है जो हमारे फायदे में है, तब आम जनता का न्याय प्रणाली से भरोसा उठने लगता है. यदि अवमानना की कार्रवाई केवल कागजी नोटिस तक सीमित रह जाएगी और दोषी अधिकारियों पर सख्त दंडात्मक कार्रवाई नहीं होगी, तो अवमानना का खौफ पूरी तरह खत्म हो जाएगा.

आगे चलकर इसका असर यह हो सकता है कि राजनीतिक दल और विपक्ष भी चुनाव आयोग की तर्ज पर सुप्रीम कोर्ट की निष्पक्षता पर खुलेआम सवाल उठाने लगेंगे. फैसलों में पक्षपात के आरोप लगाए जाने लगेंगे और जजों की आपसी मतभिन्नता (डिसेंटिंग ओपिनियन) को राजनीतिक हथियार बनाया जाने लगेगा. यह स्थिति किसी भी परिपक्व लोकतंत्र के लिए बेहद भयावह होगी.

आदेशों की अवहेलना देश के लिए क्यों खतरनाक है?

भारत जैसे विशाल और विविधता भरे देश में हर तरह के विवादों का अंतिम ठिकाना अदालत ही होती है. चाहे वह सामाजिक ताने-बाने का झगड़ा हो, आर्थिक नीतियां हों, राजनीतिक खींचतान हो या फिर धर्म से जुड़े संवेदनशील मुद्दे हों- जब सारे रास्ते बंद हो जाते हैं, तो देश का हर नागरिक और हर वर्ग सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाता है.

विरोध कितना भी तीखा क्यों न हो, जब सुप्रीम कोर्ट का फैसला आ जाता है, तो देश उसे सिर झुकाकर स्वीकार कर लेता है कि "अदालत ने कह दिया, तो बात खत्म." यही आस्था इस देश को एकजुट और शांत रखे हुए है.

लेकिन सोचिए, अगर देश का आम नागरिक यह देखने लगे कि खुद सरकार और उसका प्रशासनिक अमला सुप्रीम कोर्ट के आदेशों को ठेंगा दिखा रहा है, तो क्या होगा? जब शासन तंत्र का एक धड़ा अपनी सुविधा के हिसाब से अदालती आदेशों को मानना या न मानना तय करने लगेगा, तो समाज के बाकी अंग भी इसी राह पर चल पड़ेंगे. आम लोग भी कानून को अपने हाथ में लेने लगेंगे और न्यायपालिका को अपने-अपने राजनीतिक और सामाजिक एजेंडे के हिसाब से आंकने लगेंगे.

यदि सुप्रीम कोर्ट की अवमानना का डर खत्म हुआ, तो देश में कानून का राज नहीं, बल्कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का नियम चलने लगेगा. सर्वोच्च अदालत को अपनी इस गिरती साख और आदेशों की अवहेलना को रोकने के लिए अब केवल नोटिस जारी करने से आगे बढ़कर ऐसी मिसाली और सख्त कार्रवाई करनी होगी, जिससे कार्यपालिका को यह संदेश स्पष्ट रूप से मिल सके कि संविधान से ऊपर कोई नहीं है.

भारत के राजनिती में विपक्ष का बदलता ढांचा

भारत के राजनिती में साल २०१४ से नरेंद्र मोदी के दौर में कांग्रेस ने ज्यादातर समय ऐसे आंदोलन की तलाश में बिताया है जो उसे उसके चिर-परिचित राजनीतिक दायरे से बाहर ले जा सके. अब लगता है कि उसे ऐसा आंदोलन मिल गया है. मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और वोटर लिस्ट के विशेष गहन संशोधन (SIR) के खिलाफ चल रहे प्रदर्शनों के रूप में यह मौका सामने आया है, लेकिन इस पुरानी और बड़ी पार्टी के कुछ हिस्सों में एक बेचैनी भी पैदा होने लगी है: क्या होगा अगर यह आंदोलन पार्टी के संगठन से भी बड़ा हो जाए?

ज्ञानेश कुमार और एसआईआर (SIR) के खिलाफ चल रहे इन प्रदर्शनों ने ऐसा रूप ले लिया है जो हाल के सालों में कांग्रेस के नेतृत्व या उसके समर्थन वाले आंदोलनों में कम ही देखने को मिला है. महिलाएं, छात्र, वकील, सिविल राइट्स एक्टिविस्ट, वामपंथी संगठन और किसी भी पार्टी से जुड़े न होने वाले युवा इस मुहिम में शामिल हो गए हैं. कुछ लोग राहुल गांधी के साथ मार्च कर रहे हैं. कुछ दूसरे लोग अपने दम पर प्रदर्शन कर रहे हैं, जो कभी-कभी कांग्रेस के अपने संगठनों से ज्यादा खुलकर और तेजी से सामने आते हैं. राहुल के लिए, यह बढ़ता दायरा एक बड़ी राजनीतिक सफलता है. लेकिन कुछ कांग्रेस नेताओं के लिए यह चिंता की बात भी है.

वोटर लिस्ट से लेकर सड़कों तक

ताजा विवाद चुनाव आयोग के उस देशव्यापी अभियान को लेकर है जिसके तहत वोटर लिस्ट की जांच की जा रही है. विपक्ष का आरोप है कि इसकी वजह से योग्य वोटरों के नाम गैरकानूनी तरीके से काट दिए गए हैं. करीब १३ करोड़ नाम हटाए जाने का यह मामला बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन गया है, हालांकि चुनाव आयोग का कहना है कि यह प्रक्रिया बिल्कुल सही है और उसने गड़बड़ी के आरोपों से इनकार किया है.

यह आंदोलन तब और तेज हो गया जब 'इंडियन एक्सप्रेस' की एक इन्वेस्टिगेटिव रिपोर्ट में सामने आया कि वोटर लिस्ट संशोधन से जुड़े फैसलों पर चुनाव आयोग के अंदर ही गंभीर मतभेद थे. यह विवाद अब वोटर रजिस्ट्रेशन की तकनीकी बातों से आगे बढ़कर संस्थाओं की आजादी और भारत के चुनाव तंत्र की साख पर एक बड़ी लड़ाई बन गया है. इस माहौल में, अक्टूबर के शुरुआती हफ्तों की घटनाएं बेहद खास रहीं. राहुल और प्रियंका गांधी वाड्रा ने ६ अक्टूबर से शुरू हुए प्रदर्शनों में हिस्सा लिया. १०-११ अक्टूबर के वीकेंड में जब दिल्ली में सुरक्षा के कड़े इंतजाम थे, तब हजारों प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया. १२ अक्टूबर को राहुल, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्ष (इंडिया ब्लॉक) के दूसरे नेता सुप्रीम कोर्ट की तरफ मार्च करने निकले, जबकि विपक्ष ने इस संशोधन के खिलाफ कानूनी लड़ाई भी शुरू कर दी है.

पुलिस की कार्रवाई के बावजूद आंदोलन रुका नहीं है. १३ अक्टूबर को जंतर-मंतर पर एक और हंगामे के बाद 'कॉकरोच जनता पार्टी' (CJP) के नेताओं को हिरासत में ले लिया गया. पुलिस ने विपक्ष के प्रदर्शनों के सिलसिले में मामले भी दर्ज किए हैं.

सरकार का पक्ष यह है कि वोटर लिस्ट की समय-समय पर जांच होनी चाहिए और राजनीतिक दल एक संवैधानिक संस्था को बदनाम करने की कोशिश कर रहे हैं. बीजेपी ने राहुल गांधी पर तब लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को कमजोर करने का आरोप लगाया है जब चुनाव के नतीजे उनकी पार्टी के पक्ष में नहीं आते.

फिर भी, इन प्रदर्शनों का राजनीतिक महत्व सिर्फ चुनाव आयोग पर लगे आरोपों तक सीमित नहीं है. इसका असली महत्व उन लोगों के सामाजिक दायरे में है जो इन मुद्दों को उठा रहे हैं. चुनाव प्रक्रिया से जुड़ा यह विवाद अब लोकतांत्रिक भागीदारी, नागरिकता और सरकार व आम वोटर के रिश्ते को लेकर उठ रही चिंताओं का एक बड़ा केंद्र बन गया है.

कांग्रेस के लिए सड़क की राजनीति कोई नई बात नहीं है. २०१४ से उसने मोदी सरकार की जमीन अधिग्रहण नीतियों, नोटबंदी, नागरिकता संशोधन कानून (CAA), कृषि कानूनों, बेरोजगारी, महंगाई और जांच एजेंसियों के कथित गलत इस्तेमाल के खिलाफ कई प्रदर्शन आयोजित किए हैं. फिर भी, इनमें से ज्यादातर प्रदर्शन जाने-पहचाने कांग्रेसी आयोजन ही रहे, जिनमें पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं और पुराने संगठनों का बोलबाला रहा.

२०२२-२३ की 'भारत जोड़ो यात्रा' एक बड़ा बदलाव थी. राहुल ने खुद को एक ऐसे नेता के रूप में पेश करने की कोशिश की जो पार्टी की सीमाओं से बाहर निकलकर समाज के जानकारों, बुद्धिजीवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों से जुड़ने को तैयार है. इसके बाद 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' और २०२४ के आम चुनाव के दौरान संविधान को बचाने पर कांग्रेस के जोर ने इसी सोच को आगे बढ़ाया. इसके राजनीतिक नतीजे भी सामने आए, भले ही कांग्रेस अपनी पुरानी ताकत वापस पाने से अभी दूर हो. हालांकि, मौजूदा आंदोलन एक अहम मामले में अलग है. कांग्रेस न तो इसकी इकलौती सूत्रधार है और न ही इसका केंद्र बिंदु.

नेहा बोरा, अभिजीत दिपके, सौरव दास और आशुतोष रंका का सामने आना इसी बदलाव को दिखाता है. वामपंथी छात्र संगठन 'AISA' की २९ साल की अध्यक्ष नेहा बोरा इन प्रदर्शनों का एक जाना-पहचाना चेहरा बन गई हैं. कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) से जुड़े दिपके, दास और रंका ने पारंपरिक राजनीतिक दलों के ढांचे से बाहर आकर युवाओं को एकजुट करने की अपनी क्षमता दिखाई है.

उनकी लोकप्रियता चुनावी राजनीति से नहीं आती. यह विरोध की भाषा, डिजिटल माध्यमों से लोगों को जोड़ने और स्थापित राजनीतिक दलों की पाबंदियों की परवाह किए बिना सत्ता के सामने खड़े होने की हिम्मत से आती है. कांग्रेस के लिए, जो अपने दम पर असरदार युवा नेताओं की नई पीढ़ी तैयार करने में संघर्ष करती रही है, यह स्थिति एक मौका भी है और चेतावनी भी.

नेहा बोरा और कांग्रेस का असहज सवाल

इस आंदोलन की सबसे बड़ी तस्वीर शायद १२ अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट की तरफ मार्च के दौरान देखने को मिली. नेहा बोरा प्रियंका गांधी के साथ चल रही थीं, और राहुल उनके ठीक पीछे थे. इससे भी बड़ी बात यह हुई कि राहुल ने नेहा बोरा को विपक्ष के साझा मंच पर खड़े लोगों को संबोधित करने का मौका दिया.

कांग्रेस के अंदरूनी लोग यह वाजिब सवाल पूछ सकते हैं कि जब भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (NSUI) और युवा कांग्रेस का अपना नेतृत्व ढांचा है, तो वामपंथी छात्र संगठन की एक नेता को इतनी तवज्जो क्यों दी जानी चाहिए?

दिल्ली यूनिवर्सिटी छात्र संघ चुनाव में एनएसयूआई (NSUI) की हालिया हार के बाद यह सवाल और भी चुभने वाला बन गया है. खबरों के मुताबिक, राहुल ने इस हार के बाद कन्हैया कुमार और एनएसयूआई अध्यक्ष विनोद जाखड़ से जवाब मांगा था.

यह कहना गलत होगा कि इस आंदोलन में कांग्रेस का छात्र संगठन मौजूद नहीं था. १३ अक्टूबर को जाखड़ ने राजीव चौक पर एनएसयूआई के प्रदर्शन की अगुवाई की, जहां प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया. युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने भी इसमें सक्रिय रूप से हिस्सा लिया है. लेकिन राजनीतिक रूप से सामने आना हमेशा संगठन की मेहनत के अनुपात में नहीं होता.

नेहा बोरा को मिलने वाली यह प्रमुखता राहुल गांधी की नेतृत्व शैली पर एक बड़ा सवाल खड़ा करती है. वे अक्सर कांग्रेस के पुराने ढांचे के भीतर से आगे बढ़ने वाले लोगों के मुकाबले पारंपरिक पार्टी दायरे से बाहर के लोगों की बात सुनने में ज्यादा दिलचस्पी दिखाते नजर आते हैं.

योगेंद्र यादव और भाकपा (माले) लिबरेशन के महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य ऐसे जाने-माने वैचारिक साथी और राजनीतिक सहयोगी हैं जिनका राहुल के राजनीतिक दायरे में काफी असर है, जिसे कांग्रेस की सदस्यता से नहीं मापा जा सकता. ये दोनों भी मौजूदा प्रदर्शनों में शामिल रहे हैं. इन्हें औपचारिक सलाहकार बताना गलत होगा. इनका महत्व इस बात में है कि वे कांग्रेस की पारंपरिक भाषा से आगे बढ़कर लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और राजनीतिक गोलबंदी पर बातचीत की दिशा तय करते हैं.

राहुल के लिए यह खुलापन एक खूबी हो सकता है. लेकिन उन पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए जो सालों से आपसी गुटबाजी और सांगठनिक सीढ़ियों पर चढ़ने की जद्दोजहद कर रहे हैं, यह ऐसा लग सकता है कि बाहरी लोगों को वो तवज्जो मिल रही है जिसके लिए अपनों को कड़ा संघर्ष करना पड़ता है.

एक बड़े आंदोलन की कीमत

राहुल का राजनीतिक हिसाब-किताब समझना मुश्किल नहीं है. अगर यह सिर्फ कांग्रेस का आंदोलन होता, तो बीजेपी के लिए इसे एक राजनीतिक दल की आपसी लड़ाई बताकर खारिज करना आसान होता. छात्रों, महिलाओं, वकीलों, मानवाधिकार संगठनों और स्वतंत्र कार्यकर्ताओं को शामिल करने वाला यह बड़ा आंदोलन उस दायरे में आसानी से फिट नहीं बैठता.

शायद खुद राहुल ने १२ अक्टूबर को इस अनोखे राजनीतिक आंदोलन की सबसे सटीक परिभाषा दी, जब उन्होंने इन प्रदर्शनों की तुलना भगवान शिव की बारात और उनके तांडव से की. उन्होंने इशारा किया कि ऐसा आंदोलन न तो किसी सख्त योजना से चलता है और न ही इसमें लोगों के शामिल होने पर कोई पाबंदी होती है.

भगवान शिव के प्रति अपनी गहरी आस्था जताने वाले नेता के लिए यह रूपक बहुत खास था. लोकप्रिय कल्पना में शिव की बारात पारंपरिक और गैर-पारंपरिक, जाने-माने और हाशिए के लोगों का एक ऐसा मेल होती है जहां सामाजिक ऊंचाइयों का कोई खास बंधन नहीं होता. राहुल शायद यही राजनीतिक बात समझा रहे थे कि यह आंदोलन उन सबका है जो पार्टी या विचारधारा की परवाह किए बिना इसमें शामिल होना चाहते हैं.

बीजेपी ने इस धार्मिक तुलना पर तुरंत आपत्ति जताई, लेकिन इसके अंदरूनी असर कांग्रेस के भीतर ज्यादा चर्चा का विषय बन सकते हैं. अप्रत्याशित और सबको साथ लेकर चलने वाली इस राजनीतिक बारात को राहुल का अपनाना ही शायद इस बात की वजह है कि वे नेहा बोरा जैसे नए और बाहरी चेहरों को बढ़ावा दे रहे हैं, भले ही उनकी पार्टी का पुराना नेतृत्व इस बढ़ते कद के साथ तालमेल बिठाने में संघर्ष कर रहा हो. इससे एक सवाल यह भी उठता है कि क्या अनुशासित और पदानुक्रम (पदानुसार) की आदी पार्टी ऐसे नेता को अपना सकती है जो इन दोनों ही चीजों के न होने का जश्न मनाता नजर आता है?

कांग्रेस की सांगठनिक कमजोरियों को सिर्फ स्वतंत्र कार्यकर्ताओं की साख उधार लेकर दूर नहीं किया जा सकता. न ही राहुल उन कार्यकर्ताओं को नाराज करने का जोखिम उठा सकते हैं जो यह मानते हैं कि हर विरोध मार्च का अंत कांग्रेस के राजनीतिक कब्जे पर ही होना चाहिए.

असली परीक्षा तब होगी जब प्रदर्शन शांत हो जाएंगे और राजनीतिक फायदों को बांटने का वक्त आएगा. क्या बोरा, दिपके और दास जैसे नेता एक बड़े लोकतांत्रिक गठबंधन के पक्के साथी बन पाएंगे? क्या एनएसयूआई और युवा कांग्रेस को अपनी नई मंजिल मिलेगी, या उन्हें सिर्फ यह अहसास होगा कि जिस राजनीतिक जगह पर उनका कब्जा होना चाहिए था, वहां कोई और आ गया है? और क्या राहुल पार्टी की सांगठनिक पहचान को कमजोर किए बिना शिकायतों के इस मेल को बीजेपी के खिलाफ एक टिकने वाली चुनौती में बदल पाएंगे?

कांग्रेस लंबे समय से यह शिकायत करती रही है कि वह अपने पक्के समर्थकों से आगे बढ़कर ज्यादा लोगों को एकजुट नहीं कर पा रही है. आज एक बहुत बड़ा वर्ग सड़कों पर है. उसकी मुश्किल यह है कि उन सड़कों पर मौजूद हर शख्स नेतृत्व के लिए कांग्रेस की तरफ नहीं देख रहा है.

२५ एकड़ में फैले १०० साल पुराने हेरिटेज घर में शिफ्ट हुआ कपल

यामी-आदित्य ने पहाड़ों में बनाया नया आशियाना



नई दिल्ली : बॉलीवुड के 'धुरंधर' डायरेक्टर आदित्य धर और एक्ट्रेस यामी गौतम इंडस्ट्री के पावर कपल में शुमार हैं. दोनों अपनी पर्सनल लाइफ काफी प्राइवेट रखते हैं. अब ऐसी रिपोर्ट्स हैं कि कपल ने हिमाचल प्रदेश की खूबसूरत हसीन वादियों के बीच घर बसाने का फैसला लिया है.

'फ्री प्रेस जर्नल' की रिपोर्ट में बताया गया है कि यामी और आदित्य मुंबई में खार स्थित एक किराए के मकान में रहते हैं. हालांकि, अब वह हिमाचल प्रदेश शिफ्ट हो गए हैं. काम के सिलसिले में दोनों मुंबई ट्रैवल करते रहेंगे.

रिपोर्ट के मुताबिक, यामी पति आदित्य संग अपने होम टाउन हिमाचल प्रदेश शिफ्ट हो गई हैं. आदित्य से शादी करने से पहले ही यामी ने गोहर (हिमाचल) में २५ एकड़ जमीन पर बना १०० साल पुराना हेरिटेज घर खरीदा था. हालांकि, हम इन रिपोर्ट्स की पुष्टि नहीं करते हैं, क्योंकि यामी या आदित्य ने खुद से इस बारे में कोई ऑफिशियल जानकारी नहीं दी है.

कपल का यह खूबसूरत आशियाना ऑर्गेनिक बगीचों से घिरा हुआ है, जहां हिमाचल के मशहूर सेब, आलू, आलू बुखारा और अदरक उगाए जाते हैं. यह भी बताया जा रहा है कि हिमाचल में उनका यह घर लकड़ी और पत्थर से बना हुआ है. दोनों ने ५ साल पहले २०२१ में इसी प्रॉपर्टी में शादी रचाई थी. अब वो इसी घर में रहेंगे. यह घर यामी के दिल के काफी करीब है.

आदित्य और यामी ने मई २०२४ में अपने बेटे वेदाविद का स्वागत किया था, यामी और आदित्य का पहाड़ों से काफी लगाव है, क्योंकि यहीं एक्ट्रेस का मायका भी है.

हाइट-लुक्स पर अमिताभ ने सुने ताने

अमिताभ बच्चन को सदी का महानायक कहा जाता है. लेकिन इस उपाधि को पाने के लिए उन्होंने सालों स्ट्रगल किया है. एक्टर ने कौन बनेगा करोड़पति १८ के मंच पर बताया कि उन्होंने इंडस्ट्री के शुरुआती दिनों में काफी स्ट्रगल किया था. उनके फिजीकल लुक्स पर भी कमेंट किए गए थे. अपने अपीयरेंस की वजह से उनके लिए काम पाना मुश्किल हो गया था.

क्विज शो में एक कंटेस्टेंट संग बात करते हुए बिग बी ने पुराने दिनों को याद किया. हुआ यूं कि कंटेस्टेंट ने अमिताभ के सिग्नेचर हेयरस्टाइल और side-burns यानी कान के पास के बालों को लेकर सवाल किया. अपने स्ट्रगलिग डेज को याद करते हुए बिग बी बोले- शुरुआत में जब हम फिल्मों में आए तो काम मिलने के लिए प्रोड्यूसर दो चीजों पर हमें बोलते थे. कहते थे हमारी हाईट लंबी है तो कोई हीरोइन काम नहीं करेगी. दूसरा ये कि हमारा चेहरा बहुत छोटा है. उस कमी को पूरा करने के लिए मैंने बाल बढ़ाए. बालों को कनपट्टी तक उगाया जिससे चेहरा भरा हुआ सा लगे.

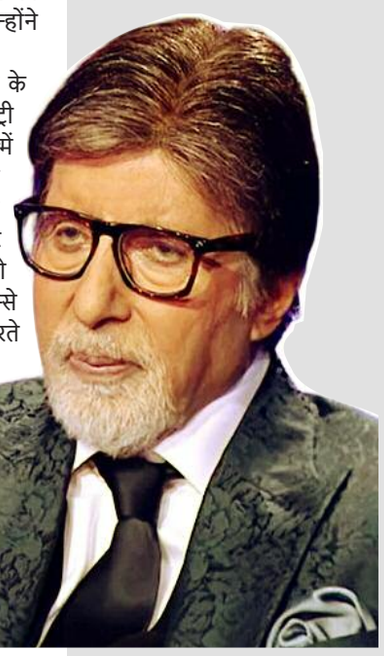
आज सबसे मजेदार बात ये है अमिताभ की यही लंबी हाइट और हेयरस्टाइल उनकी पर्सनैलिटी का हिस्सा है. वो बात अलग है शुरुआती दिनों में इन्हीं चीजों को लेकर उन्हें रिजेक्शन झेलना पड़ा था.

बात करें बिग बी के करियर की तो, उन्होंने १९६९ में फिल्म सात हिंदुस्तानी से बॉलीवुड में कदम रखा था. उनकी शुरुआती फिल्मों ने अच्छा बिजनेस नहीं किया था. ना ही अमिताभ को वो फेम मिल पाया, जिसकी हर कोई कल्पना करता है. फिर १९७३ में आई मूवी जंजीर ने उनके करियर को ऐसा मोड़ दिया कि वो रातोंरात बॉलीवुड के बड़े स्टार्स में शामिल हो गए. जंजीर के बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. इंडस्ट्री में उनकी एंग्री यंगमैन की इमेज बनी. उन्होंने दीवार, शोले, अमर अकबर एंथनी, डॉन जैसी फिल्मों में काम किया. इंडस्ट्री की सभी बड़ी हीरोइनों संग उन्होंने स्क्रीन शेयर किया.

अमिताभ जल्द ८४ साल के होने वाले हैं. आज भी वो इंडस्ट्री में एक्टिव हैं. उनकी कई फिल्में पाइपलाइन में हैं. बिग बी को फैंस इन दिनों क्विज शो कौन बनेगा करोड़पति १८ को होस्ट करते हुए देख रहे हैं. शो में वो अपने करियर से जुड़े किस्से अक्सर फैंस के साथ शेयर करते हैं.

नींद अधूरी, जुनून पूरा

८४ की उम्र में भी बिग बी का काम से इश्क



नई दिल्ली : सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ११ अक्टूबर को ८४ साल के हो जाएंगे. इस उम्र में भी वो सुपर एक्टिव हैं. फिटनेस का बिग बी काफी ख्याल रखते हैं. फिल्मों और टीवी पर बैक टू बैक काम कर रहे हैं. इन दिनों वो कौन बनेगा करोड़पति १८ की शूटिंग में बिजी हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं बढ़ती उम्र के साथ उन्हें हेल्थ रिलेटेड कई इश्यूज हो रहे हैं.

अपने हालिया ब्लॉग में बिग बी ने बताया कि वर्क शेड्यूल की वजह से वो रेस्ट नहीं कर पा रहे हैं. उनकी नींद पूरी नहीं हो रही है. वो सोने के लिए स्ट्रगल कर रहे हैं. उन्होंने बताया कि रात की अच्छी नींद लेना बहुत जरूरी है. लेकिन वो ऐसा नहीं कर पा रहे हैं.

बिग बी ने ब्लॉग में लिखा- लोग कहते हैं रात की नींद इंसान के शरीर के लिए बेस्ट रिपेयर मैकेनिज्म है. लेकिन मेरे लिए इसके लिए समय निकालना मुश्किल हो रहा है. लेकिन आज रात मेरी जल्दी सोने की कोशिश है. ताकि सुबह जल्दी उठकर काम पर जा सकूं. ये अलग तरह की फीलिंग है. दिमाग में कई सारे विचार और आइडियाज हैं. कुछ हासिल करने का जुनून और वो सब कुछ पाने की इच्छा है, जिसे कभी हमने अपना गोल माना था. इसी सोच से आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने की ताकत मिलती है. अब मुझे बिस्तर की तरफ भागना चाहिए.

अमिताभ बच्चन अक्सर ब्लॉग में अपने दिल का हाल बताते हैं. कुछ समय पहले उन्होंने कौन बनेगा करोड़पति १८ के सेट पर फिसलकर गिरने की जानकारी दी थी. इसकी वजह से उनके घुटने में चोट लग गई थी.

उन्होंने बताया था कि उनके लिए ज्यादा देर तक खड़ा रहना मुश्किल हो रहा है. इतने सारे हेल्थ इश्यूज के बावजूद बिग बी अपने काम के पक्के हैं. वो प्रोफेशनल लाइफ के साथ समझौता किए बिना रोजाना काम पर जाते हैं. अपने हिस्से का शूट कंप्लीट करते हैं. ये एक्टिंग और काम के प्रति उनकी ईमानदारी और जुनून को दिखाता है.

वर्कफ्रंट पर, अमिताभ बच्चन के कई प्रोजेक्ट्स पाइपलाइन में हैं. उन्हें पिछली बार रजनीकांत के साथ फिल्म Vettaiyan में देखा गया था. फिल्म कल्कि २८९८ एडी के सीक्वल में वो नजर आएंगे. इसके अलावा वो केबीसी १८ होस्ट कर रहे हैं.

सदफ के माथे पर 'महाकाल'



नई दिल्ली : अफगानिस्तान छोड़कर भारत में बसीं कंटेंट क्रिएटर सदफ शंकर यूं तो अपने बोल्ड अंदाज को लेकर सुर्खियों में रहती हैं. इस समय वह खास वजह से चर्चा में है. सदफ की सोशल मीडिया पर अक्टूबर के महीने की कुछ तस्वीरें वायरल हो रही हैं. वह अलग-अलग लोकेशन पर चिल करती हुई नजर आईं. एक तस्वीर में उनके माथे पर महाकाल लिखा हुआ नजर आया.

अफगानिस्तान में जन्मी मुस्लिम इंफ्लुएंसर के माथे पर महाकाल लिखा हुआ देखकर कई लोग दंग हुए. बता दें कि सदफ शंकर भगवान शिव की बहुत बड़ी भक्त हैं. भगवान शिव में उनकी गहरी आस्था है.

उन्होंने खुद 'स्प्लिट्सविला १६' में इस बात का खुलासा किया था. सदफ ने यह भी बताया था कि उन्होंने अपने नाम के साथ शंकर जोड़ लिया है. उन्होंने अपना पूरा नाम सदफ शंकर रख लिया है.

सदफ पूजा-पाठ भी करती हैं और व्रत भी रखती हैं. पिछले १०-११ साल से वो इंडिया में रह रही हैं. यहीं शोबिज इंडस्ट्री में वो कदम जमाने में लगी हैं. सदफ को डेटिंग शो 'स्प्लिट्सविला १६' से तगड़ी पहचान मिली. लेकिन इसके बाद वो किसी प्रोजेक्ट में नजर नहीं आईं.

मगर सोशल मीडिया के जरिए वो फैंस संग कनेक्टेड रहती हैं.सदफ के बोल्ड बिकिनी लुक्स भी सोशल मीडिया पर छाए रहते हैं. उनका किलर अंदाज लोगों को काफी पसंद आता है.

किम शर्मा का बिकिनी टशन



युवराज सिंह, लिएंडर पेस और हर्षवर्धन राणे को डेट कर चुकीं एक्ट्रेस किम शर्मा का हॉट लुक चर्चा में है. उन्होंने अपनी बोल्ड तस्वीरें शेयर कर बताया कि वह वेकेशन पर हैं और बीच किनारे स्टे कर रही हैं. ४६ साल की एक्ट्रेस किम शर्मा ने इंटरनेट पर अपनी बोल्ड तस्वीरें पोस्ट की हैं. इनमें वो बिकिनी में नजर आ रही हैं. किम ने फोटोज पोस्ट करके बताया कि वो वेकेशन पर हैं. बीच किनारे वो स्टे कर रही हैं. बिकिनी में उनका टशन दिखता है.

किम पीच कलर की बिकिनी में नजर आती हैं. वो कैंडिड पोज दे रही हैं. मिनिमल मेकअप में वो स्टनिंग दिखीं. किम की फिटनेस की लोगों ने तारीफ की है. यूजर्स ने लिखा कि वो किसी भी एंगल से ४६ साल की नहीं दिखती हैं.

एक्ट्रेस ने अपनी टोन्ड फिगर को फ्लॉन्ट किया है. वो मुस्कुराते हुए पोज दे रही हैं. फैंस का कहना है वो फायर लग रही हैं. यूजर्स और सेलेब्स ने किम की फोटो पर रिएक्ट किया है.

यूजर्स के मुताबिक, किम इस उम्र में भी गॉर्जियस लगती हैं. किम अब स्क्रीन पर कम नजर आती हैं. लेकिन बॉलीवुड पार्टीज या इवेंट्स में उन्हें अक्सर देखा जाता है. वो फैंस की फेवरेट हैं. वर्कफ्रंट से ज्यादा वो लवलाइफ को लेकर चर्चा में रही हैं. किम ने युवराज सिंह, लिएंडर पेस, हर्षवर्धन राणे को डेट किया है.

नन्ही बेटी संग दी गुडन्यूज

दूसरी बार मां बनेंगी कियारा आडवाणी



एक्ट्रेस कियारा आडवाणी ने सेकंड प्रेग्नेंसी की घोषणा की है. कपल ने बेबी शॉक्स की फोटो शेयर की, जिसमें उनकी बेटी ने शॉक्स को अपने हाथों में पकड़ा हुआ है.

बधाई हो! एक्ट्रेस कियारा आडवाणी दूसरी बार मां बनने वाली हैं. ७ अक्टूबर को उन्होंने फैंस को ये गुडन्यूज दी है. इंस्टा पर कियारा और सिद्धार्थ ने पोस्ट शेयर कर प्रेग्नेंसी की अनाउंसमेंट की है. कपल ने बेबी शॉक्स की फोटो पोस्ट की है. खास बात है कि शॉक्स को उनकी बेटी ने अपने हाथों में पकड़ा हुआ है.

कियारा और सिद्धार्थ ने जॉइंट कैप्शन में लिखा- एक बार फिर से जिंदगी के सबसे बड़े गिफ्ट से हम नवाजे गए हैं. हमारा दिल प्यार और आभार से भर गया है. सोशल मीडिया पर जैसे ही कियारा की प्रेग्नेंसी की न्यूज ब्रेक हुई, बधाइयों की बौछार लग गई. सेलेब्स और फैंस ने ढेरों बधाई दी है. भूमि पेडनेकर, मुकेश छाबड़ा समेत कई सितारों ने कियारा और सिद्धार्थ को गुड विशेज दी हैं. सबसे खास बात ये है कि कियारा ने जिन बेबी शॉक्स को बेटी को पहनाकर उसके जन्म की न्यूज दी थी. उन्हीं शॉक्स को बेटी के हाथों में पकड़ाकर सेकंड प्रेग्नेंसी अनाउंस की है. कियारा की प्रेग्नेंसी का हिंट उन्हें अंबानी परिवार के गणेशोत्सव में देखने के बाद मिला था. कार्यक्रम में कियारा साड़ी में पहुंची थीं. उनका बढ़ा हुआ वजन देखकर लोगों के बीच बातें बन रही थीं. किसी ने कहा था कि कियारा सेकंड टाइम प्रेग्नेंट लग रही हैं. तो कुछ लोगों ने कयास लगाए कि शायद किसी रोल के लिए उन्होंने अपना वजन बढ़ाया है. खैर, अब सच सबके सामने आ गया है. कियारा की प्रेग्नेंसी न्यूज सुनकर फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं है. हाल ही में इंडस्ट्री की एक और हीरोइन मां बनी हैं. दीपिका पादुकोण ने दूसरी बार बेटी को जन्म दिया है. अब इंडस्ट्री की एक और हीरोइन ने प्रेग्नेंसी की न्यूज दी है. कियारा ने २०२३ में सिद्धार्थ मल्होत्रा संग शादी की थी. २०२५ में उनके घर नन्ही परी सरायाह आई थी. वर्कफ्रंट पर कियारा की पिछली रिलीज मूवी टॉक्सिक थी. इसमें उनके अपोजिट यश थे. फिल्म को लेकर काफी हाईप था, लेकिन ये मूवी बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली. निगेटिव रिव्यू इस फिल्म को ले डूबे.

सिद्धू के घर आई खुशियों की 'आर्या'

नई दिल्ली : पूर्व क्रिकेटर, राजनेता और टीवी फेम नवजोत सिंह सिद्धू के घर खुशियों की बहार आ गई है. सिद्धू दादा बन गए हैं. उन्होंने यह खुशखबरी फैंस के साथ शेयर की है. सिद्धू के बेटे करण सिद्धू और बहू इनायत ने एक बेटी को जन्म दिया है, जिसके आने से पूरा परिवार जश्न में डूबा हुआ है.



सिद्धू ने १ अक्टूबर २०२६ को इंस्टाग्राम पर एक खूबसूरत पोस्ट शेयर कर अपनी पोती के जन्म की जानकारी दी. उन्होंने बच्ची का नाम आर्या सिद्धू रखा है. गुड न्यूज शेयर करते हुए पोस्ट में लिखा गया, हम अपने परिवार में आर्या सिद्धू का स्वागत करते हैं. 'आर्या' नाम संस्कृत के 'आर्य' शब्द से जुड़ा माना जाता है, जिसका अर्थ श्रेष्ठ, महान, कुलीन, आदरणीय और सम्मानित होता है.

एक दूसरी तस्वीर में दादा सिद्धू अपनी पोती के नन्हे पैरों को चूमते हुए दिख रहे हैं. फोटो शेयर करते हुए उन्होंने लिखा- माता पार्वती का आशीर्वाद, उन्होंने मुझे इस साल जनवरी में गुप्त नवरात्रि की अष्टमी के दिन ही पोती आर्या की झलक दिखाई थी.

फैंस ने करण और इनायत को मुबारकबाद दी

सिद्धू की पोस्ट आते ही सोशल मीडिया पर बधाइयों का सिलसिला शुरू हो गया. फैंस ने करण और इनायत को न्यू पेरेंट बनने पर मुबारकबाद दी, वहीं सिद्धू और पत्नी नवजोत कौर सिद्धू को दादा-दादी बनने की बधाई दी. करण सिद्धू और इनायत के लिए ये उनकी जिंदगी का नया अध्याय है, जबकि सिद्धू परिवार के लिए यह खुशी का दोहरा मौका है. नन्ही आर्या के आने से सिद्धू के घर में किलकारियों और उत्सव का माहौल है.

दृश्यम-३ में खुला २३ जुलाई का राज

दृश्यम में विजय सलगांवकर की फैमिली २ अक्टूबर को पणजी क्या करने जाती है? ये हर कोई जानता है. हालांकि, उनकी जिंदगी में २३ जुलाई की रात भी एक बड़ा बवाल खड़ा हुआ था. इसका खुलासा 'दृश्यम द कन्क्लूजन' में हुआ. अब ये तारीख ट्रेंड कर रही है.

इंडियन सिनेमा की सबसे थ्रिलिंग फिल्म फ्रैंचाइजी 'दृश्यम' एक बार फिर ऑडियंस का दिमाग घुमाने आ चुकी है. मलयालम वर्जन से परे होकर अजय देवगन इसका हिंदी वर्जन 'दृश्यम द कन्क्लूजन' लाए हैं जो एक ओरिजिनल कहानी है. सिनेमाघरों में ये रिलीज हो गई है. इस बार हिंदी में दृश्यम की कहानी खत्म हो चुकी है. विजय सलगांवकर और पुलिस के बीच हुए इस आंख-मिचोली के खेल का अंत हुआ है.

'दृश्यम द कन्क्लूजन' या कहें दृश्यम-३ एक फ्रेश कहानी और दिमाग घुमाने वाले ट्विस्ट के साथ लौटी है. पिछले पार्ट के बाद, जहां हमें लगा कि विजय सलगांवकर की फैमिली पर खतरा अब टल गया है. वहीं एक नए किरदार की एंट्री से वो चीज वापस आ जाती है. साथ ही एक नई तारीख भी इस आंख-मिचोली के खेल में शामिल होती है,

विजय के खिलाफ फिर खुला केस और आया नया सबूत



जिसके इर्द-गिर्द फिल्म में मिस्ट्री का खेल शुरू होता है. २ अक्टूबर के बाद, विजय के परिवार पर २३ जुलाई के दिन क्या हुआ था इसपर सस्पेंस बन चुका है.

जिन लोगों ने फिल्म 'दृश्यम द कन्क्लूजन' देख ली है, वो मेरी इस बात को आसानी से समझ गए होंगे. लेकिन जिन्होंने भी अभी तक फिल्म नहीं देखी है, तो आपके लिए एक बड़ा SPOILER ALERT है. इसके आगे आप तभी पढ़िएगा, जब आपको तीसरी फिल्म की कहानी पता हो.

पॉप कल्चर में २ अक्टूबर को दृश्यम जयंती

दृश्यम फ्रैंचाइजी में २ अक्टूबर के दिन का कितना महत्व है, ये बताने की जरूरत नहीं. सलगांवकर फैमिली इसी दिन गोवा के पणजी गई, वहां पाव-भाजी खाई और सतसंग में हिस्सा लिया. पॉप कल्चर में २ अक्टूबर को गांधी जयंती नहीं, बल्कि दृश्यम जयंती बताया जाता है. जब भी इस तारीख का जिक्र उठता है, सोशल मीडिया पर फिल्म के मीम्स बनने शुरू हो जाते हैं. मगर 'दृश्यम द कन्क्लूजन' ने इस तारीख को अब बदलकर २३ जुलाई का दिन सबसे खास और महत्वपूर्ण बना दिया है.

दरअसल दृश्यम ३ का पूरा प्लॉट इसी तारीख पर आकर अटका है. ये वो दिन है, जब विजय सलगांवकर ने सैम के कंकाल को फोरेंसिक लैब से निकालकर एक दूसरी बॉडी के कंकाल के साथ बदल दिया था. दृश्यम २ में ये एक बहुत बड़ा ट्विस्ट था, जिसके दम पर विजय और उसका परिवार कोर्ट से बरी हुआ था. मगर फिर तीसरे पार्ट में क्राइम ब्रांच के एसपी राजवीर सिंह तोमर की एंट्री से ये केस वापस खुला. उसे विजय और उसकी फैमिली के खिलाफ एक बड़ा ठोस सबूत मिला, जिसके दम पर वो उन्हें वापस कोर्ट में घसीटता है.

कटघरे में खड़ा होता है विजय का परिवार

२३ जुलाई की रात विजय सलगांवकर ने जो कुछ सैम की बॉडी के साथ किया, उसका एक हिस्सा एसपी राजवीर तोमर के हाथ लगता है. इसी के दम पर मीरा और उसके पति महेश विजय से बदला लेने की ठान लेते हैं. उस रात से जुड़े ठोस सबूत के चलते, इस बार भी विजय का परिवार कटघरे में आकर खड़ा होता है. अब क्या वो अंत में बचकर निकलता है, या उसे इस लड़ाई में हार मिलती है? ये आप फिल्म देखकर ही पता लगाइए. इसे अभिषेक पाठक ने डायरेक्ट किया है, जो दृश्यम २ के भी डायरेक्टर थे.

खास खबरें

पिकनिक मनाने आए पुणे के आठ छात्रों की डूबकर मौत



मुंबई : महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले में बड़ा हादसा सामने आया है। पुणे के एक निजी कोचिंग क्लास से आए आठ छात्रों की समुद्र में डूबने से मौत हो गई। यह हादसा रायगढ़ जिले के दिवेआगर बीच पर हुआ। समुद्र में नहाने के दौरान तेज लहरों की चपेट में आने पर छात्र खुद को नहीं बचा पाए। छात्र महाराष्ट्र के पुणे जिले के आलंदी से पिकनिक मनाने आए थे। कड़ी मशक्कत के बाद समुद्र से सभी आठ छात्रों के शव बाहर निकाल लिए गए। पुणे से रायगढ़ के इस बीच की दूरी करीब १६६ किलोमीटर है।

जानकारी के अनुसार सभी छात्र पुणे के आलंदी के रहने वाले हैं। वे दिवेआगर बीच नहाते वक्त ही हादसे का शिकार बने। ये छात्र पुणे के आलंदी की एक प्राइवेट कोचिंग क्लास से आए थे। सभी छात्र ११वीं और १२वीं कक्षा के साइंस के स्टूडेंट हैं। स्थानीय लोग पीड़ितों को बचाने के लिए दौड़े और उन्हें बोरली प्राइमरी हेल्थ सेंटर ले गए। जहां पहुंचने पर मेडिकल अधिकारियों ने सभी आठों को मृत घोषित कर दिया।

प्रसिद्ध तीर्थस्थल है यह बीच

पुलिस और अधिकारियों ने इस दुखद घटना की जांच शुरू कर दी है। ऐसा मान जा रहा है कि समुद्र के पानी की गहराई और लहरों का अंदाजा नहीं होने के कारण यह दर्दनाक हादसा होने की प्राथमिक जानकारी सामने आई है। दिवेआगर रायगड के श्रीवर्धन तालुका का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। सभी छात्रों के शवों को आगे की कार्रवाई के लिए बोर्ली पंचतन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में रखा गया है।

यह बीच लगभग ४ किलोमीटर लंबा है और नारियल, सुपारी तथा सुरु के पेड़ों से घिरा हुआ है। पर्यटकों के लिए यहां जेट स्की, बनाना राइड और बोट राइड जैसी कई वाटर एक्टिविटी उपलब्ध हैं। सुबह के समय यहां हजारों की संख्या में सीगल्स दिखाई देते हैं और यहां से सूर्यास्त का नजारा बहुत मनमोहक होता है। यहां प्रसिद्ध सुवर्णा गणेश मंदिर और प्राचीन रूपनारायण मंदिर भी स्थित हैं। इस हादसे को लेकर राज्य की डिप्टी सीएम सुनेत्रा पवार रायगढ़ के कलेक्टर से बात की। उन्होंने दिवेआगर बीच पर हुई दुखद घटना में मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। सुनेत्रा पवार ने प्रशासन को सभी जरूरी मदद तुरंत उपलब्ध कराने और उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

महाराष्ट्र MLC चुनाव में महायुति के अंदर 'महाभारत'?

मुंबई : महाराष्ट्र विधान परिषद की ५ सीटों पर होने वाले चुनाव से पहले सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन के भीतर मतभेद खुलकर सामने आ रहे हैं। अमरावती में शिवसेना के उम्मीदवार के सामने बीजेपी का बागी उम्मीदवार चुनावी मैदान में है। बता दें कि यह सीट महायुति गठबंधन में शिवसेना (शिंदे गुट) के कोटे में आई है, लेकिन यहां महायुति और महाविकास आघाडी (MVA) दोनों तरफ से बागी और कई उम्मीदवार मैदान में हैं। कांग्रेस की ओर से यहां अदिति पोहरे उम्मीदवार हैं।

वहीं, पुणे शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र में शिवसेना ने बागी उम्मीदवार सचिन सानप को समर्थन देने का ऐलान किया है। डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे ने गुरुवार को मंत्री उदय सामंत के ओएसडी और पुणे शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र विधान परिषद चुनाव में निर्दलीय उम्मीदवार सचिन सानप को १०० फीसदी समर्थन देने की घोषणा की थी। सचिन सानप पुणे शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार हैं। सचिन सानप का मुकाबला बीजेपी के कौस्तुभ गावडे से हैं।

दरअसल, पुणे शिक्षक सीट पर शिवसेना अपना उम्मीदवार उतारना चाहती थी, लेकिन बीजेपी ने सीट अपने पास रखते हुए कौस्तुभ गावड़े को उम्मीदवार बनाया। इसके बाद एकनाथ शिंदे ने अपने करीबी मंगेश चिवटे को एबी फॉर्म देकर चुनाव मैदान में उतारने की कोशिश की लेकिन बाद में उन्हें अपना नामांकन वापस लेना पड़ा। वहीं, इस सीट पर महाराष्ट्र के उद्योग मंत्री उदय सामंत के पूर्व ओएसडी सचिन सानप निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे हैं। एकनाथ शिंदे ने गुरुवार देर रात सानप को समर्थन देने का ऐलान किया। आज से शिवसेना उनके प्रचार अभियान में भी शामिल होगी। गठबंधन में शामिल एक दल के दूसरे सहयोगी दल के उम्मीदवार के खिलाफ निर्दलीय प्रत्याशी को समर्थन देने से यह चुनावी मुकाबला दिलचस्प बन गया है। वहीं, इस पूरे घटनाक्रम से महायुति के भीतर मतभेद भी दिखाई दे रहे हैं।

कई दिनों से जारी सस्पेंस के बाद एकनाथ शिंदे ने आखिरकार चुप्पी तोड़ दी है। पुणे में दिए गए बयान में शिंदे ने स्पष्ट कहा कि सचिन सानप को शिवसेना का सौ फीसदी समर्थन है। वहीं, महायुति के सभी दलों के एकजुट होकर चुनाव लड़ने के सवाल पर एकनाथ शिंदे ने कहा कि विधान परिषद का चुनाव महायुति के तौर पर ही लड़ा जा रहा है। हालांकि, उन्होंने कुछ जगहों पर अपवाद होने की बात भी कही। शिंदे ने विश्वास जताया कि महायुति पांचों सीटों पर जीत हासिल करेगी।

अब पूरे साल सार्वजनिक सड़कों पर पटाखे फोड़ने पर रोक

मुंबई : दिवाली और अन्य त्योहारों के दौरान ध्वनि एवं वायु प्रदूषण पर गंभीर रुख अपनाते हुए बॉम्बे हाई कोर्ट ने बड़ा फैसला किया है। बॉम्बे हाई कोर्ट ने पूरे महाराष्ट्र में सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर पटाखे फोड़ने पर रोक लगाने के निर्देश दिए हैं। हालांकि, हाई कोर्ट की ओर से पटाखों के निर्माण और बिक्री पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। इसके साथ ही कोर्ट ने प्रशासन को निर्देश दिया है कि कोर्ट के आदेश को सुनिश्चित करना प्रशासन की जिम्मेदारी होगी।

बॉम्बे हाईकोर्ट ने सार्वजनिक सड़कों, गलियों और फुटपाथों पर पटाखे फोड़ने पर लागू प्रतिबंध को पूरे साल और सभी त्योहारों के दौरान जारी रखने का निर्देश दिया है। यानी अब नवरात्रि, दिवाली और क्रिसमस जैसे त्योहारों के दौरान भी इन सार्वजनिक जगहों पर पटाखे नहीं फोड़े जा सकेंगे। जस्टिस गिरीश कुलकर्णी और जस्टिस नीला गोखले की पीठ ने यह आदेश दिया। अदालत ने प्रदूषण के गंभीर असर पर चिंता जताते हुए कहा कि दिवाली के बाद जहरीले प्रदूषण के कारण लोगों का जीवन मुश्किल हो जाता है। इसका असर खास तौर पर बुजुर्गों और बच्चों की सेहत पर पड़ता है। अदालत ने सार्वजनिक सड़कों, गलियों और फुटपाथों पर पटाखे फोड़ने पर प्रतिबंध को पूरे साल लागू रखने की बात कही है। इस आदेश का मुख्य जोर सार्वजनिक स्थानों पर पटाखे फोड़ने से रोकने पर है। बॉम्बे हाई कोर्ट के जस्टिस गिरीश कुलकर्णी और जस्टिस नीला गोखले की खंडपीठ ने आज गुरुवार को सुनवाई के दौरान डीजे, लाउडस्पीकर, डॉल्बी साउंड सिस्टम और लेजर लाइट के इस्तेमाल पर भी प्रतिबंधों को लेकर निर्देश जारी किए हैं।

१ घंटे का सफर १० मिनट में पूरा, नागपुर का सबसे लंबा फ्लाइओवर शुरू



नागपुर : सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नागपुर में एक फ्लाइओवर का उद्घाटन किया। यह फ्लाइओवर चर्चा का विषय बन गया है। इसे अल्ट्रा हाई परफॉर्मेंस फाइबर रीइन्फोर्स्ड कंक्रीट (UHPFRC) तकनीक से बनाया गया है। इंदोरा चौक-दिघोरी फ्लाईओवर की खास बात है कि यह न सिर्फ यात्रा का समय करेगा बल्कि यह इको फ्रेंडली होगा। नेशनल हाईवे नंबर ३५३D पर लगभग ८.९ किलोमीटर लंबा यह इंदोरा चौक-दिघोरी फ्लाईओवर नागपुर शहर के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों को जोड़ता है। यह नागपुर का सबसे लंबा और सबसे महंगा एलिवेटेड कॉरिडोर है।

नई तकनीक से बनाया गया फ्लाइओवर

इस मौके पर बोलते हुए गडकरी ने इस फ्लाईओवर की तकनीकी खूबियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि UHPFRC तकनीक के इस्तेमाल से दो खंभों के बीच लंबे स्पैन बनाना मुमकिन हुआ, जिसमें स्ट्रक्चरल सेगमेंट के एक ही जोड़े का इस्तेमाल किया गया। इससे जरूरी सपोर्ट की संख्या कम हुई और फ्लाईओवर का निर्माण तेजी से हो सका।

नितिन गडकरी ने कहा कि इंदोरा और दिघोरी के बीच सड़क से यात्रा करने में पहले लगभग एक घंटा लगता था, लेकिन अब नए फ्लाईओवर से यह यात्रा सिर्फ़ १० से १५ मिनट में पूरी हो सकती है। इस फ्लाईओवर का निर्माण नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया (NHAI) ने लगभग १,००० करोड़ रुपये की लागत से किया है।

नितिन गडकरी ने बताया कि यह फ्लाईओवर अशोक स्क्वायर पर पांच दिशाओं को जोड़ता है। जंक्शन पर एक अशोक स्तंभ भी लगाया गया है, साथ ही संविधान-थीम वाली पेंटिंग और आकर्षक लाइटिंग भी की गई है। उन्होंने साफ किया कि इस फ्लाईओवर कॉरिडोर की वजह से मौजूदा सड़कों के नाम में कोई बदलाव नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि यह मल्टी-लेयर्ड स्ट्रक्चर, चाहे वह तीन लेयर का हो या चार लेयर का, नागपुर की एक खास पहचान बन गया है। उदाहरण के लिए दिघोरी रिंग रोड को ही लें: बेस लेवल पर रिंग रोड है, उसके ऊपर नया नेशनल हाईवे फ्लाईओवर है, और उसके ऊपर एक और फ्लाईओवर है; यानी एक जगह पर तीन लेयर हैं। कुछ जगहों पर मेट्रो चौथी लेयर बनाती है। फ्लाईओवर के नीचे मीडियन में पौधारोपण किए गए हैं और बेहतरीन पेंटिंग की गई है।

नागपुर के नए फ्लाइओवर का नाम

नितिन गडकरी ने कहा कि इंदोरा चौक से पंचपाओली चौक तक की सड़क, जिसका नाम डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मार्ग है, उसका नाम वही रहेगा। सिर्फ़ फ़्लाईओवर का नाम डॉ. हेडगेवार फ़्लाईओवर रखा गया है। इसी तरह, अशोक चौक का नाम अशोक चौक ही रहेगा और इसकी पहचान को ध्यान में रखते हुए इसे ठीक से रिनोवेट और व्यवस्थित किया गया है। जहां तक रेशमबाग चौक की बात है, तो उसका आधिकारिक नाम जनरल मंचरशा अवारी चौक है।

यहां बनाए गए रैंप

डागा हॉस्पिटल, रेशमबाग चौक और बड़ा ताजबाग में रैंप बनाए गए हैं। उम्मीद है कि इन सुविधाओं से गांधीबाग और पंचपाओली जैसे घनी आबादी वाले इलाकों में ट्रैफ़िक जाम कम करने में मदद मिलेगी। अग्रसेन चौक पर मेट्रो कॉरिडोर के ऊपर एक एलिवेटेड पैसेज बनाया गया है। गडकरी ने कहा कि इससे मल्टी-लेन ट्रैफ़िक मूवमेंट आसान हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे नागपुर शहर में वर्धा रोड और कामठी रोड पर व्यवस्था है।

देवेंद्र फडणवीस ने घोषणा की कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के सौ साल पूरे होने के उपलक्ष्य में इस फ़्लाईओवर का नाम RSS के संस्थापक सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार के नाम पर रखा जाएगा। उन्होंने फ़्लाईओवर के उद्घाटन के बाद कविर्य सुरेश भट ऑडिटोरियम में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में यह घोषणा की।

राहुल गांधी को पार्टी को छोड़कर स्टैंड-अप कॉमेडियन बनना चाहिए : सीएम देवेंद्र फडणवीस



नागपुर : इंदौर में राहुल गांधी के 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के दौरान की गई मिमिक्री को लेकर महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने उनपर निशाना साधा है। फडणवीस ने नागपुर मीडिया से बातचीत के दौरान राहुल गांधी और कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी जो मिमिक्री कर रहे हैं, मैं तो ऐसा मानता हूं कि राहुल गांधी जी को पार्टी को छोड़कर स्टैंड-अप कॉमेडियन बनना चाहिए। क्योंकि उनकी पार्टी को तो उन्होंने बेरोजगार कर दिया है। अब कम से कम स्टैंड-अप कॉमेडियन का रोजगार उन्हें मिले।

'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी की मिमिक्री

राहुल गांधी के 'छात्रों की गूंज' कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री मोदी के तौर-तरीकों और सार्वजनिक रूप से उनके पेश आने वाले अंदाज की मिमिक्री की गई थी। परफॉर्मर ने पीएम मोदी की खास हंसी, हाथों के इशारों और लोगों का अभिवादन करने और गले मिलने के तरीके की नकल की। यह एक्ट राहुल गांधी के संबोधन वाले छात्रों पर केंद्रित कार्यक्रम के दौरान हुआ। मिमिक्री करने वाले कलाकार पुलकित मणि थे, जो एक भारतीय स्टैंड-अप कॉमेडियन और सोशल मीडिया कंटेंट क्रिएटर हैं। यह परफॉर्मेंस जल्द ही राजनीतिक चर्चा का विषय बन गई, जिसमें भाजपा ने स्टेज एक्ट और उस पर राहुल गांधी की प्रतिक्रिया को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा।

इससे पहले केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कांग्रेस पर निशाना साधा था। किरेन रिजिजू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर कांग्रेस की मिमिक्री वाला क्लिप था साझा कर लिखा था कि कांग्रेस पार्टी कॉमेडियन और जोकरों की पार्टी बन गई है। वे हमेशा के लिए बाहर हो गए हैं। वहीं इस घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए, महाराष्ट्र बीजेपी विधायक राम कदम ने छात्रों और उनकी चिंताओं पर केंद्रित कार्यक्रम में मिमिक्री के इस्तेमाल पर सवाल उठाए। कदम ने कहा कि राहुल गांधी खुद कब इस बात पर गौर करेंगे कि मिमिक्री मनोरंजन तो दे सकती है? लेकिन अगर देश को आगे बढ़ना है और हमें छात्रों के उत्थान के बारे में बात करनी है, तो नीति, कड़ी मेहनत और अवसरों पर चर्चा करना जरूरी है।

दिवाली से पहले किसानों के खातों में आएंगे ५००० रुपये

मुंबई : महाराष्ट्र में सूखा प्रभावित किसानों को दिवाली से पहले बड़ी राहत देने की तैयारी है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने किसानों को ५,००० रुपये की अग्रिम सहायता देने का फैसला किया है। करीब १ से सवा करोड़ किसानों के खातों में सीधे पैसे जमा किए जाएंगे। इस सहायता पर करीब ६,००० करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। सरकार के इस फैसले को लेकर राज्य के डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि हम किसानों की दिवाली फीकी नहीं होने देंगे।

सरकार का प्रयास है कि नुकसान झेलने वाले किसानों को बिना भेदभाव राहत मिले। इसके लिए पंचनामे पूरे होना और फसल को नुकसान होना प्रमुख आधार होंगे। सरकार की कोशिश है कि दिवाली से पहले सभी पंचनामे पूरे कर पात्र किसानों को सहायता दी जाए। सरकार का दावा है कि राज्य के इतिहास में पहली बार सूखा प्रभावित किसानों को अग्रिम सहायता दी जा रही है। इससे पहले अंतिम सहायता के तौर पर न्यूनतम १,००० रुपये दिए जाते थे, जबकि अब न्यूनतम सहायता राशि ५,००० रुपये होगी।

सूखे से निपटने के उपायों को लेकर हुई बैठक में आचार संहिता का मुद्दा भी उठा। कुछ मंत्रियों ने शिकायत की कि आचार संहिता लागू होने के कारण अधिकारी बैठकों में शामिल नहीं हो रहे हैं और चुनाव आयोग की अनुमति का हवाला दे रहे हैं। इस पर मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नाराजगी जताते हुए कहा कि अगर कोई अधिकारी आचार संहिता का कारण बताकर सूखे की बैठक में शामिल नहीं हो रहा है, ऐसे अधिकारियों को निलंबित कर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि सूखे से निपटने के उपायों पर आचार संहिता लागू नहीं होती।

तुकाराम मुंढे की बड़ी कार्रवाई

सिप्ला के पुणे गोदाम का ड्रग लाइसेंस किया रद्द

पुणे : महाराष्ट्र फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन ने दवा कंपनी Cipla फार्मा एंड लाइफ साइंसेस लिमिटेड के पुणे स्थित वाडकी गोदाम का दवा बिक्री और वितरण लाइसेंस रद्द कर दिया है। यह कार्रवाई गलत लेबलिग, दवाओं के भंडारण और साफ-सफाई से जुड़े नियमों के उल्लंघन के आरोपों के बाद की गई। कार्रवाई FDA कमिश्नर तुकाराम मुंढे की देखरेख में और बॉम्बे हाई कोर्ट के निर्देशों के बाद हुई। FDA की कार्रवाई का एक प्रमुख कारण 'रिएक्टिन प्लस' दवा की लेबलिग बताई गई है। यह शेड्यूल-H दवा है, जिसे डॉक्टर की पर्ची के बिना बेचा नहीं जा सकता।

अधिकारियों के मुताबिक, इसकी पैकेजिंग पर ऐसे विज्ञापन और दावे किए गए थे, जिनमें सिरदर्द, मांसपेशियों के दर्द, पीठ दर्द, जोड़ों के दर्द, मोच, शरीर के दर्द और दांत दर्द से तुरंत राहत का दावा किया गया था। FDA निरीक्षण के दौरान गोदाम में दवाओं के भंडारण और साफ-सफाई से जुड़े नियमों के उल्लंघन भी पाए गए। अधिकारियों के अनुसार, दवाओं के डिब्बे फर्श पर रखे मिले और उन पर धूल जमा थी। गोदाम में अनिवार्य इंस्पेक्शन बुक भी उपलब्ध नहीं थी। इसके अलावा, एक्सपायर हो चुकी दवाओं को अलग 'Not for Sale' जोन में रखने की व्यवस्था भी नहीं मिली। अधिकारियों को एंटीबायोटिक्स समेत कुछ दवाओं के फिजिकल स्टॉक और कंप्यूटर रिकॉर्ड के बीच अंतर भी मिला।

कंपनी की सफाई को एफडीए ने नहीं माना

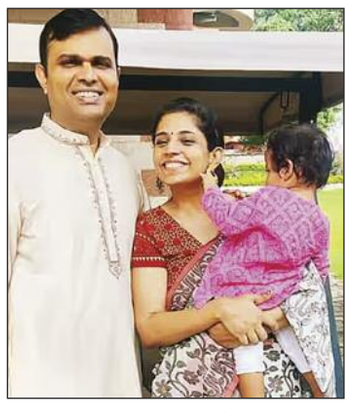
FDA ने कंपनी की ओर से दी गई सफाई को स्वीकार नहीं किया। विभाग ने स्पष्ट किया कि डिजिटल रिकॉर्ड रखने से दवाओं के फिजिकल स्टोरेज, साफ-सफाई और जरूरी कानूनी दस्तावेजों से जुड़े नियमों से छूट नहीं मिलती। विस्तृत सुनवाई की प्रक्रिया पूरी करने के बाद और बॉम्बे हाई कोर्ट के निर्देशों का पालन करते हुए १ अक्टूबर को लाइसेंस रद्द करने का अंतिम आदेश जारी किया गया।

तुकाराम मुंढे ने क्या कहा?

FDA कमिश्नर तुकाराम मुंढे ने कहा कि विभाग का उद्देश्य केवल कार्रवाई करना नहीं है, बल्कि दवाओं की सप्लाई चेन में सुरक्षा, गुणवत्ता और कानूनी नियमों का पालन सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने कहा कि मामले में प्राकृतिक न्याय, पारदर्शिता, सुनवाई और तर्कसंगत निर्णय के सिद्धांतों का पालन करते हुए कार्रवाई पूरी की गई है।

आंगनबाड़ी में पढ़ते हैं इस IAS के बच्चे

नंदुरबार कलेक्टर मिताली सेठी ने क्यों नहीं चुना कोई टॉप स्कूल



मुंबई : नंदुरबार जिले की कलेक्टर मिताली सेठी ने अपने जुड़वां बेटों के तीन साल के होने पर उन्हें सरकारी आंगनवाड़ी में दाखिल कराया। एक कार्यक्रम में इस फैसले के बारे में बात करते हुए, उन्होंने बताया कि उन्होंने यह फैसला इसलिए नहीं लिया कि वह सरकारी संस्थानों के बारे में कोई बड़ी बात कहना चाहती थीं। उन्हें बस आंगनवाड़ी पसंद आई और वहां काम करने वाले लोगों पर भरोसा था।

मिताली सेठी ने कहा कि मैंने उन्हें आंगनवाड़ी में इसलिए भेजा क्योंकि मुझे आंगनवाड़ी पसंद है। मेरा मतलब है, मुझे लगता है कि इसका इससे ज्यादा आसान कोई जवाब नहीं है। उन्होंने कहा कि वह अपने बच्चों को उनके तीसरे जन्मदिन पर वहां ले गईं, ठीक वैसे ही जैसे गांव की कोई दूसरी मां करती। उन्होने कहा, 'जब वे ३ साल के हुए, तो मैं उन्हें उनके जन्मदिन पर आंगनवाड़ी ले गई क्योंकि गांव की दूसरी मां भी ऐसा ही कर रही थीं। यह मेरे घर के पास थी। मुझे आंगनवाड़ी बहुत पसंद आई।'

मिताली सेठी IAS कौन?

मिताली सेठी का जन्म पंजाब के जालंधर में हुआ था। वह पढ़ाई में बहुत होशियार थीं। शुरुआती पढ़ाई पूरी करने के बाद, उन्होंने अमृतसर से डेंटल डिग्री (BDS) हासिल की। इसके बाद वह चेन्नई गईं और ऑर्थोडॉन्टिक्स में अपनी मास्टर डिग्री पूरी की। पेशे से डॉक्टर होने के नाते, मिताली को IAS का मतलब तक नहीं पता था। लेकिन बाद में उन्होंने अपना करियर बदलने का फ़ैसला किया और पब्लिक सर्वेंट बनने की तैयारी शुरू कर दी। सेठी को अपने पहले और दूसरे प्रयास में सफलता नहीं मिली, लेकिन उन्होंने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी और अपनी पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने २०१७ में अपने तीसरे प्रयास में UPSC परीक्षा पास की। मिताली ने न सिर्फ़ भारत की सबसे मुश्किल परीक्षाओं में से एक को पास किया, बल्कि ५६वीं रैंक भी हासिल की।

एक आंगनवाड़ी वर्कर ने उस जगह के बारे में उनका नजरिया बदल दिया। मिताली सेठी ने एक घटना को याद किया, जिसने उनके इस विश्वास को और मज़बूत किया कि आंगनवाड़ी का माहौल वैसा ही है जैसा वह अपने बच्चों के लिए चाहती थीं। अपने जुड़वां बच्चों के वहां जाने से पहले, उन्होंने देखा था कि वजन करने के दौरान बच्चे असहज हो जाते थे। आंगनवाड़ी में बच्चों का वजन करने के लिए एक पारंपरिक झोली का इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन बच्चे अक्सर उसमें रखे जाने पर रोने लगते थे।

फिर एक आंगनवाड़ी वर्कर ने एक अलग समाधान निकाला। मिताली सेठी के अनुसार, उस वर्कर ने एक स्थानीय दर्ज़ी के साथ मिलकर एक और झोली बनवाई जिससे बच्चे ज़्यादा सहज महसूस करें। जब किसी बच्चे को उसमें रखा जाता, तो वह रोता नहीं था। और मैंने सोचा, क्या? कमाल है। जैसा कि मैंने आपको बताया, वे सच में कमाल की हैं। डुगार्ड ने एक लोकल दर्जी को काम पर रखा।

बच्चों को कुछ अलग सिखाना चाहती थीं मिताली

दर्जी ने कलेक्टर मिताली सेठी से कहा कि 'मुझे आपका टेंडर वगैरह नहीं चाहिए। मैं यह काम खुद करूंगी।' और उन्होंने ऐसा किया भी। मुझे लगा कि क्या मैं यही तो नहीं चाहती कि मेरे बच्चे सीखें? मैं चाहती हूं कि मेरे बच्चे उन्हीं से सीखें। मिताली सेठी के लिए, उस छोटी सी पहल का बहुत महत्व था। इससे उन्हें समझ आया कि सीखने का माहौल सिर्फ इस बात से नहीं बनता कि बच्चों को औपचारिक रूप से क्या सिखाया जा रहा है, बल्कि इस बात से भी कि उनके आस-पास के बड़े उनकी जरूरतों पर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं।

प्री स्कूल से अलग आंगनबाड़ी का अनुभव

उन्होंने कहा कि लोग कभी-कभी पूछते थे कि क्या उनके बच्चे काफी कुछ सीख रहे हैं, खासकर इसलिए क्योंकि आंगनवाड़ी में उनका रोज का अनुभव किसी आम प्री-स्कूल से अलग हो सकता है, जिसकी उम्मीद माता-पिता करते हैं। क्योंकि लोग कहते हैं कि आपको उन्हें सिखाना चाहिए। वे यह नहीं सीख रहे हैं क्योंकि हर दिन जब वे आंगनवाड़ी जाते हैं, तो वे एक नया गाना सीखते हैं। और मैं सोचती हूं, क्या यह सामान्य है? क्योंकि मैं पहली बार मां बनी हूं। मुझे पता नहीं।

लद्दाख को लेकर आमने-सामने

चीन के बिगड़े सुर, भारत की दो टूक

नई दिल्ली : लद्दाख को लेकर चीन के बिगड़े बोल सामने आए हैं. चीन के विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत का कहना है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत के अभिन्न और अविभाज्य अंग हैं, जिसमें गिलगित-बाल्टिस्तान और अक्साई चिन भारत के अवैध कब्जे में हैं. भारत इस पूरे क्षेत्र को अपना मानता है. हमने लद्दाख को कभी मान्यता नहीं दी है. बीजिंग के इस बयान पर भारत ने पलटवार करते हुए साफ कहा कि लद्दाख देश का अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा है. चीन के बयान से यह तथ्य नहीं बदल सकता.



विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि यह बात फिर से दोहराई जाती है कि लद्दाख भारत का एक अभिन्न और अविभाज्य हिस्सा है. चीन के इनकार करने से यह स्थापित तथ्य बदल नहीं सकता. जहां तक भारत सरकार के गृह मंत्रालय की उस प्रेस विज्ञप्ति की बात है जिसका जिक्र किया जा रहा है तो वह अपने आप में स्पष्ट है.

उन्होंने कहा कि इस घोषणा में बताया गया है कि लद्दाख केंद्र-शासित प्रदेश में मौजूद २८ जगहों/विशेषताओं की पहचान 'सर्वे ऑफ़ इंडिया' के आधिकारिक नक्शे पर मानक नामों के साथ की गई है और यह काम लद्दाख केंद्र-शासित प्रदेश और स्थानीय हितधारकों के साथ सलाह-मशविरे के बाद किया गया है.

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि लद्दाख केंद्र-शासित प्रदेश के 'सर्वे ऑफ इंडिया' के नक्शे पर इन जगहों की औपचारिक रूप से पहचान करने का मकसद यह है कि लोग इन्हें सही ढंग से पहचान सकें और आम जनता में इनके बारे में बेहतर जानकारी हो.

दरअसल, चीन के विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि भारत का आधिकारिक और सुसंगत रुख है कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत के अभिन्न और अविभाज्य अंग हैं. इसमें वह क्षेत्र भी शामिल हैं जो वर्तमान में पाकिस्तान (गिलगित-बाल्टिस्तान आदि) या चीन (अक्साई चिन) के अवैध कब्जे में हैं. भारत ने इन्हें अवैध कब्जा करार दिया है और इस पूरे क्षेत्र को अपना मानता है.

चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने माओ निग ने बीजिंग में कहा, चीन ने भारतीय पक्ष द्वारा एकतरफा और गैर-कानूनी ढंग से बनाए गए तथाकथित लद्दाख केंद्र-शासित प्रदेश को कभी मान्यता नहीं दी है. वह भारतीय पक्ष द्वारा जगहों के तथाकथित 'स्टैंडर्ड नाम' जारी करने का कड़ा विरोध करता है.

दरअसल, बीजिंग में मंगलवार को चीन की विदेश मंत्रालय की प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रवक्ता माओ निग से भारत सरकार के एक फैसले के बारे में सवाल पूछा गया था. एक पत्रकार ने भारत सरकार ने इस महीने की शुरुआत में केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के २८ स्थानों और भौगोलिक विशेषताओं के नाम तय करने पर सवाल किया था, उसी के जवाब में उन्होंने ये बात कही.

भारतीय नक्शे पर लद्दाख में २८ रणनीतिक जगहों की पहचान

बता दें कि २ अक्टूबर को भारत ने आधिकारिक भारतीय नक्शे पर लद्दाख में २८ रणनीतिक जगहों और भौगोलिक विशेषताओं की पहचान की. इनमें एलएसी के पास तनाव वाले मुख्य इलाके जैसे गोगरा और हॉट स्प्रिग भी शामिल हैं. सरकार ने यह कदम लद्दाख प्रशासन से बातचीत करके उठाया है.

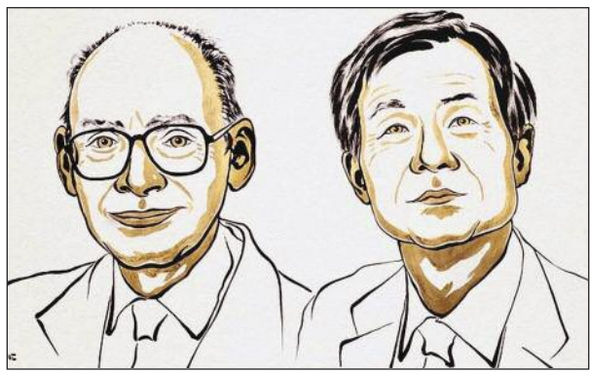
इसका मकसद आधिकारिक नक्शा बनाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना, जगहों की सटीक पहचान करना और संवेदनशील सीमावर्ती इलाके के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है. गोगरा और हॉट स्प्रिग अहम रणनीतिक जगहों में से हैं और २०२० में भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच हुए टकराव के दौरान ये तनाव वाले इलाके थे.

ये जगहें 'लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल' के पास भारतीय सेना की पेट्रोलिंग के लिए महत्वपूर्ण हैं. पूर्वी लद्दाख सीमा पर तनाव की शुरुआत ५ मई, २०२० को पैंगोंग झील इलाके में भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच हिंसक झड़प के बाद हुई थी. दोनों पक्षों ने २०२२ में सैनिकों को पीछे हटाने (डिसइंगेजमेंट) की प्रक्रिया शुरू की थी. भारत ने जिन दूसरी जगहों की पहचान की है, उनमें अलीशा गिरी, ब्रांगसा, चापचिंगल पास, कनिष्क पीक, करुण पीर पहाड़, कुकसेल, मार्तंड गिरी, पारपिक ग्लेशियर, स्कमरी ग्लेशियर, शचमीरिक पास, श्कोर्गा घाटी, ज़ोरावर पीक, डेहरा कंपास, ड्रैक कार्पो, जोल्मोरी, कुमारयाना पॉइंट, पांगलुंग, रिचेन ज़ांगपो, साक्याश्री गिरी, गुरु रिम्पोछे, शामल लुंगपा, यांगपा नदी, मारपा लोत्सावा री, मिलारेपा कांगरी, शिवा री और महेश्वरा री शामिल हैं. शामल लुंगपा को १९५० के दशक में पेट्रोलिंग और स्टेजिंग रूट के तौर पर बताया गया था.

हेनरी कागन और केंसो सोआई को मिला सम्मान

जीवन के रसायन का रहस्य सुलझाने वाले वैज्ञानिकों को केमिस्ट्री का नोबेल

नई दिल्ली : स्वीडन की रॉयल एकेडमी ने २०२६ का रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार दो वैज्ञानिकों को दिया है. फ्रांस के हेनरी बी. कागन और जापान के केंसो सोआई. उन्हें यह इनाम इसलिए मिला क्योंकि उन्होंने एक बहुत पुरानी पहेली का जवाब ढूंढ लिया. कुछ अणु दो तरह के होते हैं. एक बाएं हाथ जैसा, दूसरा दाएं हाथ जैसा. दोनों आईने में एक-दूसरे जैसे दिखते हैं. लेकिन हमारे शरीर में सिर्फ एक तरह का अणु काम करता है. दूसरा नहीं. वैज्ञानिक लंबे समय से सोचते थे कि प्रकृति ने सिर्फ एक को कैसे चुना. हमारे शरीर की हर चीज- खून, मांस, प्रोटीन - एक ही तरह के अणु से बनी है.



इसे वैज्ञानिक भाषा में होमोचिरैलिटी कहते हैं. मतलब एक ही हाथ वाला. अमीनो एसिड नाम के अणु प्रोटीन बनाते हैं. ये दो रूपों में होते हैं, लेकिन शरीर में सिर्फ एक रूप ही मिलता है. दूसरा रूप प्रकृति में बहुत कम दिखता है. जब वैज्ञानिक प्रयोगशाला में ये अणु बनाते तो दोनों रूप बराबर मात्रा में बन जाते. दवा बनाने वाले लोग परेशान थे क्योंकि दवा में सिर्फ एक रूप ही असर करता है. दूसरा रूप बेकार या नुकसानदायक हो सकता है. कागन-सोआई की खोज १९८६ में हेनरी कागन ने एक नया तरीका निकाला.

उन्होंने रसायन की प्रतिक्रिया को ऐसे चलाया कि एक रूप दूसरे से ज्यादा बनने लगा. पहले वैज्ञानिक सोचते थे कि दोनों हमेशा बराबर बनेंगे. कागन ने दिखाया कि छोटी सी शुरुआत भी बड़ा फर्क ला सकती है. इससे एक तरफा अणु बनाना आसान हो गया. केंसो सोआई ने १९९५ में एक खास प्रतिक्रिया बनाई. २००३ में उन्होंने सफलता पाई.

उन्होंने ऐसी प्रतिक्रिया चलाई जिसमें सिर्फ एक ही रूप बना. दूसरा बिल्कुल नहीं. जीवन के अलावा पहले कभी कोई यह नहीं कर पाया था. उनकी तरकीब में प्रतिक्रिया का नतीजा खुद मदद करता है. जैसे एक बीज से पौधा बढ़े और और बीज बनाए. इससे एक तरफा अणु अपने आप बढ़ते चले जाते हैं. दवा और आम जीवन पर फायदा नोबेल समिति ने कहा कि इन दोनों ने सदी पुरानी पहेली सुलझा दी. अब वैज्ञानिक दवा बनाते समय सही अणु चुन सकते हैं. कई दवाओं में गलत रूप शरीर में असर नहीं करता. सही रूप से दवा सस्ती और असरदार बनेगी. कैंसर, संक्रमण और दूसरी बीमारियों की दवाओं में यह काम आएगा.

यह खोज सिर्फ लैब की बात नहीं. यह बताती है कि प्रकृति ने जीवन की शुरुआत कैसे की होगी. छोटे से शुरू होकर एक तरफा रास्ता कैसे चुना गया. कागन और सोआई के काम से रसायनज्ञ अब बेहतर तरीके से अणु बना सकते हैं. आम आदमी के लिए इसका मतलब है- बेहतर और सुरक्षित दवाएं. विज्ञान की यह जीत रोजमर्रा की जिंदगी को आसान बनाएगी.

जब भारत में पहली एयरलाइन की शुरू हुई

१५ अक्टूबर, १९३२ को टाटा ग्रुप ने ही पहली बार भारत में एयर लाइन सर्विस की शुरुआत की. इस पहली एयरलाइन का नाम टाटा एयरलाइंस था. इसी दिन इसने कराची से मुंबई के लिए पहली उड़ान भरी थी. बाद में, इसका नाम बदलकर एयर इंडिया कर दिया गया. साल १९३२ में जेआरडी की अगुवाई में टाटा एविएशन सर्विस की शुरुआत हुई. उस समय विमानन क्षेत्र में यूरोपीय कंपनियों का दबदबा था. उसी साल जेआरडी ने कराची के ड्रीग रोड से आसमान में उड़ान भरी.



इस कंपनी का नाम पहले टाटा एयरलाइंस किया गया. बाद में इसका नाम बदलकर एयर इंडिया कर दिया गया. भारत में एविएशन सेक्टर में क्रांति लाने वाले शख्स के रूप में जेआरडी टाटा का अहम योगदान है. इनकी वजह से ही भारत को पहला एयरलाइन सर्विस शुरू करने में मदद मिली. जेआरडी टाटा ने टाटा समूह में करियर की शुरुआत एक एप्रेंटिस के रूप में की थी. जब जेआरडी महज २२ साल के थे, उनके पिता का निधन हो गया. इसके बाद जेआरडी को टाटा ग्रुप में जगह मिली.

जब वह १५ साल के थे, तभी उन्होंने फ्रांस में पहली बार प्लेन उड़ाया था. इस अनुभव ने जेआरडी के मन उड़ान के प्रति लगाव पैदा कर दिया. यही एयर इंडिया की शुरुआत का कारण बना. साल १९२९ में जेआरडी टाटा को कॉमर्शियल पायलट का लाइसेंस मिला और इस तरह वह ऐसा लाइसेंस पाने वाले पहले भारतीय बन गए.

साल १९३२ में जेआरडी टाटा की अगुवाई में टाटा एविएशन सर्विस की शुरुआत हुई. उस समय विमानन क्षेत्र में यूरोपीय कंपनियों का दबदबा था. उन्होंने पहली उड़ान कराची से भरी थी. बाद में इस कंपनी का नाम पहले टाटा एयरलाइंस किया गया और अंत में इसका नाम भी बदलकर एयर इंडिया कर दिया गया.

गुजरात में ऑटो चलाता मिला नॉर्वे का मेयर!

नई दिल्ली : इंटरनेट पर हर दिन सैकड़ों वीडियो वायरल होते रहते हैं. नॉर्वे का एक मेयर गुजरात में ऑटो चलाता मिला है. इसके साथ एक विदेशी शख्स था. इस वीडियो के वायरल होने के बाद कई लोग यह जानना चाहते हैं, आखिर भारत आकर नॉर्वे के मेयर ऑटो क्यों चलाएंगे? चलिए जानते हैं इस वायरल वीडियो की असलियत क्या है?

वीडियो में कथित नॉर्वे के मेयर के साथ एक और शख्स दिखाई देता है. फिर उनका ऑटो दिखाया जाता है. ऑटो बेहद चटख रंग से पेंट किया हुआ था. उसके पीछे लिखा था - शिकागो के स्कूटर चलाने वाले बदतमीज होते हैं. शख्स बताता है कि ये दोनों गुजरात में टुकटुक ऑटो लेकर घूम रहे हैं. ये लोग भारत घूमने आए हैं और इस तरह एक ऑटो लेकर उस पर गुजरात और पूरा इंडिया घूम रहे हैं.



इस वीडियो के कमेंट सेक्शन में इसे पोस्ट करने वाले यूजर ने लिखा है कि नॉर्वे से ६१ लोग भारत घूमने आए हैं और ३७ टुकटुक ऑटो लेकर घूम रहे हैं. इस वीडियो में विदेशी शख्स को नार्वे का मेयर होने का दावा की पुष्टि के लिए जब इंग हेस्जेविक नाम के बारे में इंटरनेट पर सर्च किया गया तो सच में इस शख्स की तस्वीर के साथ इन्हें नॉर्वे के पोर्सेजर शहर का मेयर बताया गया है.

नॉर्वे की hoyre.no नाम की एक वेबसाइट पर इंग हेस्जेविक के पूरे राजनीतिक करियर के बारे में डिटेल दिया गया है. उसमें साफ तौर पर लिखा हुआ है कि इंग हेस्जेविक वर्तमान में पोर्सेजर नगर निगम के मेयर हैं. वह फिनमार्क कंजर्वेटिव पार्टी से जुड़े हुए हैं और २०२० में वह पार्टी से संसदीय उम्मीदवार भी बने थे. फिर वह इसी पार्टी से २०२३ में मेयर चुने गए.

वीडियो में बताया गया है कि नॉर्वे के किसी शहर का मेयर इतनी सादगी से भारत आकर एक आम आदमी की तरह घूम रहा है. बिना लग्जरी कैब या शटल लिए, किराए पर ऑटो लेकर इनका ग्रुप खुद इसे चलाकर पूरा देश में जगह- जगह जा रहे हैं. इस वीडियो पर मेयर के साथ ऑटो में घूमने वाले एक साथी ओविड हेस्जेविक ने भी कमेंट किया है. उसने लिखा है कि आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई. जब उस शख्स के इंस्टा प्रोफाइल पर भारत में ई- रिक्शा और स्कूटी से घूमते हुए इन विदेशी मेहमानों के कई सारे फोटोग्राफ्स और वीडियो मिले. गुजरात के शख्स ने बताया की. कैसे इन इन विदेशी मेहमानों ने टुकटुक ऑटो लेकर वो गुजरात के अलग- अलग शहर, जैसलमेर और कोच्चि तक की यात्रा की है.

३०० साल पुरानी प्रतिमा को लेकर क्रेज

कबाड़ में पड़ी मूर्ति लाखों में होगी नीलाम

नई दिल्ली : कबाड़ में ३०० साल पुरानी मूर्ति सदियों से पड़ी थी. एक शख्स ने इसे सिर्फ ४०० डॉलर में खरीदा और फिर इसकी पूरी डिटेल निकाली. अब इसकी कीमत १० लाख रुपये से भी ज्यादा हो चुकी है और जल्द यह नीलाम की जाएगी.

कभी-कभी कबाड़ में पड़ी कोई पुरानी चीज ऐसी निकल आती है, जिसकी असली कीमत का अंदाजा उसे देखने वाले को भी नहीं होता. इंग्लैंड में ऐसा ही एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है. यहां एक कबाड़ और पुरानी चीजों के सामान वाले यार्ड में करीब ३०० साल पुरानी संगमरमर की मूर्ति मिली है. खास बात ये है कि इसे इटली के मशहूर मूर्तिकार पिएत्रो ब्राची ने बनाया था, जो रोम के प्रसिद्ध ट्रेवी फाउंटेन से भी जुड़े हुए थे. अब यही मूर्ति नीलामी में करीब ११ लाख रुपये तक की कीमत हासिल कर सकती है.

न्यूयॉर्क पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, यह मामला इंग्लैंड के विल्टशायर का है. यहां एक कलेक्टर की नजर एक पुराने सामान के यार्ड में रखी करीब २७ इंच ऊंची मूर्ति पर पड़ी. पहली नजर में यह सिर्फ एक पुरानी संगमरमर की मूर्ति जैसी लग रही थी, लेकिन जब इसके बारे में जांच की गई तो इसकी कहानी बेहद खास निकली.



यह मूर्ति पोप क्लेमेंट XII की है और इसे इतालवी मूर्तिकार पिएत्रो ब्राची ने बनाया था. माना जाता है कि यह मूर्ति १७३० के दशक में तैयार की गई थी. यानी यह करीब तीन सदियों पुरानी है.

ट्रेवी फाउंटेन से भी है कनेक्शन पिएत्रो ब्राची १८वीं सदी के रोम के बड़े मूर्तिकारों में गिने जाते थे. उनका नाम रोम के मशहूर ट्रेवी फाउंटेन से भी जुड़ा है. ऐसे में उनके हाथों से बनी किसी दुर्लभ मूर्ति का मिलना कला और इतिहास, दोनों लिहाज से बड़ी खोज मानी जा रही है. ब्राची को रोमन सीनेट ने पोप क्लेमेंट XII का कांस्य चित्र बनाने की जिम्मेदारी दी थी. यह पोप की ओर से कैपिटोलिन म्यूजियम को दिए गए योगदान की याद में बनाया जाना था.

४०० डॉलर में खरीदी, अब लाखों मिलने की उम्मीद सबसे दिलचस्प बात इस मूर्ति की कीमत को लेकर है. जिस मूर्ति को एक समय कबाड़ के यार्ड में रखा गया था, उसे शुरुआती तौर पर सिर्फ ४०० डॉलर यानी करीब ३५ हजार रुपये में खरीदा गया था. अब यही मूर्ति नीलामी में ६,६३५ से १३,२७० डॉलर यानी करीब ५.८ लाख से ११.७ लाख रुपये तक में बिकने का अनुमान है. इसकी नीलामी ८ अक्टूबर को होने वाली है.

एक्सपर्ट ने बताया बेहद खास खोज नीलामी कराने वाली संस्था वुली एंड विलिस के फर्नीचर विशेषज्ञ मार्क युआन रिचर्ड्स ने इस खोज को बेहद रोमांचक बताया है. उनके मुताबिक १८वीं सदी की इतनी दुर्लभ संगमरमर की मूर्ति का सामने आना अपने आप में बड़ी बात है. उन्होंने कहा कि पिएत्रो ब्राची १८वीं सदी के रोम के महान मूर्तिकारों में से एक थे. उनके काम से जुड़ी यह मूर्ति उस दौर के पोप दरबार और रोम की कला की दुनिया की झलक देती है. यानी जिस मूर्ति को लंबे समय तक एक कबाड़ यार्ड में पड़े पुराने सामान का हिस्सा समझा गया, वह असल में करीब ३०० साल पुरानी ऐतिहासिक धरोहर निकली.

४ राशि वालों को जल्द मिलेगी बड़ी कामयाबी

शनि-मंगल ने बनाया केंद्र योग

मंगल और शनि का केंद्र संबंध सामान्य तौर पर तनाव और रुकावट से जुड़ा माना जाता है. मंगल ऊर्जा और अग्नि का प्रतीक है. जबकि शनि ठहराव और अनुशासन से जुड़ा ग्रह है.

इस वक्त मंगल मिथुन राशि और शनि मीन राशि में विराजमान हैं. दोनों ग्रहों के बीच ९० डिग्री का कोण बना हुआ है. ज्योतिष शास्त्र में दो ग्रहों के बीच ऐसी स्थिति को दुर्लभ माना जाता है. मंगल-शनि के बीच ऐसी स्थिति तनाव और आक्रामकता को बढ़ावा देती है. हालांकि अगर कुंडली में मंगल और शनि की स्थिति मजबूत हो तो जातकों को शुभ फल की प्राप्ति भी हो सकती है. आइए जानते हैं कि शनि और मंगल के बीच बन रही ये दुर्लभ स्थिति किन राशियों को लाभ देने वाली है. मेष राशिः मंगल-शनि का यह संबंध मेष राशि वालों के लिए उनके अति-उत्साह को नियंत्रित करने वाला साबित हो सकता है. आमतौर पर जल्दबाजी में फैसले लेने की प्रवृत्ति नुकसान पहुंचा सकती है. लेकिन शनि का दबाव गति को अनुशासन में बदलने का काम करेगा. इससे आप अपने लक्ष्य पर ज्यादा केंद्रित रहेंगे और गलतियां कम करने की कोशिश करेंगे. इस प्रभाव का फायदा तुरंत मिलने के बजाय लंबे समय में ज्यादा दिखाई दे सकता है. वृश्चिक राशिः वृश्चिक राशि वालों के लिए यह योग इच्छाशक्ति को मजबूत करने वाला माना जा रहा है. लंबे समय से कोई काम अटका हुआ है तो उसे पूरा करने के लिए आप ज्यादा दृढ़ता दिखा सकते हैं. मेहनत और लगातार प्रयास आपके पक्ष में रहेंगे. खासतौर पर प्रॉपर्टी, जमीन या निर्माण से जुड़े कामों में लाभ मिलने के योग बन सकते हैं. मुश्किल परिस्थितियों में भी पीछे हटने के बजाय काम पूरा करने का रवैया मजबूत होगा.



मकर राशिः मकर राशि वालों के लिए मंगल और शनि का संबंध सहनशक्ति और कार्यकुशलता बढ़ाने वाला हो सकता है. विपरीत परिस्थितियों में भी आप घबराने के बजाए स्थिति का सामना करने की क्षमता विकसित कर सकते हैं. करियर में प्रतिस्पर्धा बढ़ने पर भी मेहनत और धैर्य आपका मजबूत पक्ष रहेगा. यही गुण आपको दूसरों से आगे निकलने और बड़ी सफलता हासिल करने में मदद कर सकते हैं. इस दौरान लगातार प्रयास बनाए रखना महत्वपूर्ण रहेगा. कुंभ राशिः कुंभ राशि वालों में इस प्रभाव से तकनीकी समझ, रिसर्च और कठिन फैसले लेने की क्षमता मजबूत हो सकती है. कामकाज में ऐसी परिस्थितियां सामने आ सकती हैं, जहां सामान्य तरीके से निर्णय लेना आसान न हो. ऐसे समय में आपकी विश्लेषण क्षमता और दृढ़ता काम आ सकती है. व्यापार में कोई बड़ा और जोखिम भरा फैसला अंततः लाभ देने वाला साबित हो सकता है. हालांकि, निर्णय लेते समय परिस्थितियों को समझना जरूरी रहेगा.

डेंगू में प्लेटलेट्स कम होने के अलावा क्या दिमाग भी होता है प्रभावित



डेंगू को आमतौर पर तेज बुखार, शरीर में दर्द और प्लेटलेट्स कम होने वाली बीमारी के रूप में जाना जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि गंभीर मामलों में डेंगू का असर दिमाग और नर्वस सिस्टम पर भी पड़ सकता है? कुछ मरीजों में भ्रम, बेहोशी, दौरे और मानसिक स्थिति में बदलाव जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। आखिर डेंगू किस तरह दिमाग को प्रभावित करता है और इसके लक्षणों को कैसे पहचानें? इस बारे में पीएसआरआई अस्पताल की वरिष्ठ सलाहकार, पल्मोनोलॉजी, क्रिटिकल केयर एंड स्लीप मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. नीतू जैन बता रही हैं कि डेंगू का दिमाग पर क्या असर पड़ सकता है और किन लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

डेंगू होने पर दिखते हैं ये लक्षण

डेंगू होने पर हैं कुछ मरीजों में दिमाग के काम करने के तरीके में बदलाव देखने को मिल सकता है। मरीज को भ्रम होना, बहुत ज्यादा नींद आना, बेचैनी, बेहोशी या दौरे पड़ना जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

हालांकि, हर डेंगू मरीज में ऐसा नहीं होता। यह समझना जरूरी है कि डेंगू में प्लेटलेट्स की संख्या कम होना ही बीमारी की गंभीरता का एकमात्र संकेत नहीं है। अगर मरीज को तेज सिरदर्द के साथ भ्रम, असामान्य व्यवहार, बार-बार उल्टी, दौरे या बेहोशी जैसे लक्षण दिखाई दें, तो उसे तुरंत अस्पताल ले जाना चाहिए। इन लक्षणों को सामान्य बुखार या कमजोरी समझकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

किन कारणों से ऐसा होता है?

डेंगू के दौरान दिमाग पर असर पड़ने के अलग-अलग कारण हो सकते हैं। कुछ मामलों में वायरस सीधे दिमाग को प्रभावित कर सकता है, जबकि गंभीर संक्रमण के कारण शरीर में होने वाले बदलाव, लिवर की गड़बड़ी, ब्लड शुगर का कम होना या शरीर में सोडियम जैसे इलेक्ट्रोलाइट्स का असंतुलन भी इसकी वजह बन सकता है। गंभीर मामलों में दिमाग तक खून की पर्याप्त आपूर्ति न होना भी एक कारण हो सकता है

क्या कहती हैं डॉक्टर?

डेंगू के मरीजों की नियमित निगरानी जरूरी है। डॉक्टर मरीज की चेतना के स्तर, ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर, प्लेटलेट्स और अन्य जरूरी जांचों के आधार पर इलाज तय करते हैं। समय पर पहचान और सही इलाज से गंभीर जटिलताओं का जोखिम कम किया जा सकता है।

दांतों की झनझनाहट को कैसे दूर करें

क्या घरेलू नुस्खे से इसे ठीक किया जा सकता है?

दांतों में झनझनाहट या संवेदनशीलता एक आम समस्या है। इसमें ठंडा, गर्म, मीठा या खट्टा खाने-पीने पर दांतों में अचानक तेज़ झनझनाहट या दर्द महसूस होता है। इसकी वजह से लोगों को खाने पीने में काफी दिक्कत होती है। कई लोग इसे आम समस्या समझकर इग्नोर कर देते हैं। लेकिन सही देखभाल और समय पर डेंटिस्ट की सलाह से इसे ठीक किया जा सकता है। वहीं कुछ लोग घरेलू नुस्खे अपनाकर इसे ठीक करना चाहते हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या इसे घरेलू नुस्खे के जरिए ठीक किया जा सकता है।

डॉ. राजीव अरोड़ा, दंत विज्ञान डॉक्टर, फोर्टिस एस्कॉर्ट्स हॉस्पिटल, फरीदाबाद बता रहे हैं इसके कारण और क्या इसे घरेलू उपाय से दूर किया जा सकता है या नहीं।

दांतों में झनझनाहट के प्रमुख कारण

- दांतों की बाहरी परत का घिसना।
- मसूड़ों का पीछे हटना, जिससे दांतों की जड़ें खुल जाती हैं।
- बहुत ज़ोर से ब्रश करना या कठोर ब्रश का इस्तेमाल।
- कैविटी, दांत में दरार या मसूड़ों की बीमारी।
- बार-बार खट्टे खाद्य पदार्थों और अम्लीय पेय पदार्थों का सेवन।

झनझनाहट दूर करने के घरेलू उपाय

सॉफ्ट ब्रश का इस्तेमाल करें : मुलायम ब्रिसल वाले ब्रश से हल्के हाथों से दिन में दो बार ब्रश करें।

संवेदनशील दांतों वाला टूथपेस्ट यूज़ करें : पोटैशियम नाइट्रेट या स्टैनस फ्लोराइड से भरपूर टूथपेस्ट नियमित रूप से इस्तेमाल करने से संवेदनशीलता कम हो सकती है।

बहुत गर्म या ठंडी चीज़ों से बचें : जब तक समस्या कम न हो, अत्यधिक गर्म, ठंडे, मीठे और खट्टे खाद्य पदार्थों का सेवन करने से बचें।

खट्टा खाने के बाद कुल्ला करें : अगर आपने कुछ खट्टी चीजों का सेवन किया है तो उसके बाद सादे पानी से कुल्ला करें। अम्लीय चीज़ें खाने के तुरंत बाद ब्रश न करें, लगभग ३०६० मिनट तक का गैप रखें।

फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट से ब्रश करें : इससे इनेमल मजबूत करने और दांतों में सड़न का खतरा घटाने में मदद मिलती है।

ध्यान दें : नमक, नींबू, कोयला या बेकिंग सोडा को दांतों पर रगड़ने से बचें। ये इनेमल को नुकसान पहुंचा सकते हैं। घरेलू उपाय लक्षण कम कर सकते हैं, लेकिन हर कारण का इलाज नहीं हैं।

डेंटिस्ट को कब दिखाएं?

यदि झनझनाहट लगातार बनी रहे, तेज़ दर्द हो, एक ही दांत में परेशानी हो, या सूजन और बुखार हो, तो डेंटिस्ट से जांच कराएं। कैविटी या दांत में दरार होने पर फिलिग अथवा अन्य उपचार की आवश्यकता हो सकती है।

क्या आप भी पेट फूलने की समस्या से हैं परेशान?

अगर खाना खाने के बाद पेट में गैस बनने लगती हैं और ब्लोटिग की समस्या होने लगती है तो इसके पीछे आपकी रोजाना की कुछ आदतें जिम्मेदार हो सकती हैं। गैस्ट्रॉलॉजिस्ट सौरभ सेठी कहते हैं कि लगातार पेट फूलने की परेशानी न केवल असहज महसूस कराती है, बल्कि आपके कामकाज को भी प्रभावित कर सकती है। ऐसे में वह बता रहे हैं कि किन आदतों से पेट फूलने की समस्या बढ़ सकती है और उनसे बचने के लिए क्या करना चाहिए।

ये आदतें हो सकती हैं ब्लोटिग के ज़िम्मेदार

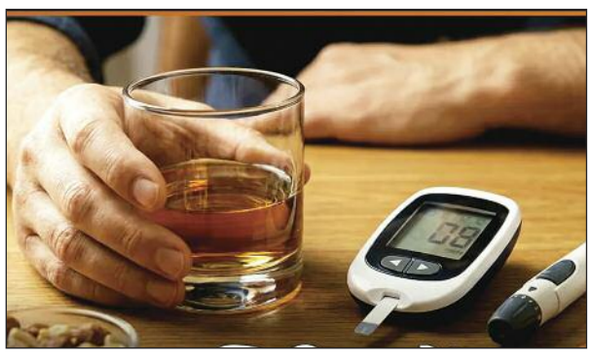
दिन भर शुगर-फ्री गम चबाना: कई शुगर-फ्री गम में सॉर्बिटोल होता है, जो एक प्रकार का शुगर अल्कोहल है। यह आपकी आंतों में पानी खींच सकता है और गैस व पेट फूलने का कारण बन सकता है। दो सप्ताह तक शुगर-फ्री गम और मिट खाना बंद करके देखें।

लैक्टोज इनटॉलरेंस होने पर दूध पीना: उम्र बढ़ने के साथ-साथ कई लोगों में लैक्टेज एंजाइम का प्रोडक्शन कम हो जाता है। बिना पचा हुआ लैक्टोज आंतों के बैक्टीरिया द्वारा फर्मेंट होकर गैस पैदा कर सकता है। इसलिए दो सप्ताह तक लैक्टोज-फ्री दूध पीकर देखें कि लक्षणों में सुधार होता है या नहीं।

भारी और ऑयली फूड्स का सेवन: बहुत ज़्यादा ऑयली फूड्स आंतों की गति और गैस को कंट्रोल करने की क्षमता को प्रभावित करके पेट फूलने की समस्या को बढ़ा सकते हैं, खासकर आईबीएस से पीड़ित लोगों में। इसलिए ज़्यादा ऑयली खाने से बचें और उसकी जगह ग्रिल्ड प्रोटीन और पकी हुई सब्जियां खाएं।

खाने के बाद बैठ जाना: अगर आप खाना खाने के बाद तुरंत बैठ जाते हैं तो यह भी ब्लोटिग की एक वजह हो सकती है।खाने के बाद १०-१५ मिनट तक चलने से पेट फूलना, डकार आना और पेट की तकलीफ में सुधार होता है इसलिए खाना खाने के बाद १०-१५ मिनट तक टहलें। कब्ज को नज़रअंदाज़ करना: डॉक्टर सौरभ शेट्टी कहती हैं कि कब्ज से पीड़ित २,२०३ मरीजों पर किए गए एक स्टडी में, लगभग ९२% ने पेट फूलने की शिकायत की। इसलिए कभी भी शौच की इच्छा को नज़रअंदाज़ न करें।

डायबिटीज के मरीजों को शराब पीनी चाहिए या नहीं?



शराब सेहत के लिए खतरनाक है, इसका सीधा असर लिवर पर पड़ता है। लंबे समय में शराब का सेवन फैटी लिवर से होते हुए लिवर सिरोसिस और फिर लिवर कैंसर का खतरा बढ़ाता है। एक आम स्वस्थ आदमी को भी शराब से सिर्फ और सिर्फ नुकसान ही होता है। लेकिन अगर आपको डायबिटीज जैसी बीमारी है तो शराब का सेवन पैंक्रियाज को भी नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे शरीर में इंसुलिन बनाने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या डायबिटीज के मरीजों को शराब पीनी चाहिए या नहीं, अगर पी रहे हैं तो कोई सुरक्षित सीमा है?

डायबिटीज में शराब पीना

लिवर स्पेशलिस्ट डॉक्टर शिव कुमार सरीन ने अपनी किताब ओन योर बॉडी में बताया है कि, हेल्थ चेकअप्स के लिए आए, ४० से ८० साल की आयु के ५०४,५४६ लोगों पर किए गए एक बड़े रिसर्च में पाया गया है कि लिवर कैंसर का हेपेटाइटिस-बी और सी के इन्फेक्शन से काफी संबंध होता है। यह पाया गया है कि शराब का २० गैलन प्रति वर्ष सेवन, ५०, ५०-५९, ६०-६९, ७०-८० साल की आयु के लोगों में कैंसर के खतरे को क्रमश: ६,८, १६ और ३० प्रतिशत बढ़ा सकता है।

डायबिटीज में शराब पीने से कैंसर का खतरा

दूसरे रिसर्च में भी पाया गया है कि जैसे 'हेल्थ २०००' और 'FINRISK १९९२-२०१२' में भाग लेने वाले लोगों के डेटाबेस से पता चलता है कि शराब के सेवन से हार्ट डिसीज का खतरा भले ही थोड़ा कम होता हो, लेकिन इसका संबंध इसके सेवन की डोज के हिसाब से एडवांस्ड लिवर डिसीज और कैंसर के खतरों से बराबर बना रहता है। वास्तव में, शराब का ही एक अंश, एसीटैल्डिहाइड, लिवर, मुंह की कैविटी, फूड पाइप, पेट, पैनक्रियाज, प्रोस्टेट और फोमेल ब्रेस्ट में कैंसर के खतरे को बढ़ाने का काम करता है। कहने का मतलब है कि डायबिटीज के रोगी को शराब से परहेज करना जरूरी है।

शराब की कोई सीमा नहीं

डॉक्टर सरीन ने साफ लिखा है कि डायबिटीज के रोगियों सहित किसी भी व्यक्ति के लिए शराब पीने की कोई सुरक्षित सीमा नहीं होती, लेकिन डायबिटीज के रोगियों के लिए शराब का नियमित सेवन घाव पर नमक छिड़कने जैसा होता है। इससे फैटी लिवर और लिवर फाइब्रोटिक की समस्याएं बढ़ सकती हैं। समय के साथ हेपेटाइटिस भी हो सकता है।

डायबिटीज के रोगियों के लिए खतरनाक है शराब

ऐसे में अगर आप शराब का सेवन करते हैं तो जान लें कि इससे ब्लड शुगर का स्तर भी प्रभावित हो सकता है। खासकर इंसुलिन या कुछ ऐसी दवाएं लेने वाले लोगों में शराब पीने से ब्लड शुगर खतरनाक स्तर तक कम होने यानी हाइपोग्लाइसीमिया का जोखिम बढ़ सकता है। यह स्थिति कई बार शराब पीने के कई घंटे बाद भी हो सकती है। इसलिए डायबिटीज के मरीजों को शराब से परहेज करना बेहतर है। अगर कोई व्यक्ति शराब पीता है, तो उसे अपनी दवाओं, ब्लड शुगर और लिवर की स्थिति को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए।

जानें इससे कैंसर का खतरा कितना बढ़ता है

रात में सोते समय सुन्न हो जाते हैं हाथ?

रात में सोते समय हाथों का सुन्न होना, झनझनाहट होना या सुईयां चुभने जैसा महसूस होना एक आम समस्या लग सकती है। कई बार हम सोचते हैं कि यह सिर्फ गलत पोजीशन में सोने के कारण हुआ है और इसे नजरअंदाज कर देते हैं। हर बार ऐसा होना शरीर के अंदर छिपी किसी गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है।

१. सोते समय हाथ सुन्न होने का मुख्य कारण क्या है?

जब हम सोते समय एक ही करवट में लंबे समय तक रहते हैं या हाथ को सिर के नीचे दबाकर सोते हैं, तो हाथ की नसों पर दबाव पड़ सकता है। इससे नसों के सामान्य कामकाज में अस्थायी रुकावट आती है और हाथ सुन्न महसूस होने लगता है। आमतौर पर हाथ की पोजीशन बदलने और कुछ देर हाथ हिलाने से यह परेशानी ठीक हो जाती है।

२. क्या यह सर्वाइकल या गर्दन की समस्या हो सकती है?

गर्दन की हड्डियों के बीच मौजूद डिस्क में बदलाव या नस पर दबाव पड़ने के कारण गर्दन से हाथ तक दर्द, झनझनाहट या सुन्नपन हो सकता है। यदि हाथ सुन्न होने के साथ गर्दन में दर्द, कंधे में खिचाव या उंगलियों में कमजोरी भी महसूस होती है, तो डॉक्टर से जांच करवाना जरूरी है।

३. क्या डायबिटीज के कारण भी हाथ सुन्न होते हैं?

डायबिटीज के कारण नसों को नुकसान पहुंच सकता है, जिसे डायबिटिक न्यूरोपैथी कहते हैं। इसके अलावा, कलाई में नस दबने की समस्या, जिसे कार्पल टनल सिंड्रोम कहते हैं, यह समस्या अक्सर अंगूठे, तर्जनी और मध्यमा उंगली में अधिक महसूस होती है।

४. हाथ सुन्न होने पर क्या करना चाहिए?

सोते समय हाथ को शरीर के नीचे दबाकर न रखें। गर्दन और हाथ को आरामदायक स्थिति में रखें। लंबे समय तक कोहनी मोड़कर सोने से बचें। यदि समस्या बार-बार होती है, तो न्यूरोलॉजिस्ट से परामर्श लें। डॉक्टर की सलाह के बिना दवाएँ या विटामिन सप्लीमेंट लेना शुरू न करें।

५. कब तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए?

यदि अचानक एक हाथ सुन्न होने के साथ चेहरे का एक हिस्सा टेढ़ा हो जाए, बोलने में परेशानी हो, हाथ-पैर में कमजोरी या संतुलन बिगड़ने लगे, तो यह स्ट्रोक के लक्षण हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। हाथ का सुन्नपन लगातार बना रहे या बार-बार हो, तो भी जांच करवाएं।

इन तीन चीजों में होता है बहुत ज़्यादा विटामिन सी

विटामिन C शरीर को स्वस्थ रखने, इम्यूनिटी को सपोर्ट करने और त्वचा की सेहत बनाए रखने में अहम भूमिका निभाता है। आमतौर पर जब भी विटामिन C की बात आती है, तो सबसे पहले नींबू का ख्याल आता है। लेकिन इनके अलावा भी कई ऐसी चीजें हैं, जिनमें भरपूर मात्रा में यह जरूरी पोषक तत्व पाया जाता है। साओल हार्ट सेंटर के संस्थापक और एमबीबीएस, एमडी डॉक्टर बिमल छाजेर ने अपने यूट्यूब वीडियो में बताया कि डाइट में विटामिन C शामिल करने के लिए किन चीजों का सेवन करना चाहिए। आइए जानते हैं कौन-सी हैं वे तीन चीजें और इन्हें खाने से सेहत को क्या फायदे मिल सकते हैं।

इन तीनों चीजों में होता है बहुत ज़्यादा विटामिन सी



सी बकथॉर्न : सी बकथॉर्न नारंगी फल के रूप में जाना जाता है इसमें विटामिन C भरपूर मात्रा में पाया जाता है। डॉक्टर कहते हैं कि सौ ग्राम सी बकथॉर्न में लगभग २०० मिलीग्राम से ९०० मिलीग्राम विटामिन C पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विटामिन E, कैरोटीनॉयड और फ्लेवोनोइड भी पाए जाते हैं। आप इसका सेवन जूस के रूप में कर सकते हैं।

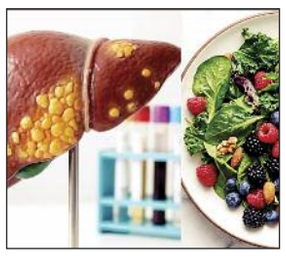
आंवला : जब भी बात विटामिन सी की आए तो आंवले का नाम सबसे पहले आता है। १०० ग्राम ताजे आंवले में लगभग ४७० से ६०० मिलीग्राम विटामिन C पाया जाता है। वहीं, आंवले में संतरे की तुलना में लगभग १० से २० गुना अधिक विटामिन C होता है। साथ ही इसमें पोलीफिनोल्स भी पाया जाता है। आप इसका सेवन, जूस के रूप में कर सकते हैं।

संतरा : १०० ग्राम संतरा में लगभग आपको ५० मिलीग्राम विटामिन C पाया जाता है। हालांकि, इसमें आंवला से कम विटामिन सी पाया जाता है।लेकिन अच्छी बता यह है कि आप संतरे का सेवन आसानी से कर सकते हैं जबकि आप आंवला नहीं खा सकते हैं।

विटामिन सी की कमी कैसे होगी पूरी?

अगर आप एक दिन में दो संतरा और एक आंवला खाते हैं तो एक दिन के विटामिन सी की मात्रा पूरी हो सकती है। इन दोनों को मिलाकर आपके शरीर को लगभग ४०० मिलीग्राम या उससे अधिक विटामिन सी प्राप्त होता है, जो आपकी पूरे दिन की जरूरत को आसानी से पूरा कर देता है

फैटी लिवर को कैसे कम करें



शरीर का सबसे बड़ा और मजबूत अंग हमारा लिवर होता है। लेकिन जब जरूरत से ज्यादा खराब चीजें लाइफस्टाइल में शामिल होने लगें तो लिवर की सेहत भी प्रभावित होने लगती है। इन दिनों महानगरों में रहने वाले लोगों में फैटी लिवर की समस्या सबसे ज्यादा होने लगी है। फैटी लिवर को आम बीमारी मानना खतरनाक है क्योंकि जैसे-जैसी इसकी स्टेज बढ़ती है ये लिवर को बीमार करने लगता है। गैस्ट्रॉलॉजिस्ट सौरभ सेठी के मुताबिक, ज्यादा शराब पीना, फैटी चीजें खाना और फिकिल एक्टिविटी नहीं करने से लिवर की सेहत पर भी असर पड़ता है। इससे लिवर टेस्ट कराने पर SGPT और GGPT बढ़ने और फैटी लिवर जैसी समस्याएं होने लगती हैं। ऐसे में अगर आप लिवर को हेल्दी रखना चाहते हैं तो खाने-पीने और लाइफस्टाइल से जुड़ी कुछ बातों का ख्याल जरूर रखें।

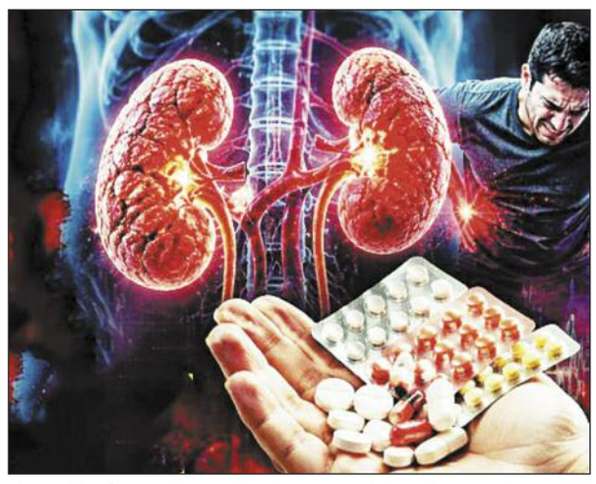
फाइबर वाली चीजें खाएं- लिवर के लिए फाइबर सबसे बेहतरीन काम करता है। डाइट में फाइबर रिच चीजें शामिल करें, इसके लिए खूब सारा सलाद खाएं। हाई फाइबर वाली चीजों से पेट हेल्दी रहता है और वजन कम होता है। इससे लिवर पर प्रेशर कम पड़ता है। सलाद खाने से बॉडी डिटॉक्स होती है और शरीर में जमा हो रहे टॉक्सिन बाहर निकल जाते हैं।

तेल मसाला कम खाएं- लिवर की सेहत पर ज्यादा तेल और मसालेदार खाने से बुरा असर पड़ता है। इसलिए रोजाना में कम ऑयली और डीप फ्राइड चीजें खाने से आपको बचना चाहिए। आप उबली हुई या फिर रोस्ट की गई चीजें खाएं। पूरी पराठा ज्यादा न खाएं और सब्जी पकाने में भी कम तेल का इस्तेमाल करें।

भरपूर पानी पीएं- लिवर फंक्शन को बेहतर बनाने के लिए दिनभर में कम से कम ८ गिलास पानी जरूर पीएं। शरीर में भरपूर पानी की मात्रा का होना जरूरी है। इससे बॉडी नेचुरली डिटॉक्स होती है और खराब पदार्थ टॉयलेट के जरिए शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

एक्सरसाइज करें- शरीर को स्वस्थ रखने में डाइट जितना अहम रोल प्ले करती है उससे कहीं ज्यादा आपका वर्कआउट जरूरी है। लिवर हो या कोई दूसरा अंग, फैट सबसे बड़ा दुश्मन है। लिवर को हेल्दी रखने के लिए रोजाना कोई न कोई फिटनेस एक्टिविटी जरूर करें। खाने के के बाद वॉक और रोज ४०-४५ मिनट की इंटेंस एक्सरसाइज जरूर करें।

दर्द की दवा खा-खाकर किडनी कर रहे खराब



सिर में दर्द हो या फिर शरीर के किसी दूसरे हिस्से में, कुछ लोगों को तुरंत पेन किलर खाने की आदत होती है. दर्द हुआ मेडिकल स्टोर गए और ले ली दवा, लेकिन ये आदत किडनी खराब कर रही है.अस्पतालों में ऐसे कई मरीज आ रहे हैं जिनकी किडनी पेन किलर खाने से खराब हो गई है. कुछ मामलों में ये किडनी फेल तक का कारण बन रही है.

ऐसे में डायलिसिस किया जा रहा है. दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में नेफ्रोलॉजी विभाग में डॉ. वैभव तिवारी ने इस बारे में Aajtak.in को बताया है. वह कहते हैं कि उनके पास ओपीडी में हर हफ्ते इस तरह के मरीज आते हैं जिनकी किडनी पेनकिलर खाने से खराब हुई है. ये ऐसे लोग हैं जो कई सालों से बिना डॉक्टर की सलाह के ये दवाएं ले रहे थे. कोई घुटने के दर्द के लिए तो कोई सिर या फिर पीठ दर्द के लिए इनको ले रहा था. चिंता की बात यह है कि ये किडनी में खराबी की ये समस्या ३० से ४० साल की उम्र वालों में भी देखी जा रही है. कई लोग ऐसे भी हैं जिनको सिर, पीठ या घुटनों में दर्द रहता ही है, लेकिन ये इसका इलाज नहीं कराते और बस रोज पेन किलर खा लेते हैं.

डॉ वैभव ने बताया कि शुरुआत में लोगों को यह नहीं पता चलता है कि पेन किलर का असर किडनी पर हो रहा है. इसके लक्षण धीर- धीरे और सालों बाद दिखते हैं. व्यक्ति के शरीर में प्रोटीन और क्रिएटिनिन की मात्रा कम या जरूरत से ज्यादा होने लगती है. इससे किडनी के फिल्टर प्रोसेस पर असर पड़ता है और किडनी धीरे-धीरे खराब होने लगती है. जब यूरिन करने में परेशानी, पीठ में लगातार दर्द, पैरों, टखनों के आसपास सूजन होने लगती है तो मरीज इलाज के लिए आता है. कुछ मामलों में मरीजों का डायलिसिस भी करना पड़ता है. दिल्ली के श्रीबालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टिट्यूट हॉस्पिटल में नेफ्रोलॉजी विभाग में डायरेक्टर डॉ. राजेश अग्रवाल बताते हैं कि उनके पास हर महीने करीब १० से १५ ऐसे मरीज आते हैं, जिनकी किडनी पर लंबे समय तक पेन किलर लेने का असर पड़ा होता है. इनमें ज्यादातर मरीज ऐसे होते हैं,जो सिरदर्द, कमर दर्द, घुटनों या जोड़ों के दर्द के लिए बिना डॉक्टर की सलाह के पेन किलर लेते रहते हैं. कई लोग दर्द होने पर मेडिकल स्टोर से दवा लेकर खुद ही खाना शुरू कर देते हैं और कई बार इसे लंबे समय तक जारी रखते हैं.

डॉ. राजेश बताते हैं कि पेन किलर लेने से तुरंत दर्द में राहत मिल जाती है, इसलिए मरीजों को लगता है कि यह सामान्य और सुरक्षित दवा है, लेकिन कुछ पेन किलर का लंबे समय तक या ज्यादा मात्रा में इस्तेमाल किडनी के लिए नुकसानदायक हो सकता है. इससे किडनी की काम करने की क्षमता कम हो सकती है और कुछ मामलों में किडनी अचानक भी कमजोर हो जाती है. इस बारे में डॉ. वैभव बताते हैं कि अधिक मात्रा में पेन किलर खाने से किडनी में ब्लड फ्लो कम होने लगता है और फिल्टरेशन यूनिट्स को नुकसान पहुंचता है. पेन किलर ज्यादा खाने से किडनी में खून की सप्लाई कम होना होती है. डॉ. वैभव बताते हैं कि हमारे शरीर में प्रोस्टाग्लैंडिन्स नाम के केमिकल्स होते हैं, जो किडनी की नसों को फैलाकर रखने में मदद करते हैं, ताकि किडनी में खून का बहाव सही बना रहे. पेन किलर दवाएं इन केमिकल्स को बनने से रोक देती हैं. इसके कारण नसें सिकुड़ जाती हैं और किडनी तक पर्याप्त खून नहीं पहुंच पाता, जिससे अचानक किडनी फेलियर का खतरा बढ़ जाता है. डॉ. वैभव कहते हैं कि महीने में कभी सिरदर्द या शरीर में दर्द हुआ तो एक दो बार पेन किलर ले सकते हैं. इससे नुकसान होने की आशंका कम रहती है, लेकिन अगर ये दवाएं लेना आपनी अपनी आदत बना ली है तो किडनी खराब होने का पूरा रिस्क है. ऐसे में जरूरी है कि शरीर के किसी हिस्से में दर्द रहता है तो खुद से दवाएं न लें. डॉक्टर से सलाह लेकर सही इलाज कराएं.

डिस्क्लेमर : यह लेख केवल सामान्य जानकारी के लिए है। यह किसी भी तरह से किसी दवा या इलाज का विकल्प नहीं हो सकता। ज्यादा जानकारी के लिए हमेशा अपने डॉक्टर से संपर्क करें।

हरमनप्रीत कौर ने छोड़ी महिला क्रिकेट टीम की कमान

कप्तानी छोड़ हरमन कह गईं मन की बात

नई दिल्ली : कप्तानी छोड़ते वक्त खिलाड़ी आमतौर पर शुक्रिया कहता है, टीम को शुभकामनाएं देता है और अपने सफर को याद करता है. हरमनप्रीत कौर ने भी यही किया. साथी खिलाड़ियों, कोच, सपोर्ट स्टाफ, बीसीसीआई, परिवार और प्रशंसकों का शुक्रिया अदा किया. भारतीय महिला क्रिकेट की कप्तानी को सम्मान बताया और टीम के भविष्य पर भरोसा जताया.

उन्होंने यह नहीं कहा कि वह नाराज हैं. यह भी नहीं कहा कि उन पर दबाव था. किसी फैसले से ठेस पहुंचने की बात भी नहीं कही. लेकिन जिन शब्दों का उन्होंने इस्तेमाल किया, वे उनकी कप्तानी के आखिरी दौर की एक अलग तस्वीर जरूर दिखाते हैं.

खून, पसीना, समय, अपना खेल, निजी महत्वाकांक्षाएं, मुश्किल फैसले और उनकी व्यक्तिगत कीमत... इन शब्दों को एक साथ रखिए तो कहानी सिर्फ कप्तानी छोड़ने की नहीं रह जाती.

हरमनप्रीत के बयान की सबसे अहम बात शायद यही है. उन्होंने कहा कि भारतीय टीम और महिला



क्रिकेट के लिए उन्होंने अपना खून, पसीना और समय दिया और कई बार अपने खेल और निजी महत्वाकांक्षाओं का एक हिस्सा भी पीछे रखा. एक खिलाड़ी के लिए इससे ज्यादा निजी स्वीकारोक्ति क्या हो सकती है?

हरमनप्रीत भारत की प्रमुख बल्लेबाज रही हैं. लेकिन कप्तान बनने के बाद उन्हें सिर्फ अपनी बल्लेबाजी नहीं देखनी थी. टीम का संतुलन, युवा खिलाड़ियों को मौका, रणनीति और हर फैसले की जिम्मेदारी भी उनके हिस्से आई.

यानी एक तरफ खिलाड़ी हरमनप्रीत थीं, दूसरी तरफ कप्तान हरमनप्रीत. और उनके बयान से लगता है कि कई मौकों पर कप्तान ने खिलाड़ी पर जीत हासिल की.

मुश्किल फैसलों की व्यक्तिगत कीमत

हरमनप्रीत का कप्तानी रिकॉर्ड मजबूत है. टी२० इंटरनेशनल में उन्होंने १५५ मैचों में भारत की कप्तानी की, जिसमें ९२ जीत मिलीं. वनडे में ५१ मैचों में ३० जीत और टेस्ट में ५ मैचों में ४ जीत उनके नाम हैं. लेकिन कप्तानी का असली रिकॉर्ड सिर्फ इन आंकड़ों में नहीं है.

हरमनप्रीत का कप्तानी छोड़ने का ऐलान बीसीसीआई की रिव्यू मीटिंग के बाद आया. बैठक में टीम के हालिया प्रदर्शन और आगे की रणनीति पर चर्चा हुई. बैठक हुई. कप्तानी पर चर्चा हुई. और उसके बाद हरमनप्रीत ने तीनों फॉर्मेट की कप्तानी छोड़ दी.

अब सिर्फ प्यार के लिए खेलना

शायद उनके बयान की सबसे गहरी लाइन आखिर में आती है. कप्तानी छोड़ने के बाद हरमनप्रीत ने कहा कि अब वह फिर से सिर्फ खेल के प्यार के लिए खेलने को तैयार हैं. इस पूरे मामले को 'नाराज कप्तान' की कहानी बना देना भी ठीक नहीं होगा. हरमनप्रीत ने शिकायत नहीं की. किसी पर आरोप नहीं लगाया. बीसीसीआई पर सवाल नहीं उठाया. अपने उत्तराधिकारी को लेकर भी कोई टिप्पणी नहीं की.

घरेलू क्रिकेट में दम दिखाने वाले शमी की अनदेखी पर उठे सवाल

फॉर्म में शमी, फिर टीम से बाहर क्यों?

नई दिल्ली : न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे और टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का सेलेक्शन होते ही मोहम्मद शमी की गैरमौजूदगी एक बार फिर चर्चा में आ गई है. चोट से जूझ रहे ऋषभ पंत को टेस्ट टीम में शामिल किया गया है, जबकि प्रसिद्ध कृष्णा का चयन भी फिटनेस क्लीयरेंस पर निर्भर है. ऐसे में सवाल उठता है कि भारतीय टीम को कई बड़े मुकाबलों में अपनी गेंदबाजी से जीत दिलाने वाले शमी को आखिर मौका क्यों नहीं मिल रहा?

भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच टी२० और ५ वनडे मुकाबलों के अलावा दो मैचों की टेस्ट सीरीज भी खेलनी है. पहला टेस्ट १९ नवंबर से वेलिंगटन में शुरू होगा. इस टेस्ट सीरीज के लिए जसप्रीत बुमराह की वापसी हुई है, जबकि आकाश दीप और अंशुल कम्बोज को भी तेज गेंदबाजी विभाग में जगह दी गई है.

मोहम्मद सिराज और नीतीश कुमार रेड्डी भी टीम का हिस्सा हैं. लेकिन शमी का नाम न होना चयन को लेकर चर्चा की बड़ी वजह बन गया है. शमी ने लगातार घरेलू क्रिकेट में अपने प्रदर्शन से सुर्खियां बटोरी हैं. रणजी ट्रॉफी २०२६-२७ में बंगाल की ओर से दिल्ली के खिलाफ मुकाबले में शमी ने ५ विकेट लेकर अपनी फॉर्म दिखाई थी.

चोट से जूझते रहे हैं पंत और प्रसिद्ध

ऋषभ पंत को ईरानी कप के दौरान साइड स्ट्रेन की समस्या हुई थी. रेस्ट ऑफ इंडिया की कप्तानी करते हुए पहली पारी में स्वीप शॉट खेलने के दौरान उन्हें चोट लगी थी. इसके बाद वह न्यूजीलैंड-ए के खिलाफ शुरुआती दो अनऑफिशियल टेस्ट मैचों से बाहर हो गए. इसके बावजूद चयनकर्ताओं ने उन्हें टेस्ट टीम में बनाए रखा है. हालांकि, उनकी उपलब्धता फिटनेस क्लीयरेंस पर निर्भर करेगी.

पंत के ७ से १० नवंबर तक लिकन में होने वाले तीसरे अनऑफिशियल टेस्ट में खेलने की संभावना है. शुभमन गिल, केएल राहुल और अंशुल कंबोज के भी इस मुकाबले में उतरने की उम्मीद है. यह मैच टेस्ट सीरीज से पहले खिलाड़ियों को लय हासिल करने का मौका दे सकता है.

प्रसिद्ध कृष्णा को भी टेस्ट टीम में जगह मिली है, लेकिन उनके खेलने पर फिटनेस की शर्त लागू है. प्रसिद्ध को लेफ्ट हैमस्ट्रिंग में खिचाव सामने आया था. राहत की बात यह रही कि स्कैन में मांसपेशियों के फटने की पुष्टि नहीं



हुई. वह पिछले दो सप्ताह से रिकवरी, स्ट्रेंथ और कंडीशनिग तथा मोबिलिटी ड्रिल्स पर काम कर रहे हैं. प्रसिद्ध को न्यूजीलैंड के खिलाफ वनडे टीम में भी चुना गया है, लेकिन केवल शुरुआती तीन मैचों के लिए.

फॉर्म में शमी, फिर क्यों हो रहे इग्नोर?

मोहम्मद शमी का टेस्ट टीम में चयन नहीं होना सबसे बड़ा सवाल है. अनुभवी तेज गेंदबाज ने भारतीय क्रिकेट में कई अहम मौकों पर अपनी उपयोगिता साबित की है, लेकिन न्यूजीलैंड दौरे के लिए चुने गए तेज गेंदबाजों में उनका नाम नहीं है. हालांकि, उपलब्ध जानकारी में चयनकर्ताओं ने शमी को बाहर रखने की वजह स्पष्ट नहीं की है.

इसलिए उनकी गैरमौजूदगी को किसी खास चोट, फिटनेस समस्या या प्रदर्शन से जोड़ना सही नहीं होगा. फिलहाल इतना साफ है कि टीम मैनेजमेंट ने तेज गेंदबाजी के लिए जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप, प्रसिद्ध कृष्णा और अंशुल कम्बोज जैसे विकल्पों पर भरोसा जताया है. नीतीश कुमार रेड्डी भी गेंदबाजी में अतिरिक्त विकल्प देंगे.

आकाश दीप ने ईरानी कप में अच्छा प्रदर्शन कर टीम में वापसी की है, जबकि अंशुल कम्बोज को भी टेस्ट टीम में शामिल किया गया है. ऐसे में शमी को मौका नहीं मिलने पर उठ रहे सवालों का जवाब चयनकर्ताओं की ओर से आधिकारिक स्पष्टीकरण आने के बाद ही मिल सकेगा. जसप्रीत बुमराह नवंबर २०२५ के बाद पहली बार टेस्ट क्रिकेट में उतर सकते हैं. टीम मैनेजमेंट उनके वर्कलोड को नियंत्रित रखना चाहता है, ताकि वह अगले साल घरेलू मैदान पर होने वाली बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी और २०२७ वनडे वर्ल्ड कप के लिए फिट रहें. स्पिन विभाग में कुलदीप यादव के साथ रवींद्र जडेजा और वॉशिंगटन सुंदर को चुना गया है. वहीं, साई सुदर्शन की भी टेस्ट टीम में वापसी हुई है.

बारिश के चलते भारत-वेस्टइंडीज के बीच ५वां T-२० रद्द

मैच धुला, सीरीज टाई

नई दिल्ली : बेंगलुरु में बारिश ने भारत और वेस्टइंडीज के बीच वप्रें टी२० मुकाबले पर पानी फेर दिया. ईशान किशन की १० गेंदों में ३० रन की तूफानी पारी के बावजूद मैच रद्द हो गया. पांच मैचों की सीरीज २-२ से बराबर रही.

बेंगलुरु के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में भारत और वेस्टइंडीज के बीच ५वां और आखिरी टी२० मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया. बारिश की वजह यह मैच सिर्फ ९-९ ओवर का कर दिया गया था, जिसमें टीम इंडिया पहले बल्लेबाजी कर रही थी. भारतीय बल्लेबाजों ने तूफानी अंदाज में रन बनाए लेकिन बारिश ने खेल पर पानी फेर दिया. इसके साथ ही ५ मैचों की सीरीज २-२ की बराबरी पर खत्म हुई.

पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत थोड़ी धीमी रही. सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा सस्ते में पवेलियन लौट गए. इसके बाद मैदान पर ईशान किशन का तूफान देखने को मिला.

ईशान ने महज १० गेंदों में ३० रनों की आतिशी पारी खेलकर कैरेबियाई गेंदबाजों को जमकर धोया. कप्तान श्रेयस अय्यर ने भी २२ रनों का योगदान दिया,

आईपीएल २०२७ के लिए टीम ने कसी कमर

दिल्ली कैपिटल्स में वास की एंट्री

नई दिल्ली : दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल २०२७ की तैयारियों को धार देना शुरू कर दिया है. टीम ने श्रीलंका के पूर्व तेज गेंदबाज चामिंडा वास को अपना फास्ट बॉलिंग कोच नियुक्त किया है. फ्रेंचाइजी ने इससे पहले सौरव गांगुली को हेड कोच और युवराज सिंह को असिस्टेंट कोच एवं बल्लेबाजी से जुड़ी जिम्मेदारी सौंपी थी. नए कोचिंग सेटअप के साथ दिल्ली कैपिटल्स की नजरें अब अपने प्रदर्शन में सुधार करने और पहली बार आईपीएल खिताब जीतने पर होगी.

चामिडा वास अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के अनुभवी गेंदबाजों में गिने जाते हैं. उन्होंने १११ टेस्ट मैचों में ३५५ विकेट और ३२२ ओडीआई मुकाबलों में ४०० विकेट हासिल किए. जबकि ६ टी२० इंटरनेशनल मैचों में उन्होंने ६ विकेट झटके. इस तरह उनके नाम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुल ७६१ विकेट दर्ज हैं. वह १९९६ में विश्व कप जीतने वाली श्रीलंकाई टीम का भी हिस्सा थे. वास ने आईपीएल के शुरुआती तीन सीजन में डेक्कन चार्जर्स का प्रतिनिधित्व किया. इस दौरान उन्होंने १३ मैचों में १९.७२ की औसत से १८ विकेट हासिल किए.

अब चामिडा वास की १६ साल बाद आईपीएल में वापसी हुई है. उनके अनुभव से दिल्ली के गेंदबाजों को फायदा मिलने की उम्मीद है. वास इससे पहले श्रीलंका की राष्ट्रीय टीम के साथ काम कर चुके हैं. इसके अलावा वह २०१६ के टी२० विश्व कप के दौरान आयरलैंड के गेंदबाजी कोच रहे और न्यूजीलैंड के गेंदबाजों के साथ भी सलाहकार के तौर पर काम किया.

गांगुली २०१९ में भी फ्रेंचाइजी से जुड़े रहे थे

दिल्ली कैपिटल्स ने ६ अक्टूबर को सौरव गांगुली को हेड कोच नियुक्त किया था. गांगुली इससे पहले २०१९ में भी फ्रेंचाइजी से जुड़े रहे थे. हालांकि, आईपीएल में मुख्य कोच के तौर पर यह उनकी पहली जिम्मेदारी होगी. वह साउथ अफ्रीका की SA२० लीग में प्रिटोरिया कैपिटल्स के साथ काम कर चुके हैं. इसके बाद १३ अक्टूबर को युवराज सिंह को टीम के कोचिंग स्टाफ में शामिल किया गया. यह उनकी पहली औपचारिक कोचिंग भूमिका है.



ब्यूनस आयर्स में अर्जेंटीना के लिए अपने आखिरी मुकाबले में लियोनेल मेसी ने यादगार अंदाज में विदाई ली. बेनिन के खिलाफ दोस्ताना मैच में पेनल्टी पर अपना तीसरा गोल दागने के बाद मेसी ने जश्न मनाया.

डिविलियर्स ने बताया कोहली से पहली मुलाकात का किस्सा



पहले घमंडी लगते थे विराट

नई दिल्ली : आईपीएल की सबसे बड़ी खूबसूरती यही है कि इसमें अलग-अलग देशों के खिलाड़ी आपस में मिलकर एक टीम के लिए खेलते हैं. ऐसे में कई साल साथ खेलने वाले इन खिलाड़ियों के बीच बॉन्ड भी जबरदस्त बन जाता है.

आईपीएल में कई ऐसे खिलाड़ी हैं जिनकी दोस्ती काफी पॉपुलर रही हैं. लेकिन इस लिस्ट में सबसे टॉप पर विराट कोहली और एबी डिविलियर्स का नाम आता है. रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के लिए इन दोनों ही खिलाड़ियों ने कई मैच विनिग पारियां खेली हैं.

एक ही टीम के लिए साथ खेलते-खेलते विराट कोहली और डिविलियर्स मैदान के बाहर भी पक्के दोस्त बन गए. लेकिन क्या आप जानते हैं कि जब डिविलियर्स ने पहली बार विराट कोहली को देखा था तो उनकी सोच कोहली को लेकर बिल्कुल अलग थी.

घमंडी लगते थे कोहली

हाल ही में एक पॉडकास्ट में एबी डिविलियर्स ने खुलकर बताया कि शुरुआती दिनों में उन्हें विराट कोहली बेहद घमंडी और मगरूर लगते थे. प्रखर गुप्ता के साथ एक पॉडकास्ट में बातचीत के दौरान जब डिविलियर्स से उनके पहले इंप्रेशन के बारे में पूछा गया तो उन्होंने हंसते हुए स्वीकार किया कि हां, और मुझे लगता है कि इस बात से विराट भी सहमत होंगे.

डिविलियर्स ने साफ किया कि उनका यह बयान पूरी तरह से गंभीर नहीं है. उन्होंने मजाकिए अंदाज में यह बात कही थी. उन्होंने समझाया कि १९, २० या २१ साल की उम्र में विराट के अंदर कूट-कूट कर आत्मविश्वास भरा हुआ था.

विराट कोहली के इसी आत्मविश्वास को लोग अक्सर गलत समझ लेते थे. डिविलियर्स के मुताबिक उस उम्र में टॉप लेवल पर सफलता हासिल करने के लिए ऐसा खुद पर भरोसा होना बेहद जरूरी भी होता है.

एबी डिविलियर्स ने यह भी बताया कि जैसे-जैसे विराट उम्र में बड़े हुए और एक खिलाड़ी व इंसान के रूप में परिपक्व हुए, उनके स्वभाव में काफी बदलाव आया. शुरुआती दिनों में विराट के पास साबित करने के लिए बहुत कुछ था, जिसके चलते उनका रवैया थोड़ा ज्यादा आक्रामक और ओवर-कॉन्फिडेंट नजर आता था.

अन्वय ने गुजरात के खिलाफ की धुंआधार बैटिंग



विजयनगरम : राहुल द्रविड़ के छोटे बेटे अन्वय अंडर-१९ क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं. अब गुजरात के खिलाफ शतक जड़कर अन्वय ने कर्नाटक को नॉकआउट में पहुंचाने में अहम योगदान दिया है. उनकी मौजूदा फॉर्म टीम की आगे की राह में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है.

टीम इंडिया के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ को उनकी तकनीक और धैर्य के लिए जाना जाता है, लेकिन उनके छोटे बेटे अन्वय द्रविड़ ने अपने आक्रामक अंदाज से अलग पहचान बनानी शुरू कर दी है. वीनू मांकड़ ट्रॉफी में १७ वर्षीय अन्वय ने गुजरात के खिलाफ १०० गेंदों पर १५१ रनों की तूफानी पारी खेली. उनकी इस शानदार बल्लेबाजी के दम पर कर्नाटक अंडर-१९ टीम ने पांच विकेट से जीत दर्ज की और नॉकआउट में जगह पक्की कर ली. विजयनगरम के विज्जी स्टेडियम में १६ अक्टूबर हुए इस मुकाबले में गुजरात ने टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए ५० ओवर में चार विकेट पर ३५७ रन बनाए थे. VJD नियम के तहत कर्नाटक को ३५२ रनों का संशोधित लक्ष्य मिला. इतने बड़े लक्ष्य का पीछा करते हुए अन्वय ने दबाव को खुद पर हावी नहीं होने दिया और ध्रुव कृष्णन के साथ मिलकर मुकाबले की तस्वीर बदल दी.

ध्रुव ने भी जड़ा तूफानी शतक

अन्वय द्रविड़ और ध्रुव कृष्णन ने तीसरे विकेट के लिए २०३ रन जोड़ दिए. अन्वय ने अपनी पारी में २० चौके और तीन छक्के लगाए, जबकि ध्रुव ने १०० गेंदों पर १३१ रन बनाकर उनका बखूबी साथ दिया. इस साझेदारी ने गुजरात के बड़े स्कोर को चुनौती देने के साथ कर्नाटक की जीत की राह खोल दी. दोनों बल्लेबाजों ने जरूरत के मुताबिक तेजी से रन बनाए और लक्ष्य का पीछा करते हुए टीम को मजबूत स्थिति में पहुंचा दिया.इससे पहले गुजरात की पारी में समीर भंडारी और यश पंजवानी ने शतक जड़कर कर्नाटक के गेंदबाजों को मुश्किल में डाल दिया था. समीर ने ८८ गेंदों पर नाबाद ११९ रन बनाए, जबकि यश ने सिर्फ ५७ गेंदों में नाबाद १०६ रन ठोक दिए. गुजरात का स्कोर ३०.३ ओवर में चार विकेट पर १४० रन था. इसके बाद दोनों ने पांचवें विकेट के लिए महज १९ ओवर में २१७ रनों की नाबाद साझेदारी की और टीम को ३५७ तक पहुंचाया. हालांकि, अन्वय और ध्रुव की शानदार बल्लेबाजी ने गुजरात की मेहनत पर पानी फेर दिया.

शानदार फॉर्म में चल रहे अन्वय

अन्वय द्रविड़ का वीनू मांकड़ ट्रॉफी के मौजूदा सीजन में यह दूसरा शतक है. इससे पहले उन्होंने चंडीगढ़ के खिलाफ ६२ गेंदों पर १०४ रन बनाए थे. उस मुकाबले में कर्नाटक ने १०० रनों से जीत हासिल की थी. दिल्ली के खिलाफ भी अन्वय ने महज ४१ बॉल पर ८५ रन बनाकर अपनी आक्रामक बल्लेबाजी का नमूना पेश किया था. उस मैच में कर्नाटक ने चार विकेट पर ४१८ रन का विशाल स्कोर बनाया था.

गुजरात के खिलाफ उनकी १५१ रनों की पारी ने एक बार फिर साबित किया कि वह बड़े लक्ष्य का पीछा करने में भी अहम भूमिका निभा सकते हैं. कर्नाटक की कप्तानी करने के साथ अन्वय विकेटकीपिग की जिम्मेदारी भी संभालते हैं. इतनी कम उम्र में मैदान पर कई जिम्मेदारियां निभाते हुए उनका लगातार प्रभावशाली प्रदर्शन करना टीम के लिए अहम है. अन्वय द्रविड़ भारत की अंडर-१९ टीम के लिए भी खेल चुके हैं. जुलाई में श्रीलंका दौरे पर यूथ वनडे सीरीज के दूसरे मैच में उन्होंने ६७ गेंदों पर ८७ रन बनाए थे. इस दौरान उन्होंने नौ चौके के अलावा एक छक्का लगाया था. सितंबर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ उन्होंने सिर्फ १८ गेंदों पर ३८ रन बनाए. इस पारी में तीन छक्के और दो चौके शामिल थे. भारत ने वह मैच सात रनों से जीता था.

९वें ओवर में ही जीत लिया मैच

विमेंस एशिया कप: भारत के सामने पाकिस्तान पस्त

दुबई : महिला एशिया कप २०२६ के हाई-वोल्टेज मुकाबले में भारत ने पाकिस्तान को ७ विकेट से हरा दिया. कप्तान हरमनप्रीत कौर ने वर्ें ओवर में छक्का जड़ते हुए टीम को एक आसान सी जीत दिला दी. भारतीय गेंदबाजों ने पाकिस्तान टीम की हवा निकाल दी. दुबई में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तानी टीम भारतीय फिरकी के आगे घुटने टेकने पर मजबूर हो गई. पाकिस्तान १८.१ ओवर में महज ५५ रनों पर सिमट गई. यह महिला टी२० इतिहास में पाकिस्तान का अब तक का सबसे कम स्कोर है. पाकिस्तान की बल्लेबाजी इस कदर लाचार दिखी कि उनके चार बल्लेबाज बिना खाता खोले पवेलियन लौटे और केवल दो ही दहाई का आंकड़ा छू सकीं. टीम के लिए शावल जुलफिकर ने सबसे ज्यादा १४ और मुनीबा अली ने १३



रन बनाए. भारत की इस शानदार गेंदबाजी की अगुआई स्पिनर श्री चरणी और प्रेमा रावत ने की. दोनों ही गेंदबाजों ने पाकिस्तान की लय बिगाड़ते हुए ३-३ बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया. उनका साथ निभाते हुए दीप्ति शर्मा ने २ विकेट चटकाए, जबकि शेफाली वर्मा को भी १ सफलता मिली.

हालांकि फील्डिग के दौरान भारतीय खिलाड़ियों से कैच छूटने और मिसफील्ड की कुछ गफलत जरूर हुई, लेकिन पाकिस्तान का प्रदर्शन इतना निराशाजनक था कि भारत की इन गलतियों का मैच पर कोई असर नहीं पड़ा.

शेफाली वर्मा ने बनाया रिकॉर्ड

५६ रनों के आसान लक्ष्य का पीछा करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत बेहद आक्रामक रही. सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने पहली ही गेंद पर शानदार छक्का जड़कर अपनी छाप छोड़ी. इसके साथ ही वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपने ३००० रन भी पूरे कर लिए. हालांकि, वह अगले ही ओवर में फातिमा सना की गेंद पर १२ रन बनाकर आउट हो गईं, इसके बाद प्रतीका रावल भी ४ रन बनाकर आउट हो गई.

एशियाई खेलों में कमलजीत और सुरुचि सिंह ने मिश्रित टीम १० मीटर एयर पिस्टल में जीता स्वर्ण, राष्ट्रपति ने दी बधाई

नई दिल्ली : एशियाई खेलों में भारत के कमलजीत और सुरुचि सिंह ने जापान के नागोया में आज मिश्रित टीम १० मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। भारतीय जोड़ी ने फाइनल में ४८४.६ अंक हासिल किए और दक्षिण कोरिया की सुह्योन होंग और गाउन चू की जोड़ी से ६.६ अंक आगे रही। दक्षिण कोरिया को रजत और ईरान को कांस्य पदक मिला।

कमलजीत और सुरुचि ने क्वालिफिकेशन में ५८७ अंक के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया था, जिसमें २९ इनर-१० शामिल थे। वहीं, पुरुषों की ५० मीटर राइफल थ्री पोजिशन टीम स्पर्धा में रुद्रांक्ष पाटिल, ऐश्वर्य प्रताप तोमर और नीरज कुमार की भारतीय टीम ने रजत पदक जीता।

स्वत्वाधिकार लोकमिरर पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड हेतु, प्रकाशक, **मुद्रक एवं संपादक : विशाल दुबे** द्वारा अरुणोदय प्रेस, कॉटन मार्केट, नागपूर - 440018 से मद्रित कर, लोकमिरर पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड C/o. कौशल्याबाई वानखेडे, प्लॉट नं. 177, A/G, योगी अरविन्द नगर, कामठी रोड, नागपूर - 440026 से प्रकाशित। **संपादक : विशाल दुबे,** संपर्क - 09545924968, *पी आर बी कानून के तहत सम्पूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार। RNI Reg. No.-MHHIN/2017/74134